# पाठ २

## सत्य।

प्रत्येक मनुष्य को हरएक प्रसंग में सत्य का अवलम्बन करके चलना बड़े महत्व का काम है। इस से मनुष्य की योग्यता बढ़कर उस का सब तरह से हित होता है। जहां तक हो सके, सत्य का उल्लंघन न हो। इस के लिये आज तक सैकड़ों बड़े मनुष्यों ने नाना प्रकार के संकट भोगे हैं। श्री रामचन्द्रजी व पांडवों ने इसी के लिये वनवास भोगा। राजा हरिश्चन्द्र ने अपना राज्य दान कर दिया और अंत को आप चांडाल के यहां बन्धक रहा इत्यादि बातें सब को मालूम हैं। सत्य की महिमा अपार है।

सत्य से मनुष्य को जितनी योग्यता प्राप्त होती है, उतनी ही असत्य से उस की हानि होती है। असत्य यह मनुष्य को जितना स्वतः अहित कारक है, उस से अधिक दूसरे को हानि कारक है। एक ने दूसरे के विरुद्ध झूठी साक्षी दी, तो उस का प्राण नाश हुआ, ऐसे अनेक उदाहरण इतिहास में है। जो सब झूठ बोलने वाले हों, तो किसी को लेश मात्र देखने को भी सुख न मिले। क्योंकि किसी को किसी पर भरोसा न हो, तो कोई किसी के पास बैठे भी नहीं। इसलिये सब को नित्य सत्य बोलने की प्रतिज्ञा करनी और पालनी चाहिये।

असत्य बोलने के अनेक प्रकार हैं। यद्यपि वे सब एकसे भयंकर नहीं हैं, तथापि उन में से कोई भी क्षमा के योग्य नहीं

है। कोई ऐसा जानते हैं कि जो दूसरे को अच्छा लगे वह सत्‌
न हो तो भी कुछ हर्ज नहीं, इसलिये उस की रुचि के अनुसा
बोलना चाहिये। परन्तु यह सरासर नीति कृत होगा इतना ह
नहीं वरन इस में विश्वास घात करने का दोष भी अपने ऊप
आता है। इसी तरह विचार न करके उतावलेपन से बोलं
में भी, असत्य बोलते हैं। कहीं कोई आश्चर्य की बात कहन
हुई, तो जल्दी २ कहने में एक गुणी की दस गुणी कहने में अ
जाती है। इस में सुनने वालों को थोड़ी देर तो आश्चर्य जा
पड़ता है परन्तु जब उन को यह बात ठीक २ मालूम हो जात
है तब वे उस मनुष्य को गप्पी कहते हैं और फिर उस की किसी
बात का विश्वास नहीं करते।

एक लड़का पाठशाला से घर आते ही अपने पिता से
बोला, कि चाचा चाचा! आज नाज की मंडी में बहुत गाड़ियां
आई हैं मैं जानता हूं कि वे हज़ार या इस से भी अधिक होंगी।
उस के पिता ने कहा क्या बकता है हज़ारों गाड़ी। अरे विचार
कर कह, इतनी गाड़ियों के लिये मंडी में जगह कहां है। लड़का
बोला कि हज़ार नहीं तो सौ अवश्य होंगी। बाप बोला अब
भी विचार के ठीक कह, मंडी में सौ गाड़ी कहां खड़ी हो सकती
है। लड़का घुट घुटा कर बोला कि हां! सौ तो कदाचित न होंगी
पर अब मैं आप से ठीक २ कहता हूं कि पचास से कम भी न
होंगी। बाप बोला अबकी मुझे तेरा कहना ठीक नहीं जान पड़ता,
क्योंकि तू हज़ार से घटते२ पचास तक आया, फिर तुझ का मैं
विश्वास कैसे हो। सारांश यह कि इस तरह अनदेखी कर
के, बोलने से मनुष्य उपहास का पात्र होता है।

है यही कारण है कि वह विपत्ति में भी, उन लोगों की अपेक्षा प्रसन्न रहता है जो धनवान हैं, परन्तु बेईमान है।

जो मनुष्य झूठ बोलकर, धोखे बाज़ी और अन्याय से धन या अधिकार प्राप्त करता है, वह कभी उस धन या अधिकार का आनन्द नहीं उठा सकता। क्योंकि उस का अन्त करण उसे हर घड़ी सताता है और ऐसी बुरी तरह धन या अधिकार प्राप्त करने पर, उस को धिक्कार देता रहता है। कभी वह चैन से सोने नहीं पाता। यदि किसी समय उस की आंख लगभी गई, तो उसे बुरे सपने दिखाई देते हैं और वे बुराइयां जो उस ने की हैं उसे सोते में सताती हैं। दिन के समय जब वह अकेला होता है और उसे अपनी बुराइयों का ध्यान आता है तो उस को बड़ा पश्चात्ताप होता है। उसे प्रत्येक बात से भय मालूम होता है, क्योंकि वह जानता है कि लोग मुझ से घृणा करते हैं। जो अवसर पावेंगे तो मुझ को अवश्य हानि पहुचायेंगे। नेक आदमी चाहे कैसाही ग़रीब और कंगाल क्यों न हो परन्तु उस को धीरज रहता है। धीरज के कारण वह दिन रात प्रसन्न रहता है उसे किसी प्रकार की बेचैनी नहीं होने पाती, न उसे बुरे ख़याल सताते हैं, न उसे किसी का भय रहता है। क्योंकि वह समझता है कि मैंने किसी के साथ बुराई नहीं की जो वह मुझ से बदला लेगा।

नेकी कभी छिपी नहीं रह सकती, अन्धेरे में भी वह चमकती रहती है। चाहे जल्दी हो या देर, परन्तु उस का फल अवश्य मिलता है। मानो कि किसी मनुष्य पर हमारी नेकी प्रगट हो या न हो और किसी से उस को लाभ पहुंचे या न

पहुंचे, परन्तु नेकी के ग्रहण करने में हमारे लाभ क्या कम हैं। जिस प्रकार शरीर और वस्त्रों के स्वच्छ रखने से स्वयं हम को लाभ होता है दूसरों को हो या न हो। उसी प्रकार नेकी के कारण हम को अगणित लाभ प्राप्त होते हैं॥

# पाठ ४

## राजा भोज।

महाराज विक्रम के वंश में एक राजा सिंधुल हुआ, उस के बुढ़ापे में भोज एक लड़का पैदा हुआ। जब राजा सिंधुल मरने को हुआ तब भोज की अवस्था केवल पांच वर्ष की थी। राजा सिंधुल ने मरते समय विचारा कि, जो भोज को राज गद्दी देता हूं, तो मेरा भाई मुंज जो बलवान है, इस लड़के को मार डालेगा, इसलिये मुंज ही को राज गद्दी देना चाहिये। ऐसा विचार राजा सिंधुल ने अपने भाई मुंज को राज गद्दी दी और भोज को उसे सौंप आप परम धाम को सिधारा।

मुंज ने राज गद्दी पर बैठते ही पुराने मंत्री बुद्धिसागर को दूसरे अधिकार पर बदल दिया और दूसरे को मंत्री का अधिकार दिया और भोज को पढ़ाने के लिये एक पाठशाला नियत की। भोज व्याकरण, न्याय, इतिहास आदि चौदह विद्या और चौसठ कलाओं को अच्छी तरह पढ़ विद्या में बृहस्पति के समान और विशेष कर कविता की रचना में बहुत निपुण हुआ और नम्रता और गम्भीरता से अपने गुरु को भी अति प्रसन्न रखता रहा। एक दिन भोज का चचा मुंज पाठशाला में

आया और भोज की चतुराई और पंडिताई देख, निज मन में विचारने लगा कि यह तो अपने पिता से भी बलवान और प्रतापी होता दीख पड़ता है । सावधान होतेही मुझ से राज छीन लेगा, इसलिये अभी इस का मारना उत्तम है । यह विचार कर अपने मित्र वत्सराज को बुलाकर कहा कि, तुम मेरे परम मित्र हो और सदा दुःख में साथी रहे हो, मेरा जो काम तुम कर सके हो और कोई नहीं कर सक्ता, इसलिये तुम्हें बुलाया है कि, भोज को बन में लेजाकर मार डालो। मैं तुम को बहुत इनाम और बड़ा अधिकार दूंगा । यह सुनते ही वत्सराज के रोमांच खड़े हो गये, तौ भी उस ने ऐसा विचार किया कि, जो मैं इस समय इस को उपदेश करता हूं तो इस को कुछ अच्छा नहीं लगेगा, सिवाय इस के यह काम किसी दूसरे को सौंपा तो भोज के व्यर्थ प्राण जायंगे, इस लिये यह काम अपने ऊपर लेलेना चाहिये । जिस में राजा भी प्रसन्न रहे और भोज के भी प्राण बच जावें । इस के सिवाय कोई दूसरा उपाय उत्तम नहीं जान पड़ता । यह विचार उस ने कहा कि महाराज की आज्ञानुसार मैं करने को तैयार हूं, आप अपने हस्ताक्षर का एक आज्ञापत्र लिख देवें जो अन्त समय भोज को दिखलाकर उस के मारने में उपयोग पड़ेगा । मैं किसी तरह भोज को बन में लेजाऊंगा और उसे मार कर उस का कोई चिन्ह आप के दिखलाने के लिये लेता आऊंगा । आप इस बात की कुछ भी चिन्ता न करें । यह सुन कर मुंज अति प्रसन्न हुआ और भोज के मारने के लिये तुरन्त आज्ञा पत्र लिख दिया फिर वत्सराज भोज से एकान्त में मिला और दूसरे दिन विचार

खेलने को वनमें की ठहराई । दूसरे दिन भोज प्रातःकाल ही वस्त्र पहिन वत्सराज के घर आया । वत्सराज भी तय्यार बैठा था । दोनों घोड़ों पर सवार हो निविड़ वन में पहुंचे । वहां वत्सराज ने भोज को वह आज्ञा पत्र दिया जो राजा मुंज ने उस के मार डालने के लिये लिखा था । भोज ने वह पत्र पढ़ वत्सराज से कहा, कि तुम को जो राजा मुंज ने मेरे मारडालने की आज्ञा दी है, सो इसे पूरी करो । भोज का ऐसा उत्तर सुन वत्सराज को बड़ा आश्चर्य हुआ । यद्यपि वत्सराज के मन में भोज के वध का विचार न था, परन्तु उस के धैर्य की और परीक्षा करनी थी, इसलिये वत्सराज ने कहा कि महाराज मैं लाचार हूं, राजा की आज्ञानुसार मुझे करना ही पड़ेगा । अब आप अन्त समय परमात्मा का नाम लें और जो कुछ अपने चचा साहब से कहना है सो मुझ से कह नीची गर्दन करें । यह कहकर वत्सराज ने मयान से तलवार निकाल ली । भोज ने कहा कि मैं अभी एक पत्र लिखे देता हूं मेरे वध के पीछे पत्र को कृपा कर मेरे चचा साहब को दे देना । भोज ने वत्सराज को पत्र देकर अपनी गर्दन नीची करली और कहा कि अब तुम अपने स्वामी का काम शीघ्र पूरा करो । भोज का ऐसा साहस और धैर्य देख वत्सराज के चित्त में बड़ी दया आई और उस के हाथ में से तलवार छूट पड़ी और आंखों से आंसू बहने लगे । वत्सराज भोज के चरणों में गिर पड़ा और बोला कि महाराज मेरा अपराध क्षमा कीजिये, मेरा हाथ आप के ऊपर नहीं उठता, अब मेरे साथ नगर को चलिये और जब तक आप के चचा का मन शुद्ध न हो तब तक आप गुप्तपने

से इस सेवक के घर में रहिये। भोज भी इस दया और प्रीति को देख वत्सराज के गले से लिपट गया और बोला कि, इस का कुछ सोच मत करो। इस के अनन्तर सन्ध्या तक दोनों बन में रहे, फिर रात्रि को वत्सराज भोज को अपने घर लेगया और वहां छिपा के रक्खा। मुंज के दिखलाने के लिये भोज के कपड़े बकरा के लोहू में भिगो के लेगया। मुंज को भोज के वस्त्र रक्त से भीगे देखते ही विश्वास होगया कि, वत्सराज भोज को मार आया। अपने कहे अनुसार वत्सराज को बड़ा इनाम दिया और उस की प्रतिष्ठा बढ़ादी। फिर मुंज ने वत्सराज से पूछा कि भोज ने मरने के समय मुझ को भी कुछ कहा था या नहीं। वत्सराज ने कहा महाराज आप के लिये यह पत्र दिया था लीजिये। राजा मुंज सभा से उठ कर महलों में गया और वहां पत्र खोल कर पढ़ा उस में दो श्लोक लिखे थे जिन का अर्थ यह है।

## (पहिले श्लोक का अर्थ)

सत्युग में भूमि का भूषण बड़ा प्रतापी राजा मान्धाता हुआ। त्रेता में रामचन्द्र, जिन्हों ने समुद्र का पुल बांधा और रावण को मारा। इसी प्रकार द्वापर में युधिष्ठिर आदि बहुत से बड़े २ राजा हुए और मर भी गये। कहो अब वे कहां हैं? उन में से किसी के साथ यह पृथ्वी न गई, परन्तु मैं जानता हूं कि यह पृथ्वी अब आप के साथ जायगी।

## (दूसरे श्लोक का अर्थ)

जवानी, धन, प्रभुता, अविवेकता जहां इन चारों में से

एक भी हो वहां असमर्थ होता है और जहां ये चारों होते वहां असमर्थ का क्या ठिकाना है।

पत्र के पढ़ते ही राजा के नेत्रों से आंसू टपकने लगे और बड़ा पश्चात्ताप कर बोला, कि हाय हाय! मैंने बहुत बुरा किया, जो निरपराधी भोज को मरवाया, इस पाप से अवश्य मेरी कुगति होगी और सब लोग बुरा कहेंगे। इतना कह मूर्छित हो धरती पर गिर पड़ा। कुछ देर में सचेत हु[illegible] तो, रो रो और चिल्ला चिल्ला कर कहने लगा कि, अब मैं नहीं जीऊंगा, अपना अपघात आप करूंगा। वहां जो मन्त्री आदि थे, वे सब समझाते थे, परन्तु वह नहीं मानता था और यही कहता था कि मैं ऐसा दुष्ट उत्पन्न हुआ, कि मैंने अपना और अपने भाई [illegible] दोनों के कुल का नाश किया। भोज बड़ा सपूत लड़का था, [illegible]स के रहने से कुल की बड़ी शोभा थी। राजा के इस पश्चात्ताप [illegible]ो सुन वत्सराज ने हाथ जोड़ कर, कहा कि महाराज मैं आप [illegible] कोमल चित्त और दयालु स्वभाव को पहिले ही जानता था, [illegible] आप भोज के मरने के दु:ख से अपना भी जी खोवेंगे, इस [illegible]ए आप के कहने पर भी मैंने भोज को नहीं मारा, उस के [illegible] रक्त से भरे दिखला दिये थे। यह सुनते ही राजा अति [illegible] हुआ और वत्सराज को छाती से लगा कर कहने लगा [illegible]ोज को जल्द लाओ, उसी समय वत्सराज भोज को हाथी [illegible]वार कराके, लोगों के चित्त को आनन्द देता हुआ मुंज [illegible]ा में ले आया। भोज को देखते ही राजा ने छाती से लगा [illegible]ौर बहुत प्यार करके सब के साम्हने यह कहने लगा, [illegible] मेरा अपराध क्षमा करो और अपनी राजगद्दी संभालो

और मुझे ईश्वर का स्मरण करने दो। यह कहकर भोज को राज गद्दी दी और आप रानी समेत तप करने के लिये बन को चला गया। देखो परमेश्वर की कैसी प्रभुताई है कि, कहां तो मुंज राज्य के लिये भोज को मारता था कहां आप ही राज्य छोड़ बन को चला गया॥

## पाठ ५

### श्रीराम विवाह।

दोहा।

देवन दीन्ही दुन्दुभी, प्रभु पर बर्षहिं फूल।
हरखे पुर नर नारि सब, मिटा मोह भय सूल॥

चौपाई।

अति गहगहे बाजने बाजे। सबहिं मनोहर मंगल साजे॥
जूथ जूथ मिलि सुमुखि सुनयनी। करहिं गान कल कोकिलबयनी॥
सुख बिदेह कर बरणि न जाई। जन्म दरिद्र मनहुं निधि पाई॥
बिगत त्रास भई सीय सुखारी। जनु बिधु उदय चकोर कुमारी॥
जनक कीन्ह कौशिकहिं प्रणामा। प्रभु प्रसाद धनु भंजेउ रामा॥
मोहिं कृत कृत्य कीन्ह दोउ भाई। अब जो उचित सो कहिय गुसांई॥
कह मुनि सुनु नरनाह प्रबीना। रहा बिवाह चाप आधीना॥
टूटत ही धनु भयेउ बिवाहू। सुर नर नाग बिदित सब काहू॥

दोहा।

तदपि जाइ तुम करहु अब, यथा बंस व्यवहार।
पूंछि बिप्र कुल बृद्ध गुरु, बेद बिदित आचार॥

चौपाई ।

रचे रुचिर वर वन्दन वारे । मनहु मनोभव फन्द संवारे ॥
मंगल कलश अनेक बनाये । ध्वज पताक पट चमर सुहाये ॥
दीप मनोहर मणिमय नाना । जाइ न बरणि विचित्र विताना ॥
जेहि मण्डप दुलहिन वैदेही । सो बरणै असि मति कवि केही ॥
दूलह राम रूप गुण सागर । सो वितान तिहुं लोक उजागर ॥
जनक भवन की शोभा जैसी । गृह गृह प्रति पुर देखिय तैसी ॥
जेहि तिरहुति तेहि समय निहारी । तेहि लघु लगे भुवन दस चारी ॥
जो सम्पदा नीच गृह सोहा । सो विलोकि सुरनायक मोहा ॥

दोहा ।

बसै नगर जेहि लक्षि करि, कपट नारि बर वेष ।
तेहि पुर की शोभा कहत, सकुचत शारद शेष ॥

चौपाई ।

पहुंचे दूत राम पुर पावन । हरषे नगर विलोकि सुहावन ॥
भूप द्वार तिन खबर जनाई । दशरथ नृप सुनि लिये बुलाई ॥
करि प्रणाम तिन्ह पाती दीन्ही । मुदित महीप आप उठि लीन्ही ॥
बारि विलोचन बांचत पाती । पुलक गात आई भरि छाती ॥
राम लखण उर कर वर चीठी । रहि गये कहत न खाटी मीठी ॥
पुनि धरि धीर पत्रिका बांची । हरषी सभा बात सुन सांची ॥
खेलत रहे तहां सुधि पाई । आये भरत सहित हित भाई ॥
पूछत अति सनेह सकुचाई । तात कहां ते पाती आई ॥

दोहा ।

कुशल प्राण प्रिय बन्धु दोउ, अहहिं कहहु केहि देश ।
सुनि सनेह साने वचन, बांची बहुरि नरेश ॥

चौपाई।

दूत अवध पुर पठवहु जाई। आनैं नृप दशरथहिं बुलाई॥
मुदित राउ कहि भलेहि कृपाला। पठये दूत अवध तेहि काला॥
बहुरि महाजन सकल बुलाये। आइ सबन सादर शिरनाये॥
हाट बाट मन्दिर पुर बासा। नगर संवारहु चारिहु पासा॥
हरखि चले निज निज गृह आये। पुनि परिचारक बोलि पठाये॥
रचहु विचित्र बितान बनाई। शिर धरि बचन चले सचुपाई॥
पठये बोलि गुणी तिन्ह नाना। जो बितान बिधि कुशल सुजाना॥
विधिहिं बन्दि तिन्ह कीन्ह अरम्भा। बिरचे कनक कदली खम्भा॥

दोहा।

हरित मणिन के पत्र फल, पद्मराग के फूल।
रचना देखि विचित्र अति, मन बिरंचि कै भूल॥

चौपाई।

हरित मणि मय सब कीन्हे। सरल सपर्ण परहिं नहिं चीन्हे॥
कलित अहि बेलि बनाई। लखि नहिं परै सपर्ण सुहाई॥
के रचि पचि बन्ध बनाये। बिच बिच मुक्तादाम सुहाये॥
क मरकत कुलिश पिरोजा। चीर कोर पचि रचेउ सरोजा॥
ग बहु रंग बिहंगा। गुंजहिं कुंजहिं पवन प्रसंगा॥
मा खम्भन गढ़ि काढ़ी। मंगल द्रव्य लिये सब ठाढ़ी॥
ति अनेक पुराये। सिन्दुर मणि मय सहज सुहाये॥

दोहा।

म पल्लव सुभग सुठि, किये नील मणि कोर।
चौर मरकत घवरि, लसत पाट मय डोर॥

चौपाई।

सुनि सरोष भृगु नायक आये। बहुत भांति तिन आंखि दिखाये॥
देखि राम बल निज धनु दीन्हा। करि बहु विनय गमन बन कीन्हा॥
राजत राम अतुल बल जैसे। तेज निधान लषण पुनि तैसे॥
कम्पहिं भूप बिलोकत जाके। जिमि गज हरि किशोर के ताके॥
देव देखि तव बालक दोऊ। अब नि आंख तर आवत कोऊ॥
दूत बचन रचना प्रिय लागी। प्रेम प्रताप बीर रस पागी॥
सभा समेत राउ अनुरागे। दूतन्हि देन निछावर लागे॥
कहि अनीति तेहिं मूंदेउ काना। धर्म बिचारि सबहि सुख माना॥

दोहा।

तब उठि भूप बशिष्ठ कहं, दीन्ह पत्रिका जाइ।
कथा सुनाई गुरहिं सब, सादर दूत बुलाइ॥

चौपाई।

सुनि बोले गुरु अति सुख पाई। पुण्य पुरुष कहं महि सुख छाई॥
जिमि सरिता सागर महं जाहीं। यद्यपि ताहि कामना नाहीं॥
तिमि सुख सम्पति बिनहिं बुलाये। धर्म शील पहं जाहिं सुभाये॥
तुम गुरु बिप्र धेनु सुर सेवी। तस पुनीत कौशल्या देवी॥
सुकृती तुम समान जग माहीं। भयेउ न है कोउ होनेउ नाहीं॥
तुम ते अधिक पुण्य बड़ काके। राजन राम सरिस सुत जाके॥
बीर बिनीत धर्म ब्रत धारी। गुण सागर बालक बर चारी॥
तुम कहं सर्व काल कल्याना। सजहु बरात बजाइ निशाना॥

दोहा।

चलहु बेगि सुनि गुरु बचन, भलेहि नाथ शिर नाइ।
भूपति गमने भवन तब, दूतहिं बास दिवाइ॥

चौपाई।

सुनि पाती पुलके दोउ भ्राता। अधिक सनेह समात न गाता॥
प्रीति पुनीत भरत की देखी। सकल सभा सुख लहेउ विशेषी॥
तब नृप दूत निकट बैठारे। मधुर मनोहर वचन उचारे॥
भैया कुशल कहहु दोउ बारे। तुम नीके निज नयन निहारे॥
श्यामल गौर धरे धनु भाथा। वय किशोर कौशिक मुनि साथा॥
पहिचानेउ तो कहहु स्वभाऊ। प्रेम विवश पुनि पुनि कह राऊ॥
जा दिन ते मुनि गये लिवाई। तब ते आजु सांचि सुधि पाई॥
कहहु विदेह कवन विधि जाने। सुनि प्रिय वचन दूत मुसुकाने॥

दोहा।

सुनहु महीपति मुकुट मणि, तुम सम धन्य न कोउ।
राम लषण जिन के तनय, विश्व विभूषण दोउ॥

चौपाई।

पूंछन योग न तनय तुम्हारे। पुरुष सिंह तिहुं पुर उजियारे॥
जिन के यश प्रताप के आगे। शशि मलीन रवि शीतल लागे॥
तिन कहं कहिय नाथ किमि चीन्हे। देखिय रविहिं दीप कर लीन्हे॥
सीय स्वयंवर भूप अनेका। सिमिटे सुभट एक ते एका॥
शम्भु शरासन काहु न टारा। हारे सकल भूप बरियारा॥
तीन लोक महं जे भट मानी। सब की शक्ति शम्भु धनु भानी॥
सकै उठाइ शरासुर मेरू। सोउ हिय हारि गयेउ कर फेरू॥
जेहिं कौतुक शिव शैल उठावा। सोउ तेहि सभा पराभव पावा॥

दोहा।

तहां राम रघुवंश मणि, सुनिय महा महिपाल।
भंजेउ चाप प्रयास बिनु, जिमि गज पंकज नाल॥

चौपाई।

सुनि सरोप भृगु नायक आये। बहुत भांति तिन आंखि दिखाये॥
देखि राम बल निज धनु दीन्हा। करि बहु विनय गमन बन कीन्हा॥
राजत राम अतुल बल जैसे। तेज निधान लखण पुनि तैसे॥
कम्पहिं भूप विलोकत जाके। जिमि गज हरि किशोर के ताके॥
देव देखि तब बालक दोऊ। अवनि आंख तर आव न कोऊ॥
दूत वचन रचना प्रिय लागी। प्रेम प्रताप वीर रस पागी॥
सभा समेत राउ अनुरागे। दूतहिं देन निछावर लागे॥
कहि अनीति तेहिं मूंदेउ काना। धर्म विचारि सबहिं सुख माना॥

दोहा।

तब उठि भूप वशिष्ठ कहं, दीन्ह पत्रिका जाइ।
कथा सुनाई गुरुहिं सब, सादर दूत बुलाइ॥

चौपाई।

सुनि बोले मुनि अति सुख पाई। पुण्य पुरुष कहं महि सुख छाई॥
जिमि सरिता सागर महं जाहीं। यद्यपि ताहि कामना नाहीं॥
तिमि सुख सम्पति बिनहिं बुलाये। धर्म शील पहं जाहिं सुभाये॥
तुम गुरु विप्र धेनु सुर सेवी। तस पुनीत कौशल्या देवी॥
सुकृती तुम समान जग माहीं। भयेउ न है कोउ होनेउ नाहीं॥
तुम ते अधिक पुण्य बड़ काके। राजन राम सरिस सुत जाके॥
वीर विनीत धर्म व्रत धारी। गुण सागर बालक वर चारी॥
तुम कहं सर्व काल कल्याना। सजहु बरात बजाइ निशाना॥

दोहा।

चलहु वेगि सुनि गुरु वचन, भलेहि नाथ सिर नाइ।
भूपति गमने भवन तब, दूतहिं बास दिवाइ॥

चौपाई ।

राजा सब रनिवास बुलाई । जनक पत्रिका बाँचि सुनाई ॥
सुनि सन्देश सकल हरषानी । अपर कथा सब भूप बखानी ॥
प्रेम प्रफुल्लित राजा रानी । मनहुँ शिखिन सुनि बारिद बानी ॥
मुदित असीस देहिं गुरु नारी । अति आनन्द मगन महतारी ॥
लेहिं परस्पर अति प्रिय पाती । हृदय लगाइ जुड़ावहिं छाती ॥
राम लषण की कीरति करणी । बारहिं बार भूप बर बरणी ॥
मुनि प्रसाद कहि द्वार सिधाये । रानिन तब महिदेव बुलाये ॥
दिये दान आनन्द समेता । चले विप्र बर आशिष देता ॥

सोरठा ।

याचक लिये हँकारि, दीन्ह निछावरि कोटि विधि ।
चिरजीवहु सुत चारि, चक्रवर्ति दशरत्थ के ॥

चौपाई ।

कहत चले पहिरे पट नाना । हरषि हनें गहे गहे निसाना ॥
समाचार सब लोगन पाये । लागे घर घर होन बधाये ॥
भुवन चारि दश भरेउ उछाहू । जनक सुता रघुबीर बियाहू ॥
सुनि शुभ कथा लोग अनुरागे । मग गृह गलीं सँवारन लागे ॥
यद्यपि अवध सदैव सुहावनि । राम पुरी मंगल मय पावनि ॥

---

दुन्दुभी=नगाड़े । यूथ=झुंड । विदेह=राजा जनक । विगत=रहित । कौशिक=विश्वामित्र । कृत कृत्य=कृतार्थ । नरनाह=राजा । गुरुगृह=मन्दिर । परिचारक=सेवक । सुजाना=चतुर । पद्मराग=माणिक, लाल रंग की एक प्रकार की मणि । वेणु=बांस । सपर्ण=पर्णोंसहित । कनक=सोना । नागबेल=पान की बेलि; नागवेलि । मुक्ता दाम=मोतियों की माला । मरकत=

तदपि प्रीति की रीति सुहाई। मंगल रचना रची बनाई ॥
ध्वज पताक पट चामर चारू। छाया परम विचित्र बजारू ॥
कनक कलश तोरण मणि जाला। हरद दूब दधि अक्षत माला ॥

दोहा।

मंगल मय निज निज भवन, लोगन रचे बनाइ ॥
बीथीं सींची चतुर सब, चौके चारु पुराइ ॥

## पाठ ६

### बुरे भले मनुष्य की पहिचान।

भले मनुष्य अपने शत्रुओं के साथ वे सुलूक करते हैं, जो चन्दन कुल्हाड़ी के साथ करता है।कुल्हाड़ी उसे काटती है वह उस की धार को सुगन्धित करता है। इसलिये चन्दन को वह

---

पन्ना। पिरोजा=फीरोजा। सरोजा=कमल। बिहगा=पक्षी। सिन्दुर मणि=गज मुक्ता। सौरभ=घ्राण। हेम=सोना। पवँरि=छोटी २ झांझियां। पाटमय=रेशम। मनोभव=कामदेव। पट=वस्त्र। चमर=चौंर। सुरनायक=इन्द्र। शचि=लक्ष्मीजी। शारद=सरस्वती। शेष=शेष नाग। बहुरि=फिर। बारे=बालक। धनु भाषा=धनुष बाण। वय=अवस्था। तनय=पुत्र। शशि=चन्द्रमा। रवि=सूर्य। कर=हाथ। शम्भु=महादेव जी। शरासन=धनुष। बरियारा=बलकरके। भट=योधा। बाणासुर=बाणासुर। पराभव=हार। भृगुनायक=परशुराम। करि=हाथी। हरि किशोर=सिंह का बच्चा। अवनि=पृथ्वी। धेनु=गाय। निशाना=नगाड़े। शिखिन=मोर। महिदेव=ब्राह्मण। विप्र=ब्राह्मण। गायक गवैया। दल=दाला। चामर=चँवर। अक्षत=चांवल। बीथीं=गली। चारु=सुन्दर ॥

चौपाई।

राजा सब रनिवास बुलाई । जनक पत्रिका बांचि सुनाई॥
सुनि सन्देश सकल हरषानी । अपर कथा सब भूप बखानी॥
प्रेम प्रफुल्लित राजा रानी । मनहुं शिखिन सुनि बारिद बानी॥
मुदित असीस देहिं गुरु नारी । अति आनन्द मगन महतारी॥
लेहिं परस्पर अति प्रिय पाती । हृदय लगाइ जुड़ावहिं छाती॥
राम लषण की कीरति करणी । बारहिं बार भूप बर बरणी॥
मुनि प्रसाद कहि द्वार सिधाये । रानिन तब महिदेव बुलाये॥
दिये दान आनन्द समेता । चले विप्र बर आशिष देता॥

सोरठा।

याचक लिये हंकारि, दीन्ह निछावरि कोटि विधि।
चिरजीवहु सुत चारि, चक्रवर्ति दशरत्थ के॥

चौपाई।

कहत चले पहिरे पट नाना । हर्षि हने गह गहे निशाना॥
समाचार सब लोगन पाये । लागे घर घर होन बधाये॥
भुवन चारि दश भरेउ उछाहू । जनक सुता रघुबीर बियाहू॥
सुनि शुभ कथा लोग अनुरागे । मग गृह गली संवारन लागे॥
यद्यपि अवध सदैव सुहावनि । राम पुरी मंगल मय पावनि॥

---

दुन्दुभी=नगाड़े । यूथ=झुंड । विदेह=राजा जनक । विगत=रहित । कौशिक=विश्वामित्र । कृत कृत्य=कृतार्थ । नरनाह=राजा । सुरवास=मन्दिर । परिचारक=सेवक । सुजाना=चतुर । पद्मराग=माणिक, लाल रंग की एक प्रकार की मणि । वेणु=बांस । सपर्ण=पत्तोंसहित । कनक=सोना । अहिबेल=पान की बेलि; नागबेलि । मुक्ता दाम=मोतियों की माला । मरकत=

कोई भलाई करे, तो वे उस के साथ बुराई करते हैं। झूठ ही उन का लेना, झूठ ही उन का देना, झूठ ही उन का खाना और झूठ ही उन का जीना है, अर्थात सब बातों में वे झूठ ही बोलते हैं। बोलने में मधुर के समान मीठे, परन्तु मन में ऐसे कठोर कि बड़े मोटे सर्प भी [illegible] आवें और डकार भी न लें। वे औरों को दुःख देते हैं। पड़ोसी की स्त्री और धन छीनने की चिन्ता में रहते हैं। औरों की [illegible] में निन्दा करते हैं। ऐसे मनुष्यों को यों समझो कि ये राक्षस मनुष्य के स्वरूप में होते हैं। काम ही [illegible] बिछौना है विषय और उदर पोषण में पशुओं से [illegible] होते हैं। काल से भी नहीं डरते। जब किसी की [illegible] दुःख सुनते हैं तो ऐसी ठट्ठी करते हैं [illegible] उन को लड्डू बट गये हैं और जब औरों की विपत्ति सुनते हैं तो ऐसे प्रसन्न होते हैं, मानो कहीं का राज्य मिल गया। उन को [illegible] किसी कार्य के किसी दूसरे से काम नहीं रहता। जब चाहेंगे औरों की बुराई ही चाहेंगे। मा, बाप, गुरु आदि किसी का कहना नहीं मानते। जैसे आप बुरे हैं वैसाही औरों को बुरा करना चाहते हैं। वे औरों के साथ बुराई करने में बड़े तेज होते हैं। इनकी संगति से दोषों आते हैं। प्रत्यक्ष में तो वे बड़े सज्जन होते हैं, परन्तु मन के बड़े मैले होते हैं। उन को परमेश्वर का भजन तक नहीं सुहाता। वे पराई सम्पत्ति को अपनी ही समझते हैं। औरों के दिखलाने के लिये कपड़ा और वस्त्र बनाये रहते हैं, परन्तु मन के बड़े कठिन और कपटी होते हैं। ऐसे मनुष्य संसार के हत्यारे हैं। जो प्रकार दूसरे को दुख देना है [illegible]

प्रतिष्ठा प्राप्त हुई कि, देवताओं के मस्तकों पर बैठता है और कुन्दाओं की यह दशा हुई कि उस को गुप्त आग में तपाकर हथौड़ों से पीटा जाता है। भले मनुष्य साधारण स्वभाव रखते हैं, जो परमेश्वर ने दिया है उस पर प्रसन्न रहते हैं, उदार होते हैं, पराये दुख को देख कर दुखी और सुख को देख कर सुखी होते हैं। ये तन मन धन से पराया भला करते हैं। उन का कोई मित्र हो या शत्रु या दोनों में से एक भी न हो वे इन सब के साथ प्रीति का बर्ताव करते हैं। वे किसी से शत्रुता नहीं रखते, इन्हें कुछ अभिमान नहीं होता। वे दीनों पर कृपा करते हैं, अपने मान की चिन्ता नहीं करते, परन्तु और सब का आदर सत्कार स्वयं करते हैं। किसी को ऐसी बात नहीं कहते, जो उस को कड़वी मालूम हो। वे अपने वचन के पक्के होते हैं। कोई उन की बुराई करे या प्रशंसा, चाहे आदर करे या निरादर, उन के लिये वे सब बराबर हैं। इन को तो परमेश्वर के ध्यान और मनुष्यों के साथ भलाई करने की लौ लगी होती है, ऐसेही मनुष्यों को धर्मात्मा और सन्त कहते हैं।

अब तुम बुरे मनुष्यों की बातें सुनो। तुम कभी उन के साथ भूल कर भी न बैठो, उन से तुम को नित दुःख ही होगा। उन के मन में यह जलन होती है, कि जहां उन्हों ने दूसरे का भला देखा, कि वे जल कर भस्म होगये। जब वे किसी की परोक्षता में निन्दा सुनते हैं, तो ऐसे प्रसन्न होते हैं, कि मानो — को रस्ते में पड़ा भंडार मिलगया। कामी, क्रोधी, लोभी;

मतिष्ठा मास हुई कि, देवताओं के मस्तकों पर चढ़ती है कुल्हाड़ी की यह दशा हुई कि उस का मुख आग्नि में तपाके हतौड़ों से पीटा जाता है। भले मनुष्य साधारण स्वभाव रखते हैं, जो परमेश्वर ने दिया है उस पर प्रसन्न रहते हैं, उदार होते हैं, पराये दुख को देख कर दुखी और सुख को देख कर सुखी होते हैं। वे तन मन धन से पराया भला करते हैं। उन का कोई मित्र हो वा शत्रु वा दोनों में से एक भी न हो वे इन सब के साथ प्रीति का बर्ताव करते हैं। वे किसी से शत्रुता नहीं रखते, इन्हें कुछ अभिमान नहीं होता। वे दीनों पर कृपा करते हैं, अपने मान की चिन्ता नहीं करते, परन्तु और सब का आदर सत्कार स्वयं करते हैं। किसी को ऐसी बात नहीं कहते, जो उस को कड़वी मालूम हो। वे अपने वचन के पक्के होते हैं। कोई उन की बुराई करे या प्रशंसा, चाहे आदर करे वा निरादर, उन के लिये ये सब बराबर हैं। इन को तो परमेश्वर के ध्यान और मनुष्यों के साथ भलाई करने की लौ लगी होती है, ऐसेही मनुष्यों को धर्मात्मा और सन्त कहते हैं।

अब तुम बुरे मनुष्यों की बातें सुनो। तुम कभी उन के साथ भूल कर भी न बैठो, उन से तुम को नित दुःख ही होगा। उन के मन में यह जलन होती है, कि जहां उन्हों ने दूसरे का भला देखा, कि वे जल कर भस्म होगये। जब वे किसी की पराधता में निन्दा सुनते हैं, तो ऐसे प्रसन्न होते हैं, कि मानो उन को रस्ते में पड़ा भंडार मिलगया। कामी, क्रोधी, लोभी, घमंडी, निर्दयी, कुटिल और बड़े पापी होते हैं। जो उन के साथ

प्रतिष्ठा मात हुई कि, देवताओं के मस्तकों पर पैठता है और कुल्हाड़ों की यह दशा हुई कि उस का मुख आग में तपाकर हतौड़ों से पीटा जाता है। भले मनुष्य साधारण स्वभाव रखते हैं, जो परमेश्वर ने दिया है उस पर प्रसन्न रहते हैं, उदार होते हैं, पराये दुख को देख कर दुखी और सुख को देख कर सुखी होते हैं। वे तन मन धन से पराया भला करते हैं। उन का कोई मित्र हो या शत्रु या दोनों में से एक भी न हो वे इन सब के साथ प्रीति का बर्ताव करते हैं। वे किसी से शत्रुता नहीं रखते, इन्हें कुछ अभिमान नहीं होता। वे दीनों पर कृपा करते हैं, अपने मान की चिन्ता नहीं करते, परन्तु और सब का आदर सत्कार स्वयं करते हैं। किसी को ऐसी बात नहीं कहते, जो उस को कड़वी मालूम हो। वे अपने वचन के पक्के होते हैं। कोई उन की बुराई करे या प्रशंसा, चाहे आदर करे या निरादर, उन के लिये वे सब बराबर हैं। इन को तो परमेश्वर के ध्यान और मनुष्यों के साथ भलाई करने की लौ लगी होती है, ऐसेही मनुष्यों को धर्मात्मा और सन्त कहते हैं।

अब तुम बुरे मनुष्यों की बातें सुनो। तुम कभी उन के साथ भूल कर भी न बैठो, उन से तुम को नित दुःख ही होगा। उन के मन में वह जलन होती है, कि जहां उन्हों ने दूसरे का भला देखा, कि वे जल कर भस्म होगये। जब वे किसी की परोक्षता में निन्दा सुनते हैं, तो ऐसे प्रसन्न होते हैं, कि मानो इन को रस्ते में पड़ा भंडार मिलगया। कामी, क्रोधी, लोभी;

कोई भलाई करे, तो वे उस के साथ बुराई करते हैं। झूठ ही उन का लेना, झूठ ही उन का देना, झूठ ही उन का खाना और झूठ ही उन का जीना है, अर्थात सब बातों में वे झूठ ही बोलते हैं। बोलने में मधु के समान मीठे, परन्तु मन में ऐसे कठोर कि बड़े मोटे सर्प को निगल जावें और डकार भी न लें। वे औरों को दुःख देते हैं। पड़ोसी की स्त्री और धन छीनने की चिन्ता में रहते हैं। औरों की परोक्षता में निन्दा करते हैं। ऐसे मनुष्यों को यों समझिये कि, वे राक्षस मनुष्य के स्वरूप में होते हैं। काम ही उन का सारा बिछौना है, विषय और उदर पोषण में पशुओं के समान होते हैं। पाप से भी नहीं डरते। जब किसी की बढ़ती और उन्नति सुनते हैं तो ऐसी ठंडी लम्बी २ सांसें भरते हैं, मानो उन को जूड़ी चढ़ आई है और जब औरों की विपत्ति सुनते हैं, तो ऐसे प्रसन्न होते हैं, मानों कहीं का राज्य मिल गया। उन को सिवाय निज स्वार्थ के किसी दूसरे से काम नहीं रहता। सब चाहेंगे औरों की बुराई ही चाहेंगे। मा, बाप, गुरु आदि किसी का कहना नहीं मानते। जैसे आप बुरे हैं वैसाही औरों को बुरा बनाना चाहते हैं। वे औरों के साथ बुराई करने में बड़े तीव्र होते हैं। अच्छी संगति से कोसों भागते हैं। प्रत्यक्ष में तो वे अच्छे मालूम होते हैं, परन्तु मन के बड़े मैले होते हैं। उन को परमेश्वर का नाम तक नहीं सुहाता। वे पराई सम्पत्ति को अपनी ही समझते हैं। औरों के दिखलाने के लिये अपना भेष अच्छा बनाये रहते हैं, परन्तु मन में बड़े कुटिल और कपटी होते हैं। ऐसे मनुष्य संसार में हज़ारों हैं। जो मनुष्य दूसरे को दुःख देता है वह

बात के पीछे पड़े, कि यह धन वा उहदा उस का जाता रहे और यह मनुष्य भी उसी के समान बरन उस से घट कर हो जाये, सो इस चाह का नाम द्वेष है, जो बहुत ही बुरी है। क्यों कि किसी मनुष्य की उन्नति और धन आदि को देख कर जलना और उस की घटती चाहना, वास्तव में परमेश्वर की इच्छा के प्रतिकूल चलना और उस को बुरा समझना है।

इस बुरे रोग अर्थात द्वेष का उपाय यह है कि, उस की बुराइयों पर ध्यान दे, कि उस से क्या २ फल प्राप्त होते हैं। जब यह सिद्ध हो जावे कि यह एक ऐसा विकार है, कि जिस से हानि और दुःख के सिवाय कुछ लाभ नहीं, तो मनुष्य को अवश्य उस से ग्लानि होगी। अब देखना चाहिये कि द्वेष से ऐसा क्लेश और क्रोध चित्त मन में बना रहता है, कि उस से किसी भांति छुटकारा नहीं होता। अर्थात जब किसी को बढ़ते देखा तो जी में खेद समाया, कि उस को क्यों ऐसे २ उत्तम पदार्थ प्राप्त हुए और वे मुझे प्राप्त नहीं होते। कोई उपाय ऐसा हो कि यदि मुझे न मिलें तो कुछ हर्ज नहीं, परन्तु वे पदार्थ उस के पास से जाते रहें। अब यदि न्याय की दृष्टि से देखा जावे, तो जिस पर द्वेष किया है वह तो निश्चिन्त और प्रसन्न है और द्वेषी निष्कारण चिन्तित और क्लेशित होकर दूसरे के लिये जो विपत्ति चाहता है, वह स्वयं उसी को प्राप्त है। भला इस से बढ़कर और क्या मूर्खता होगी, कि शत्रु के लिये आप क्लेश उठावे और स्वयं अपना जी जलावे और उस की कुछ भी हानि न हो। द्वेष के द्वारा उस की सम्पत्ति में से कुछ भी घट नहीं सकता, क्योंकि परमेश्वर ने जो जिस का

हिरनों के ढेर पेट में आकर बड़े कष्ट भोगता है। म
स्वार्थ के कारण ऐसा अन्धा हो जाता है, कि उ
का कुछ ख़याल नहीं रहता। ये सब काम असाव
असावधानता से होते हैं। भले मनुष्य का हाल कपास
के पृक्ष का सा होता है, कि वे दूसरे के हित के
ऊपर सैंकड़ों आफ़तें झेलते हैं और अंत को उसी में म
बुरे मनुष्यों का हाल सन का सा होता है, कि वे
कर औरों के बांधने के लिये अपनी खाल खिंचवाते
और सांप की तरह दूसरे की हानि किया ही करते
अपना मतलब उस से न निकले। औरों का नाश क
भी नाश हो जायें। जैसे तुषार और ओला खेत को
आप भी मिटजाता है। दुष्ट मनुष्य पुच्छल तारे की त
होने से अशुभ होते हैं। सज्जन चन्द्रमा और सूर्य की भ
होकर सुख पहुंचाते हैं। संसार में इस से बढ़ कर
नहीं कि औरों को सुख दे और इस के बराबर कोई
कि औरों को दुख पहुंचावे। सज्जन दूसरे के दुःख से पे
हैं, जैसे कि मक्खन अपनी गर्मी से आप घुलता है।
का भला करता है वह कैसे दुख पा सका है। क्यों
अपने पास सोना रखता हो वह दरिद्री कैसे हो सका

## पाठ ७

### द्वेष और उस का उपाय।

बात के पीछे पड़े, कि वह धन या उहदा उस का जाता रहे और वह मनुष्य भी उसी के समान बरन उस से घट कर हो जाये, तो इस चाह का नाम द्वेष है, जो बहुत ही बुरी है। क्यों कि किसी मनुष्य की उन्नति और धन आदि को देख कर जलना और उस की घटती चाहना, वास्तव में परमेश्वर की इच्छा के प्रतिकूल चलना और उस को बुरा समझना है।

इस बुरे रोग अर्थात द्वेष का उपाय यह है कि, उस की बुराइयों पर ध्यान दे, कि उस से क्या २ फल प्राप्त होते हैं। जब यह सिद्ध हो जाये कि यह एक ऐसा विचार है, कि जिस से हानि और दुःख के सिवाय कुछ लाभ नहीं, तो मनुष्य को अवश्य उस से ग्लानि होगी। अब देखना चाहिये कि द्वेष से ऐसा क्लेश और क्रोध नित मन में बना रहता है, कि उस से किसी भांति छुटकारा नहीं होता। अर्थात जब किसी को बढ़ते देखा तो जी में खेद समाया, कि उस को क्यों ऐसे २ उत्तम पदार्थ प्राप्त हुए और ये मुझे प्राप्त नहीं होते। कोई उपाय ऐसा हो कि यदि मुझे न मिलें तो कुछ दुःख नहीं, परन्तु ये पदार्थ उस के पास से जाते रहें। अब यदि न्याय की दृष्टि से देखा जाये, तो जिस पर द्वेष किया है वह तो निश्चिन्त और प्रसन्न है और द्वेषी निष्कारण चिन्तित और क्लेशित होकर दूसरे के लिये जो विपत्ति चाहता है, वह स्वयं उसी को प्राप्त है। भला इस से बढ़कर और क्या मूर्खता होगी, कि शत्रु के लिये आप क्लेश उठावे और स्वयं अपना जी जलावे और उस की कुछ भी हानि न हो। द्वेष के द्वारा उस की सम्पत्ति में से कुछ भी घट नहीं सकता, क्योंकि परमेश्वर ने जो जिस का

बादशाह के पास खड़ा हुआ। बादशाह को मुसाहिब की यह दशा देखकर, द्वेषी की बातों का विश्वास होगया और मन में बहुत दुखित हुआ। बादशाह की यह प्रकृति थी कि, जब किसी को बड़ा भारी खिलअत या कोई बड़ी जागीर देता था, तब उस की सनद अपने हाथ से लिखता था। उस समय अपने उहदेदारों में से एक मनुष्य के नाम इस आशय का पत्र लिखा, कि इस पत्र लेजाने वाले का सिर तुरन्त काटकर और इस की खाल में भुस भरवाकर मेरे पास भेज दो। फिर उस पत्र पर सिक्का करके उस बिचारे निरपराधी को दिया, कि अमुक मनुष्य के पास लेजाओ। वह उस लिफ़ाफ़े को लेकर बाहर आया। दैवात उस द्वेषी से मुठभेड़ होगई। उस ने बादशाही आज्ञा पत्र देख कर पूछा, कि इस में क्या आज्ञा है। उस ने उत्तर दिया कि मुझे बड़ा भारी खिलअत मिलने की आज्ञा मिली है। तब उस द्वेषी ने कहा कि भाई इसे मुझे प्रदान कर दो उस ने दे दिया। जब वह लिफ़ाफ़ा लेकर उहदेदार के पास पहुंचा, तब उस ने पढ़कर कहा कि इस में लिखा है, कि पत्र लेजाने वाले का सिर काटकर, उस की खाल में भुस भरवा दो। वह सुन कर वह बहुत घबड़ाया और हाय २ करने लगा, कि यह तो दूसरे के लिये लिखा है, आप बादशाह से पूछ लेवें। उस उहदेदार ने उत्तर दिया कि, मुझ को आज्ञा नहीं है कि मैं इस काम में बादशाह से पूछूं और तुरन्त उस को मरवा डाला। दूसरे दिन वह मुसाहिब बादशाह के हुज़ूर में हाज़िर हुआ और वही नित प्रति का उपदेश किया। बादशाह ने अचम्भित हो, पूछा कि

भाग ठहराया है और जितना समय उस के लिये नियत किया है, उस में किसी तरह अन्तर नहीं पड़ सकता। जो किसी के लिये गड्ढा खोदता है उस के लिये कूआ तैयार होजाता है। जो निरकारण किसी की बुराई चाहे वह अवश्य ही उसी के आगे आती है। कहते हैं कि एक मनुष्य बहुत नेक, सच्चा, शुद्ध, ईमानदार बादशाह के मुसाहिबों में था। प्रति दिन बादशाह के पास जाता और यह उपदेश करता, कि भलों के साथ भलाई करो और दुष्टों से उन की दुष्टता का बदला मत लो, उन की हालत पर छोड़दो क्योंकि यही करनेवालों को स्वयं उन की बदीही दण्ड के लिये बहुत है। बादशाह को उस की यह बात पसन्द थी दैवात एक मनुष्य को उस मुसाहिब से द्वेष हुआ और द्वेषी उस की बुराई पर तैयार हुआ। एक दिन अवसर पाकर, उस ने बादशाह से निवेदन किया कि, जहांपनाह आप का अमुक मुसाहिब कहता है कि, बादशाह के मुंह में दुर्गन्धि आती है। बादशाह ने पूछा कि उस के कहने का क्या पुरावा है। उस ने उत्तर दिया कि जब वह मुसाहिब दर्बार में आवे तब हुजूर उसे अपने पास बुलाके देखें, कि वह अपनी नाक पर हाथ रखता है या नहीं। यदि वह बात चीत करते समय नाक पर हाथ रक्खे रहे, तो हुजूर मेरी बातों पर विश्वास करें। उस द्वेषी ने बादशाह के मन में यह बात दृढ़ कर, उस नेक मुसाहिब का निमन्त्रण किया और भोजन में लहसन खिला दिया। जब वह दर्बार में गया तब बादशाह ने उसे अपने पास बुलाया। वह इस विचार से कि मेरे मुंह की दुर्गन्धि बादशाह तक न पहुंचे, अपने मुंह पर हाथ रखकर

दशाह के पास खड़ा हुआ। बादशाह को मुसाहिब की यह
दशा देखकर, द्वेषी की बातों का विश्वास होगया और मन में
बहुत दुखित हुआ। बादशाह की यह प्रकृति थी कि, जब किसी
को बड़ा भारी खिलअत या कोई बड़ी जागीर देता था, तब
उस की सनद अपने हाथ से लिखता था। उस समय अपने
ओहदेदारों में से एक मनुष्य के नाम इस आशय का पत्र लिखा,
कि इस पत्र लेजाने वाले का सिर तुरन्त काटकर और इस
की खाल में भुस भरवाकर मेरे पास भेज दो। फिर उस पत्र
पर सिक्का करके उस बिचारे निरपराधी को दिया, कि अमुक
मनुष्य के पास लेजाओ। वह उस लिफ़ाफ़े को लेकर बाहर
आया। दैवात उस द्वेषी से मुठभेड़ होगई। उस ने बादशाही

तुम ने उस खिफ़ाफ़े का क्या किया। उस ने बड़ी नम्रता से उत्तर दिया कि अमुक मनुष्य ने मुझ से मांग लिया। बादशाह ने कहा कि तुम ने उस से कहा था कि बादशाह के मुँह में दुर्गन्धि आती है, उस ने निवेदन किया कि नहीं। तब बादशाह ने उस से नाक और मुंह पर हाथ रखने का कारण पूछा। उस ने निवेदन किया कि उस मनुष्य ने मुझे धोखे से लहसन खिलादिया था, जिस से मेरे मुंह से लहसन की दुर्गन्धि आती थी, इस कारण मैं मुंह पर हाथ रखके हुजूर के पास आया था। बादशाह ने कहा कि तुम्हारा यह वचन बहुत ठीक है कि दुष्टों को उन की दुष्टता ही दराड देती है। उस ने जैसा किया वैसा फल पाया॥

## पाठ ८

### राजा हरिश्चन्द्र।

राजा हरिश्चन्द्र अयोध्या का राजा था। यह राजा जैसा सत्य धीर था, वैसाही सकल श्रेष्ठ, गुण मंडित और प्रजा वत्सल भी था। यह राजा बलि के समान दानी और कुवेर के समान सम्पत्तिवान और बड़ा पराक्रमी था। इस ने बहुत दिनों तक राज्य किया। इस को सब तरह के सुख थे, परन्तु कोई पुत्र न था, इस कारण चिन्तित रहता था। इस ने बड़ी तपस्या की, तब परमेश्वर की कृपा से इस के पुत्र हुआ। तब इस ने बहुत दान पुण्य किया। जिस याचक ने जो मांगा उसे वही

जिस को जितना धन चाहिये, उतना ले जाओ। उस समय ब्राह्मणों ने सुवर्ण मुद्राओं के ऐसे ऐसे पुट्टर बांधे, कि वे उन पर घर तक न चल सके। तब अपना २ बोझ हलका करने के लिये, उन्हों ने पुट्टर में से सुवर्ण मुद्रा निकाल २ कर, मार्ग में फेंक। कुल गुरु से पुत्र का नाम करण कराया, तो गुरुजी ने उस का नाम रोहिताश्व रक्खा। और कहा कि यह बड़ा यशस्वी होगा।

राजा हरिश्चन्द्र के न्याय से प्रजा अत्यन्त प्रसन्न थी और इस का यश चहुं ओर छा रहा था। एक दिन नारदजी राजा इन्द्र की सभा में गये। राजा इन्द्र ने नारदजी का यथोचित

तुम ने उस खिताब का क्या किया। उस ने बड़ी नम्रता से उत्तर दिया कि अमुक मनुष्य ने मुझ से मांग लिया। बादशाह ने कहा कि तुम ने उस से कहा था कि बादशाह के मुँह में दुर्गन्धि आती है, उस ने निवेदन किया कि नहीं। तब बादशाह ने उस से नाक और मुंह पर हाथ रखने का कारण पूछा। उस ने निवेदन किया कि उस मनुष्य ने मुझे धोखे से लहसन खिलादिया था, जिस से मेरे मुंह से लहसन की दुर्गन्धि आती थी, इस कारण मैं मुंह पर हाथ रखके हुजूर के पास आया था। बादशाह ने कहा कि तुम्हारा यह वचन बहुत ठीक है कि दुष्टों को उन की दुष्टता ही दण्ड देती है। उस ने जैसा किया वैसा फल पाया॥

## पाठ ८.

[illegible]

सके तो मैं रुपये दूं और आप को पन्धक रक्खूं। राजा ने कहा अच्छा मैं वर्ष भर तुम्हारी सेवा करूंगा, तुम इन्हें रुपये दो। इतना वचन राजा के मुख से निकलते ही श्वपचें ने विश्वामित्र को रुपये गिन दिये। वह रुपये ले अपने घर गये और राजा वहां रह उस की सेवा करने लगा। कितने एक दिन पीछे राजा हरिश्चन्द्र का पुत्र रोहिताश्व मर गया, उस मृतक को ले रानी मरघट में गई और ज्यों चिता बनाय अग्नि संस्कार करने लगी त्योंही राजा ने आय कर मांगा। रानी रोकर बोली यह तुम्हारा पुत्र रोहिताश्व है और कर देने को मेरे पास और तो कुछ नहीं एक यही चीर है, जो पहने खड़ी हूं। राजा ने कहा मेरा इस में कुछ बश नहीं, मैं स्वामी के कार्य पर खड़ा हूं, जो स्वामी का कार्य न करूं तो मेरा सत्य जाय। इस बात के सुनते ही रानी ने ज्यों चीर उतारने को आंचल पर हाथ डाला, त्यों ही तीनों लोक कांप उठे। यों

रानी तारामती और उस के पुत्र रोहिताश्व को अनेक प्रकार के कष्ट दिये, पर राजा हरिश्चन्द्र ने अपना सत्य नहीं छोड़ा।

एक समय राजा हरिश्चन्द्र के देश में दुर्भिक्ष पड़ा और अन्न बिन सब लोग मरने लगे, तब राजा ने अपना सर्वस्व बेच २ सब को जिलाया। जब देश, नगर, धन गया और निर्धन हो राजा रहा, तब एक दिन सन्ध्या समय वह तो कुटुम्ब समेत भूखा बैठा था, कि इतने में विश्वामित्र ने आय इस का सत्य देखने को यह वचन कहा। महाराज! मुझे धन दीजिये और कन्या दान का सा फल लीजिये। इस वचन के सुनते ही राजा ने जो कुछ घर में था सो ला दिया। पुनि ऋषि ने कहा महाराज! मेरा काम इतने में न होगा। फिर राजा ने दास दासी बेंच धन ला दिया और धन, जन गंवाय निर्धन निर्जन हो स्त्री पुत्र को ले रहा। पुनि ऋषि ने कहा कि धर्ममूर्त्ति इतने धन से मेरा न सरा, अब मैं किस के पास जाय मांगूं। मुझे तो संसार में तुझ से अधिक धनवान, धर्मात्मा, दानी कोई नहीं दृष्टि आता है। एक श्वपच नाम चांडाल मायापात्र है, कहो तो उस से जा धन मांगूं। पर इस में भी लज्या आती है, कि ऐसे दानी राजा को यांच उस से क्या यांचूं। इतनी बात के सुनते ही राजा हरिश्चन्द्र विश्वामित्र को साथ ले उस चांडाल के घर गया और उस से कहा कि भाई! तू हमें एक वर्ष के लिये गहने धर और इन का मनोरथ पूरा कर। तब उस चांडाल ने कहा कि महाराज आप बड़े तेजस्वी राजा हैं और मेरे यहां यह नीच काम है, कि श्मशान में जाय चौकी दें और जो मृतक आ[illegible] से कर लें, पुनि हमारे घर बार की चौकसी करें, आप

सके तो मैं रुपये दूं और आप को बन्धक रक्खूं। राजा ने कहा अच्छा मैं वर्ष भर तुम्हारी सेवा करूंगा, तुम इन्हें रुपये दो। इतना वचन राजा के मुख से निकलते ही श्वपच ने विश्वामित्र को रुपये गिन दिये। वह रुपये ले अपने घर गये और राजा वहां रह उस की सेवा करने लगा। कितने एक दिन पीछे राजा हरिश्चन्द्र का पुत्र रोहिताश्व मर गया, उस मृतक को ले रानी मरघट में गई और ज्यों चिता बनाय अग्नि संस्कार करने लगी त्यों ही राजा ने आय कर मांगा। रानी रोकर बोली यह तुम्हारा पुत्र रोहिताश्व है और कर देने को मेरे पास और तो कुछ नहीं एक यही चीर है, जो पहने खड़ी हूं। राजा ने कहा मेरा इस में कुछ वश नहीं, मैं स्वामी के कार्य पर खड़ा हूं, जो स्वामी का कार्य न करूं तो मेरा सत्य जाय। इस बात के सुनते ही रानी ने ज्यों चीर उतारने को आंचल पर हाथ डाला, त्यों ही तीनों लोक कांप उठे। यों ही भगवान ने राजा रानी का सत देख पहिले एक विमान भेज दिया और पीछे से आप दर्शन दे तीनों का उद्धार किया॥

## पाठ ९

### चित्रकूट वर्णन।

दोहा।

चित्रकूट महिमा अमित, कही महा मुनि गाय।
आइ नहाने सरित वर, सीय सहित दोउ भाय॥

चौपई।

रघुबर कहेउ लखन भल घाटू। करहु कतहुं अब ठाहर ठाटू।

लखण दीखपय उतरकरारा । चहुं दिशिफिरयो

नदी पनच शर शम दम दाना । सकल

चित्रकूट जनु अचल अहेरी । चूक न घात मार मुठ भेर-

अस कहिलषणठांव दिखरावा

रमेउ राम मन देवन जाना । चले सहित सुरपति

कोल्ह किरात वेष धरि आये । रच्यो पर्ण तृण सदन सुहाये।

वरणि न जाइ मंजु दुइ शाला । एक ललित लघु एक विशाला॥

दोहा ।

लखण जानकी सहित प्रभु, राजत पर्ण निकेत।
सोह मदन मुनि वेष जनु, रति ऋतुराज समेत॥

चौपाई ।

अमर नाग किन्नर दिग पाला । चित्रकूट आये तेहि काला॥
राम प्रणाम कीन्ह सब काहू । मुदित देव लहि लोचन लाहू॥
वर्षि सुमन कह देव समाजू । नाथ सनाथ भये हम आजू॥
करि विनती दुख दुसह सुनाये । हरषित निज निज गेह सिधाये॥
चित्रकूट रघुनन्दन छाये । समाचार सुनि सुनि मुनि आये॥
आवत देखि मुदित मुनि वृन्दा । कीन्ह दण्डवत रघुकुल चन्दा॥
मुनि रघुवरहिं लाइ उर लेहीं । सफल होन हित आशिष देहीं॥
सिय सौमित्र राम छवि देखहिं। साधनसकलसुफलकरि लेखहिं॥

दोहा ।

यथा योग्य सन्मानि प्रभु, बिदा किये मुनि वृन्द।
करहिं योग जप यज्ञ तप, निज आश्रम स्वच्छन्द॥

चौपाई ।

यह सुधि कोल्ह किरातन पाई । हरषे जनु नव निधि घर आई॥

राम सकल बनचर परितोषे । कहि मृदु बचन प्रेम परिपोषे ।
बिदा किये सिर नाय सिधाये। प्रभु गुन कहत सुनत घर आये।
इहि बिधि सीयसहित दोउ भाई। बसहिं बिपिन सुर मुनि सुखदाई।
जब ते आइ रहे रघुनायक । तब ते भो बन मंगल दायक ।
फूलहिं फलहिं बिटप बिधि नाना। मंजु बलित बर बेलि बिताने।
सुरतरु सरिस सुभाव सुहाये। मनहुं बिबुध बन परिहरि आये।
गुंजत मंजुल मधुकर श्रेनी। त्रिबिध बयारि बहै सुख देनी।

दोहा।

नील कण्ठ, कल कण्ठ सुक, चातक चक्क चकोर।
भांति भांति बोलहिं बिहंग, श्रवण सुखद चित चोर॥

चौपाई।

करि केहरि कपि कोल कुरंगा। बिगत बैर बिहरहिं यक संगा॥
फिरत अहेर राम छबि देखी। होहिं मुदित मृग बृन्द बिशेखी॥
बिबुध बिपिन जहं लग जग माहीं। देखि राम बन सकल सिहाहीं॥
सुरसरि सरस्वति दिनकर कन्या। मेकल सुता गोदावरि धन्या॥
सब सरि सिन्धु नदी नद नाना। मन्दाकिनि कर करहिं बखाना॥
उदय अस्त गिरि पर कैलासू। मन्दर मेरु सकल सुर बासू॥
शैल हिमाचल आदिक जेते। चित्रकूट; यश गावहिं तेते॥
बिन्ध्य मुदित मन सुख न समाई। बिनु श्रम बिपुल बड़ाई पाई॥

दोहा।

चित्र कूट के बिहंग मृग, बेलि बि
पुण्य पुंज सब धन्य अस, कहहिं

चौपाई।

नयन वन्त रघुपतिहिं बिलोकी। पाइ

परसि चरण रज अचर सुखारी। भये परम पद के अधिकारी॥
सो बन सैल सुभाय सुहावन। मंगल मय अति पावन पावन॥
महिमा कहिय कवन विधि तासू। सुख सागर जहं कीन्ह निवासू॥
पय पयोधि तजि अवध विहाई। जहं सियराम लखण रहे आई॥
कहि न सकहिं सुषमा जस कानन। जो शत सहस होहिं सहसानन॥
सो मैं बरणि कहौं विधि केहीं। डाबर कमठ कि मन्दर लेहीं॥
सेवहिं लखण कर्म मन बानी। जाइ न शील सनेह बखानी॥

## पाठ १०

### आलस्य।

समय को आलस्य और थोथी बातों में खो देना ऐसा बुरा है, जैसा अपने पास के द्रव्य को सर्व साधारण के मार्ग में फेंक देना। क्योंकि जो समय बीत जाता है, वह फिर हज़ार यतन करने पर भी हाथ नहीं आता। खोया हुआ द्रव्य तो फिर कभी, मिल भी जाता है और यदि मिलता नहीं तो अधिक

---

महिमा=बड़ाई। सरिता=नदी। ठाहर=ठहरने। पनच=चिल्ला, रोदा। पार=तीर। कलुश=पाप। बाउज=शिकार, निशाने। अहेरी=शिकारी। सुरपति=इन्द्र। पर्ण=पत्ते। सदन=मन्दिर, घर। मंजु=उज्वल। ऋतुराज=बसंत ऋतु। अमर=देवता। वृन्दा=समूह। सौमित्र=लक्ष्मण। साधन=साधनों। रंक=दरिद्री। कानन=बन। करि=हाथी। केहरि=सिंह। अहि=सांप। बराई=दूरकरके। कन्दर=गुफा। जोहा=देखाहुआ। निर्भर=झरने। आयसु=आज्ञा। ऐन=स्थान। बैन=बचन। परितोषे=सन्तुष्ट किया। विपन=बन। बिताना=चंदोवा। सुरतरु=कल्पवृक्ष। श्रेनी=पांती। कलकंठ=कोयल। शुक=तोता।

खोज खाज करने पर उस का ठिकाना तो भी लग जाता है. दैवात यह भी न हुआ तो उस द्रव्य के मिलने पर (जो खो गया है) पाने वाले को अवश्य बड़ा आनन्द और लाभ होता है, परन्तु खोया हुआ समय अपने हाथ से निकल कर, न तो अपने हाथ आता है और न दूसरों को मिलता है और जाने में इतनी सावधानी और शीघ्रता करता है, कि (पता लगाना तो बड़ी बात है) लोग उस की परछांई तक भी नहीं पाते। यदि कोई आदमी कंगाल हो जावे और उस के पास एक फूटी कौड़ी भी न रहे, तो वह श्रम करने से धनवान हो सकता है, परन्तु गया हुआ समय फिर नहीं आ सकता। आलस्य इस प्रकार धीमा चलता है, कि कंगाली और दरिद्रता उस को अति शीघ्र ही पकड़ लेती है। श्रम और उद्यम तो आलस्य के प्रादुर्भाव होते ही अपना बंधना बोरिया समेट कर, अपने २ घर की राह लेते हैं। इन को जाता देख लक्ष्मी भी धीरे २ खिसकने लगती है। निद्रा आकर अपना आतंक जमाती है। रोगाधिराज भी अपने दल बल ताप तिल्ली, हैज़ा, संग्रहनी, दमा, खांसी, मृगी, बवासीर, अतीसार आदि को लिये चहुं ओर से दबा लेता है और काल भी धुसके से एक

---

तक=पपीहा बक=बगुला। चकोर=चकवा। विहंग=पक्षी। कपि=बंदर
ट=सूअर। कुरंग=हिरन। विहरते=विचरते हैं। सुरसरी=गंगाजी।
दिनकरकन्या=यमुनाजी। मेकलसुता=नर्मदाजी। मन्दर=मन्दराचल पहाड़।
=सुमेरु पहाड़। गिरि=पहाड़। विन्ध्य=विन्ध्याचल पहाड़। विभ=नृप।
तोपे=तोकादिव। चाहि=सुंदर। पयस्वी...=धी...
योध्या। दशानन=रावण। दादुर=मेढा, दरैया। ...

ओर ताक में आ बैठता है। इसलिये आलस्य को कभी पास तक न आने देना चाहिये, क्योंकि आलस्य से सहल बातें भी आदमी को कठिन जान पड़ती हैं। क्योंकि काम के पहिले ही आलसी पुरुष को निराशता आ दबाती है, इस से वह काम के आरम्भ में ही निरुत्साह हो जाता है। परन्तु उन लाभों को स्मरण नहीं रखता जो उस काम से होना सम्भव है। जब आलसी मनुष्य के पास कोई काम आजाता है, तो वह कहता है कल कर लूंगा। जब कल आता है तो कहता है कि परसों कर लूंगा। इसी प्रकार कहते २ और अवसर देखते २ काम करने का समय निकल जाता है या एक दिन के काम में एक महीना लग जाता है।

आलसी मनुष्य का किसी काम के करने में मन नहीं लगता। वह यही चाहता है कि, मैं तमाम दिन बैठा रहूं और कोई काम धन्धा न करूं। परन्तु बिना हाथ पांव हिलाये मनुष्य का संसार में कोई काम नहीं चल सकता, इसलिये आलसी मनुष्य खाते पीते उठते बैठते बात २ में दुःख करते हैं।

जो पुरुष आलसी होते हैं वे निर्बल हो जाते हैं और मृत्यु भी उन को शीघ्र ही आ दबोचती है और जो मनुष्य समयानुसार काम करते हैं वे सदैव भले चंगे और हट्टे कट्टे बने रहते हैं और किसी प्रकार की पीड़ा उन के पास तक भी नहीं फटकने पाती। जिस काम के करने का वे स्वप्न में भी मनोरथ करते हैं उस में अवश्य सफलता प्राप्त करते हैं। कंगाली को उन के घर का द्वार तक भी नहीं मिलता और लक्ष्मी सदा द्वार पर ही खड़ी रहती है। जैसे जो बर्तन काम

में नहीं लाये जाते सदा गृह के एक कोने में पड़े रहते हैं, वे धाईं आदि से बिगड़कर निकम्मे हो जाते हैं और जो प्रति दिन काम में लाये जाते हैं वे कैसे स्वच्छ और चमकीले रहते हैं और हर किसी का उन को देखकर चित्त प्रसन्न रहता है। बस इसी प्रकार आलसी मनुष्य बिगड़ कर किसी काम के करने योग्य नहीं रहते और उद्यमी सदा प्रसन्न चित्त रहते हैं। सब उन की प्रशंसा करते हैं इसलिये हम सब को परिश्रमी और उद्यमी होना उचित है॥

## पाठ ११

### सन्तोष।

इस में सन्देह नहीं कि सन्तोष में एक तरह से वे सब गुण हैं, जो लोग पारस पत्थर में बतलाते हैं। अर्थात् सन्तोष से माना कि सम्पति प्राप्ति नहीं होती, परन्तु सम्पति की इच्छा न रहने से यही बात प्राप्ति होती है। सन्तोष यद्यपि यह नहीं कर सकता कि मनुष्य की चिन्ता को मिटा दे, परन्तु यह तो कर सकता है कि मनुष्य ऐसी दशा में भी प्रसन्न रहे। जिस को सन्तोष है उस पर कैसीही विपति पड़े परन्तु वह उसे सहन कर लेता है। जिस के मन में सन्तोष है, वह कदापि परमेश्वर के अहिसान को न भूलेगा, न अपनी प्रारब्ध को बुरा कहेगा, बरन जिस दशा में वह आपड़ा है उसी को अपने लिये उचित समझेगा। चित्त में जो बुरी इच्छाएं उठती हैं इस के द्वारा वे ... हैं ...स की ... की ...

सन्तोष की प्रकृति पैदा करने की कई रीतें हैं, जिस में से दो का वर्णन किया जाता है। पहिली यह कि, मनुष्य को यह विचारना चाहिये कि आवश्यकता से कितना अधिक उस के पास है और दूसरी यह कि उसे खयाल करना चाहिये कि जिस दशा में अब है उस से बुरी दशा में भी हो सक्ता था। एक विद्वान था, उस से किसी मित्र ने कहा, कि बड़े पश्चात्ताप की बात है,कि आप का एक खेत हाथ से जाता रहा। उस ने उत्तर दिया कि परमेश्वर की कृपा से अब भी मेरे पास तीन बड़े२ खेत मौजूद हैं और तुम्हारे एक ही है। मुझे तुम्हारे लिये पश्चात्ताप करना चाहिये था, आप उलटा मेरे लिये पश्चात्ताप करते हैं। मूर्खों का ध्यान विशेष कर इस बात पर रहता है,कि क्या वस्तु उन के हाथ से जाती रही और इस बात पर कम, कि क्या उन के पास है और ऐसे लोगों की दृष्टि विशेष कर उन मनुष्यों पर रहती है, जो उन से धनवान हैं और उन पर कम जो उन से भी अधिक विपत्ति में हैं। धनाढ्य उसे कहना चाहिये,जिस के पास उस की आवश्यकताओं स अधिक मौजूद हो। इस खयाल से हम धनाढ्य नहीं कह सकते, जो बड़े ठाट बाट से रहता है। वरन मुख्य धनाढ्य वह है,जो अपनी आवश्यकताओं को अपनी पूंजी तक परमित रखता है। चादर देखकर पांव फैलाता है और अपनी प्राप्ति को अपने आवश्यक खर्च से अधिक समझता है। बड़े दर्जे के लोग नित अमीरी ठाठ में फंसे रहते हैं। क्योंकि वे अपनी सम्पत्ति और ठाट बाट के अपने लिये कोई मुख्य आनन्द प्राप्त नहीं करते, वरन वे दिन रात इस बात की चिन्ता में रहते हैं कि, जैसे बने तैसे हम

ठाट बाट में सब अमीरों से बढ़ जावें। बुद्धिमान मनुष्य नित ऐसे खेल देखते रहते हैं और वे अपनी इच्छाओं को कम करके ग़रीबी की दशा में भी उस गुप्त आनन्द को पा लेते हैं जिस की खोज में धनवान लोग भटकते २ फिरते हैं। बिटास्स नामी एक बुद्धिमान था, उस का भाई मर गया सब जायदाद मौरूसी बिटाक्स की होगई। उस वक्त लिडिया के बादशाह ने किसी बात से प्रसन्न होकर, बिटाक्स को बहुत कुछ रुपया देना चाहा। परन्तु उस ने बादशाह को धन्यवाद देकर निवेदन किया, कि हुज़ूर मेरे पास ज़रूरत से ज़ियादा मौजूद है, उसी को मैं खर्च में नहीं ला सक्ता। सारांश यह कि सन्तोष असल में धन है और रुपये वाला होना, और हाजत मन्द बन जाना है॥

## पाठ १२

### महाराज रामचन्द्र।

महाराज रामचन्द्र जी अयोध्या के स्वामी राजा दशरथ के बड़े पुत्र थे। इन के तीन छोटे भाई भरत, लक्ष्मण और शत्रुघ्न थे। विश्वामित्र मुनि के साथ मगध के राजा जनक के यहां स्वयंवर में गये, वहां इन का विवाह राजा जनक की कन्या सीताजी के संग हुआ। इस के पीछे राजा दशरथ की यह इच्छा हुई कि, रामचन्द्र को युवराज करें। यह बात इन की सौतेली माता कैकई को अच्छी न लगी, वरन इस बात के सुनतेही भ्रान्ति रूप होगई और नख से शिख तक क्रोध स्वरूप बन गई। राजा दशरथ तीनों रानियों अर्थात् कौशल्या, सुमित्रा, और कैकई में उस को अधिक चाहते थे। नियम

से उस के मन्दिर में गये, तो उसे शोकित देख बड़े अचम्भे में आगये। इस का कारण पूछने से ज्ञात हुआ, कि जो राजा रामचन्द्र की जगह भरत को राजगद्दी दी जाय और रामचन्द्र को चौदह वर्ष बनवास की आज्ञा हो, तो इस शोक का निवारण हो सक्ता है।

राजा दशरथ पहले ही वरदान दे चुके थे, इस कारण हां या न दोनों ही नहीं कर सक्ते थे। जो हां करते हैं तो अपनी जिव्हा से ऐसे अनुपम पुत्र को चौदह वर्ष तक देश से बाहर निकालते हैं, जिन का क्षण मात्र का भी वियोग उन को कठिन था, बरन उन के वियोग की याद ही उन की प्राण घातक होती थी। जो न करते हैं तो उन के वचन में बट्टा लगता है, क्योंकि वरदान देकर उस के पूरा करने में निषेध करना महाराजाओं के योग्य नहीं।

रामचन्द्रजी ने जो यह दशा देखी तो उन्हों ने उसी समय बन का जाना हृदय से मान लिया और अपनी माता कौशल्या की आज्ञा लेकर जाने पर तैयार हुए। यह कब हो सक्ता था कि रामचन्द्रजी तो बन को जावें और सीताजी घर में रहें। सीताजी क्या थीं रामचन्द्रजी की छाया थीं, रामचन्द्रजी के साथ हो लीं। यह समाचार सुनते ही लक्ष्मण को अयोध्या का रहना भला न लगा और बड़े भाई का साथ देना अच्छा जाना। ये तीनों जन बन को चले। राजा दशरथ को इन के वियोग का ऐसा कठिन दुःख हुआ, कि अपने जीवन से निराश होगये और दो तीन ही दिन में इस से हाथ धो बैठे।

न और शत्रुघ्न ननसार में थे। जिन का

मरण सुनते ही अयोध्या आये और उन की क्रिया कर्म से छुटकारा पाकर, रामचन्द्र जी के प्रेम में उन का पता लगाते हुए चित्रकूट तक पहुंचे। यद्यपि भरत को रामचन्द्र जी के होते किसी प्रकार राजगद्दी की इच्छा न थी, पर रामचन्द्र जी कब ऐसे थे कि अपने वचन के विपरीत करते। अन्त में भरत को अयोध्या लौट आना पड़ा और रामचन्द्रजी की आज्ञा से चौदह वर्ष की अवधि तक राज्य कार्य का प्रबन्ध करना पड़ा।

रामचन्द्र जी लक्ष्मण और सीताजी के साथ चित्रकूट से चल कर, वन २ फिरते २ और जहां तहां ऋषियों से मिलते पंचवटी में पहुंचे। यह जगह गोदावरी नदी के किनारे पर नासिक नगर के निकट है। वहां लंका के राजा रावण की बहिन सूर्पणखा का मन रामचन्द्र जी पर मोहित हुआ। यह देखते ही लक्ष्मण जी ने रामचन्द्र जी की आज्ञा से उस के नाक कान काट लिये। इस का बदला लेने के लिये सूर्पणखा के भाई खरदूषण और त्रिशिरा आदि सेना समेत रामचन्द्र जी पर चढ़ आये। उन के आते ही रामचन्द्र जी को भी विवश होकर लड़ना पड़ा। उस लड़ाई का फल यह हुआ कि सब शत्रु मारे गये। [illegible]थ यों भी सूर्पणखा के मन को सन्तोष न हुआ तब रावण [illegible] पास जाय रो रो कर, सब हाल कहा। रावण यह हाल [illegible]नते ही लंका से चला और पंचवटी में पहुंच कर मारीच [illegible]म राक्षस की सहायता से सीताजी को हर ले गया। [illegible]चन्द्र जी सीताजी का खोज लगाते २ किष्किन्धा स्थान

को मार कर, सुग्रीव को यहां का राजा बनाया। इसी सुग्रीव के द्वारा जामवन्त नाम रीछों के राजा से भेंट हुई, वह भी इन का सहायक हुआ। हनुमान जी सीताजी के लंका में होने का समाचार लाये। यह सुनते ही रामचन्द्र जी दल समेत लंका में पहुंचे। वहां रावण लड़ाई करने पर तैयार हुआ। बहुत काल तक लड़ाई हुई अन्त को रावण रामचन्द्र जी के हाथ से मारा गया और सीता जी रामचन्द्र जी के पास आगई।

चौदह वर्ष बीतने पर रामचन्द्र जी लक्ष्मण और सीता जी समेत अयोध्या में आये और बहुत दिनों तक बड़ी उत्तमता से राज्य किया॥

# पाठ १३

## पहाड़।

यदि सम्पूर्ण पृथ्वी चौरस होती, तो क्या हम को लाभ न होता और क्या उन लाभों के सिवाय जो कि पृथ्वी के चौरस होने से हम को होते एक लाभ यह और न होता कि हम ... से देशाटन कर सकें। ...ा चाहिये, जिस से हम को ...चा बनाया ...ों में से पानी ...र्ण और समुद्र है, कि पहाड़ों के

होने से पृथ्वी की भाफ़ जमकर पानी हो जाती है, इस कारण व्यर्थ नहीं जा सक्ती और इसी प्रकार पहाड़ों की चोटी पर सोते निकल कर, परस्पर मिलते २ नदियां बन जाते हैं जो पहाड़ों पर से गिर कर, नीचे की घाटियों को तर कर देते हैं। यदि पहाड़ न होते और पृथ्वी ढालू न होती तो नदियां सैकड़ों मील बहकर समुद्र तक कभी न पहुंच सक्तीं।

इस बात के सिवाय पहाड़ों पर भांति २ के जानवर रहते हैं, जो मनुष्यों के बहुत काम आते हैं। पहाड़ों के किनारे पर ऐसे २ वृक्ष और पोधे होते हैं, जो मैदान में कदापि उत्पन्न नहीं हो सक्ते। पहाड़ों में से धातु आदि वस्तुएं मिलती हैं और उन से एक बड़ा लाभ यह है, कि वे अनेक देशों के निवासियों को उन के शत्रुओं के धावों से ऐसे बचाते हैं, कि वे शहर पनाह और घाटियों से कभी ऐसे आनन्द से न रह सक्ते। समुद्र के बढ़ने और हवा के तूफ़ान को भी पहाड़ रोक दिया करते हैं। यह बात सिद्ध है कि पृथ्वी की उत्तमता के लिये पहाड़ का होना अवश्य है और उन से हम को बहुत लाभ होते हैं। जैसे कि सारी सृष्टि में परमेश्वर की शक्ति और कृपा और यथार्थता प्रगट होती है, वैसे ही पहाड़ों के होने से भी ये सब बातें प्रगट होती हैं। यदि पृथ्वी पर सब जगह सर्दी गर्मी बराबर होती, तो पृथ्वी के निवासियों की हानि होती। बहुतेरे मनुष्य ख्याल करते हैं, कि जो पृथ्वी के सब भागों पर सर्दी और गर्मी बराबर पड़ती और दिन रात बराबर होते तो ज़मीन के स्वर्ग होने में कोई सन्देह न था। यदि यह बात यों ही होती तो मनुष्यों को सब से अधिक आनन्द कभी प्राप्त न होता, वरन ज़मीन बहुत

खराब हो जाती और उस पर रहना कठिन हो जाता। परन्तु परमेश्वर के वर्त्तमान प्रबन्ध से उस की महिमा के तरह २ के काम प्रगट होते हैं। यदि ऋतुएं और प्रकाश और अंधेरा और सर्दी गर्मी न बदलती जातीं, सब जगह बराबर होतीं, तो उन का एकसा रहना क्या हम को बुरा न मालूम होता और ज़मीन की उत्तमता कितनी कम होजाती। हज़ारों तरह के पौधे और जानवर जो केवल उन देशों में होते हैं, जिन की गर्मी किसी मुख्य दर्जे तक हो, तुरन्त मर जाते। संसार में ऐसे पदार्थ बहुत कम हैं, जो सब देशों में रह सकें। ठंढे देशों के निवासी गर्म देश की गर्मी नहीं सह सक्ते हैं और इसी तरह गर्म देश के निवासी सर्दी को सहन नहीं कर सक्ते। यदि जल वायु एकसी होती तो संसार की कितनी पैदावारियां जाती रहतीं और संसार की बहुतेरी खूबियां घट जातीं।

यदि प्रत्येक देश में वही वस्तुएं उत्पन्न होतीं और पृथ्वी की आकृति और जल वायु प्रत्येक जगह एकसी होती, तो आने जाने की आवश्यकता न पड़ती। प्रत्येक देश की सौदागरी और २ देशों से न रहती और भाषा आई के न होने से विद्या की भी हानि होती।

## पाठ १४

### अंगद का रावण की सभा में जाना।

चौपाई।

बन्दि ... पद प्रभुताई। अंगद चलेउ सबहिं सिर नाई॥

प्रभु प्रताप उर सहज असंका। रण बांकुरा बालि सुत बंका॥
पुर पैठत रावण कर बेटा। खेलत रहा सो होइ गई भेंटा॥
बातहिं बात कर्ष बढ़ि आई। युगल अतुल बल पुनि तरुणाई॥
तेहिं अंगद कहँ लात उठाई। गहि पद पटकेउ भूमि भ्रमाई॥
निशिचर निकर देखि भट भारी। जहँ तहँ चले न सकहिं पुकारी॥
एक एक सन मर्म न कहहीं। समुझि तासु बध चुप होइ रहहीं॥
भयेउ कुलाहल नगर मंझारी। आया कपि लंका जेहिं जारी॥
अबधौं कहा करिहि करतारा। अति सभीत सब करहिं विचारा॥
बिनु पूंछे मगु देहिं बताई। जेहिं बिलोक सोइ जाहि सुखाई॥

दोहा।

गयो सभा दरबार रिपु, सुमिरि राम पद कंज।
सिंह ठवनि इत उत चितै, धीर वीर बल पुंज॥

चौपाई।

तुरत निशाचर एक पठाया। समाचार रावणहिं सुनाया॥
सुनत बचन बोलेउ दशशीशा। आनहुँ बोलि कहां कर कीशा॥
आयसु पाय दूत बहु धाये। कपि कुंजरहिं बोलि लै आये॥
अंगद दीख दशानन बैसा। सहित प्राण कज्जल गिरि जैसा॥
भुजा विटप शिर शृंग समाना। रोमावली लता जनु नाना॥
मुख नासिका नयन अरु काना। गिरि कन्दरा खोह अनुमाना॥
गयेउ सभा मन नेकु न मुरा। बालि तनय अति बल बाँकुरा॥
उठे सभासद कपि कहँ देखी। रावण उर भा क्रोध विशेषी॥

दोहा।

यथा मत्त गज यूथ महँ, पंचानन चलि जाय।
राम प्रताप सुमिरि उर, बैठ सभहिं शिर नाय॥

चौपाई।

कह दशकन्ध कवन तैं बन्दर। मैं रघुबीर दूत दशकन्धर॥
मम जनकहिं तोहिं रही मिताई। तव हित कारण आयउँ भाई॥
उत्तम कुल पुलस्त्य कर नाती। शिव बिरंचि पूजेहु बहु भांती॥
बर पायेउ कीन्हेउ सब काजा। जीतेहु लोकपाल सुर राजा॥
नृप अभिमान मोह बश किम्वा। हरि आनेहु सीता जगदम्बा॥
अब शुभ कहा करहु तुम मोरा। सब अपराध क्षमहिं प्रभु तोरा॥
दशन गहहु तृण कण्ठ कुठारी। पुरजन संग सहित निज नारी॥
सादर जनक सुता करि आगे। एहि बिधि चलहु सकल भय त्यागे॥

दोहा।

प्रणत पाल रघुबंश मणि, त्राहि त्राहि अब मोहिं।
सुनतहिं आरत बचन प्रभु, अभय करहिंगे तोहिं॥

रे कपि पोच बोल संभारी। मूढ़ न जानसि मोहिं सुरारी॥
कहु निज नाम जनक कर भाई। केहि नाते मानिये मिताई॥
अंगद नाम बालि कर बेटा। तासों कबहुं भई तोहि भेटा॥
अंगद बचन सुनत सकुचाना। रहा बालि बानर मैं जाना॥
अंगद तुही बालि कर बालक। उपजेउ बंश अनल कुल घालक॥
गर्भ न गयेउ बृथा तुम जाये। निज मुख तापस दूत कहाये॥
अब कहु कुशल बालि कहं अहई। बिहंसि बचन अंगद अस कहई॥
दिन दश गये बालि पहँ जाई। पूंछेउ कुशल सखा उर लाई॥
राम बिरोध कुशल जस होई। सो सब तुमहिं सुनाइहि सोई॥
सुनु शठ भेद होइ मन ताके। श्री रघुबीर हृदय नहिं जाके॥

दोहा।

हम कुल घालक सत्य तुम, कुल पालक दशशीश।
अन्ध बधिर न कहहिं अस, श्रवण नयन तव बीस॥

चौपाई।

शिव विरंचि सुर मुनि समुदाई। चाहत जासु चरण सेवकाई॥
तासु दूत होइ हम कुल बोरा। ऐसी मति उर विहर न तोरा॥
सुनि कठोर बाणी कपि केरी। कहत दशानन नयन तरेरी॥
खल तव वचन कठिन मैं सहऊं। नीति धर्म सब जानत अहऊं॥
कह कपि धर्म शीलता तोरी। हमहुँ सुनी कृत परतिय चोरी॥
देखेउं नयन दूत रखवारी। बूड़ि न मरहु धर्म व्रत धारी॥
नाक कान बिन भगिनि निहारी। क्षमा कीन्ह तुम धर्म विचारी॥
धर्म शीलता तव जग जागी। पाया दर्श हमहुं बड़ भागी॥

दोहा।

जनु जल्पसि जड़ जन्तु कपि, शठ विलोकि मम बाहु।
लोकपाल बल विपुल शशि, ग्रसन हेतु जिमि राहु॥
पुनि नभ सर मम करनि कर, कर कमलन पर बास।
शोभित भयो मराल इव, शम्भु सहित कैलास॥

चौपाई।

तुम्हरे कटक मांहि सुनु अंगद। मो सन भिरहि कौन योधा बद॥
तव प्रभु नारि विरह बल हीना। अनुज तासु दुख दुखित मलीना॥
तुम सुग्रीव कूल द्रुम दोऊ। बन्धु हमार भीरु अति सोऊ॥
जाम्बवन्त मन्त्री अति बूढ़ा। सो किमि होइ समर आरूढ़ा॥
शिल्प कर्म जानत नल नीला। है कपि एक महा बल शीला॥
आवा प्रथम नगर जेहि जारा। सुनि हँसि बोलेउ बालि कुमारा॥
सत्य वचन कहु निशिचर नाहा। साँचहु कीश कीन्ह पुर दाहा॥
रावण नगर अल्प कपि दहई। को अस झूंठ कहै को सुनई॥
जो अति सुभट सराहेहु रावण। सो सुग्रीव केर लघु धावन॥

पाछे बहुत सो बीर न होई। पठवा खबरि लेन हम सोई॥

दोहा।

सब आगा पुर दहेउ कपि, बिनु प्रभु आयसु पाइ।
गयेउ न फिरि निज नाथ पहं, तेहि भय रहेउ लुकाइ॥
सत्य कहसि दशकण्ठ तैं, मोहिं न सुनि कछु कोह।
कोउ न हमरे कटक अस, तुम सन लरत जो सोह॥
प्रीति विरोध समान सन, करिय नीति अस आहि।
जो मृगपति बध मेडुकहिं, भलो कहै को ताहि॥
यद्यपि लघुता राम कहं, तोहिं बधे बड़ दोष।
तदपि कठिन दशकण्ठ सुन, छत्रि जाति कर रोष॥
हंसि बोले दशमौलि तब, कपि कर बड़ गुण एक।
जो प्रति पालै तासु हित, करै उपाय अनेक॥

चौपाई।

धन्य कीश जो निज प्रभु काजा। जहँ तहँ नाचहिं परिहरि लाजा॥
नाचि कूदि करि लोग रिझाई। पति हित करत कर्म निपुणाई॥
मैं गुण ग्राहक परम सुजाना। तव कटु बचन करौं नहिं काना॥
कह कपि तव गुण ग्राहकताई। सत्य पवन सुत मोहिं सुनाई॥
बन बिध्वंसि सुत बधि पुर जारा। तदपि न तेहिं कछु कृत अपकारा॥
सोइ बिचारि तव प्रकृति सुहाई। दशकन्धर मैं कीन्ह ढिठाई॥
देखेउं आइ जो कछु कपि भाषा। तुम्हरे लाज न रोष न माषा॥

दोहा।

वक्र उक्ति धनु बचन शर, हृदय दह्यो रिपु कीश।
प्रति उत्तर गड़ांसि मनो, काढ़त भट दशशीश॥

चौपाई।

जो अस मति पितु खायहु कीशा। कहि अस वचन हँसा दशशीशा॥
पितहिं खाइ खातेउँ अब तोहीं। अबहीं समुझि परा कछु मोहीं॥
बालि बिमल यश भाजन जानी। हतौं न तोहिं अधम अभिमानी॥
कहु रावण रावण जग केते। मैं निज-श्रवण सुने सुन लेते॥
बलि जीतन एक गयेउ पताला। राखा बाँधि शिशुन हय शाला॥
खेलहिं बालक मारहिं, जाई। दया लागि बलि दीन्ह छुड़ाई॥
एक बहोरि सहस भुज देखा। धाइ धरा जनु जन्तु बिशेखा॥
कौतुक लागि भवन लै आया। सो पुलस्त्य मुनि जाइ छुड़ाया॥

दोहा।

एक कहत मोहिं सकुच अति, रहा बालि की काँख।
तिन महँ रावण कवन तैं, सत्य कहहु तजि माख॥

---

अशोका=निडर। कर्ष=रोष। युगल=दोनों। भ्रमाई=घुमाकर। निशिचर=राक्षस। निकर=झुंड। कंज=कमल। पुंज=समूह। दशशीश=रावण। कीश=बन्दर। कुंजरहिं=हाथी रूपी। विटप=वृक्ष। शृंग=पहाड़ की चोटी। पंचानन=सिंह। दशन=दाँत। जनक सुता=सीताजी। प्रणत पाल=शरणागत के पालन करने वाले। आरत=दुखी। मनन=मथि। घालक=नाश करने वाला। बिदर=फट जाना। भगिनी=बहिन। जलधि=[illegible]। विपुल=बहुत। नभ=आकाश। सर=तालाब। मराल=हंस। कूल=किनारे। द्रुम=वृक्ष। भीरु=कायर। मम=मद। [illegible]=[illegible]। [illegible]। निशिचर नाह=रावण। [illegible]=धोखा। सुभट=योधा। [illegible]। कौतुक [illegible]। मृगपति=सिंह। बध=मार डालना। पवन सुत=हनुमान। [illegible] उखाड़ दिया। [illegible]। [illegible]। [illegible]। [illegible]। [illegible]। शिशुन=बालकों। [illegible]। [illegible]॥

# पाठ १५

## कौआ और हंस ।

पक्षियों में जैसा हंस प्रसिद्ध है सो किसी से छिपा नहीं । उस के दूध और पानी के अलग करने की और मोती के आधार से रहने की प्रशंसा जगत में प्रसिद्ध है। उस की प्रशंसा सुन और पक्षी तो प्रसन्न होते थे, कि भला हम पक्षियों में कोई ऐसा भी है, कि जिसे बड़े २ महाराजाधिराज भी अपने पास रखना चाहते हैं, पर कौआ यह सुन भीतर ही भीतर जला करता था। उस से कहां किसी की प्रशंसा सुनी जाय । बस जब तोता मैना आदि हंस की प्रशंसा करें, तभी कौआ अपनी काली आंख से इधर उधर देख कां कां करने लगा और हंस में दोष निकालने लगा। और पक्षी इसे मन जाने पाला बाहर भीतर का मलीन समझ कुछ भी नहीं बोलते थे, पर यह मूर्ख समझता था कि मेरी बात का उत्तर ही नहीं है, मैं इन सभों में श्रेष्ठ हूं।

दैव संयोग किसी दिन उन पक्षियों की मंडली में एक हंस आया। उस की मनोहर मूर्ति, मधुर बोली और सुन्दर गति देख, सब पक्षी प्रसन्न होगये और उस से बात चीत कर अपने को धन्य समझने लगे । इतने में डाह से जला भुना कौआ भी फुदकता फुदकता सामने आया और चोंच घुमा काली आंख मटेर कर बोला, कि आप की आकाश में उड़ने

हंस ने कहा मेरी तो एक सरल गति है

कोई गति है। कि केवल सरल ही है

। कौआ फुदक फुदक कर

लगा। हंस ने धीरे से पूछा, अच्छा आप कहें आप की कौन २ गति हैं। कौआ अभिमान से फू फफाल कर चोंचले से बोला कि मेरी गति ? मेरी गति ! मेरी सैकड़ों गति हैं। हंस ने कहा भला कुछ नाम तो सुनाओ। कौआ बोला सुनिये ? मेरी गति हैं कुदर्की, फुदकी, झपट्टी, पलट्टी, घुमन्ती, फुमन्ती, सरपट्टी, फड़फट्टी, घिसट्टी, फिसट्टी, इत्यादि। यों कहकर कौआ उछलने लगा। हंस उस की तुच्छता देख चुप रह गया। फिर कौआ पूंछ हिला पंखों में चोंच खरखराकर बोला, कि पूरी यात्रा कैसे करते होंगे ? हंस ने समझा कि इस मूर्ख के कौन मुंह लगे, चुप हो रहा। इतने में तोता मैना आदि बोले कि मूर्ख क्या इतना बकबक करता है ? चुप हो। तब मूर्ख शब्द सुन कौआ भीतर ही भीतर भस्म हो गया। यहां से झट अपने मेली उल्लू और बड़े २ गिद्धों के पास पहुंचा और बोला कि मेरी लाज आप के हाथ है। उन्होंने कहा क्या ? तो कौए ने अपना सब से रोना रो सुनाया, कि देखिये जिस की हम लोगों कैसी कांकां, चींची, घेंघें, बोली नहीं, जिस को हम लोगों का सा फड़ फड़ाना आता नहीं और जो घोंघे और मल का स्वाद न जाने वह हंस आज हम लोगों में श्रेष्ठ गिना जाता है। धिक्! जिस का केवल मोती का खाना जिस का पानी छोड़ दूध का पीना और जिस का धीरे २ नकिया से बोलना उस के देखने को सहस्रों पक्षी इकट्ठे होते हैं। तब उल्लुओं ने उस के आंसू पोंछे और बार २ समझा कर कहा, चिन्ता नहीं तुम हो सो तुम्हीं हो, तुम्हारी क्या बात है। तब कौआ फूफफाल सारस, कोकिल आदि के मंडल में आ, गर्व से बोला चिन्ता नहीं, हम उड़ना

जाने, यह तो दूध पानी अलग करने वाला है। अब मैं
प[illegible] उड़ना दिखलाऊंगा। अभी सब उड़नेवाले आँखों के अन्धे
[illegible]रहे हैं, पर उस दिन समझेंगे कि उड़ना क्या कहलाता है।
[illegible] लोग समझते हैं कि उड़ना पक्षियों ही का होता है, पर
[illegible] यह उड़ना है कि कोई ढंग मेंढक के उछलने का, कोई
[illegible]वल्ली की झपट का, कोई मूसे के भागने का इत्यादि कभी
[illegible]खियेगा। पक्षियों ने कहा कि आप बुद्धिमान हैं। आप ठीक
ही कहते हैं, आप ऐसे ही हैं। अब जब हंस उड़ें तब आप भी
साथ उड़ियेगा बस संसार जान जायगा, कि आप की कैसी
चाल है। कौए ने स्वीकार किया।

एक दिन हंस की इच्छा हुई कि अब दूसरे द्वीप की भी
हवा खायें। यह विचार समुद्र के किनारे के एक पहाड़ पर
से हंस उड़ा, उस समय सहस्रों पक्षी उस की मन मोहनी
सरस्रा गति देखने को इकट्ठे थे। उसी समय एक ओर से कां कां
कर कौआ भी संग हुआ और बोला अच्छा आज मैं भी आप
को अपना उड़ना दिखलाता हूं और आप भी मुझे दिखाइये,
और ये लोग भी देखें, आप कैसी कैसी उड़ान मारते हैं। हंस
ने कहा भैया चलो हमारी तो सीधी चाल है।

हंस ने तो जो एक बेर पर पसारे, सो सपाटे से सीधा
चल पड़ा, कहीं डोल डाल का नाम नहीं। और कौआ कभी
पट पट कर हंस के ऊपर चला जाता, कभी लटपटाकर नीचे
आ जाता, कभी झोंक मार आगे बढ़ जाता और कभी बटपटा-
कर पचटी मार पीछे फिरता नचने से घबने लगा। यों चलते २
कुछ देर में कौए की सब चालें पूरी हो गई, तब कौए ने फिर

कर हंस की ओर देखा, तो उस ने जो एक बेर पंख पसारे हैं सो न कहीं से हिलता है, न पेंठता है, न डैन भपभपाता है, न कहीं से फरफराता है, पर सीधा झोक से चला जाता है, जैसे किसी ने उसे फेंका हो, अथवा तार में बांध कर खींचा हो। इतने में तो देखा कि हंस ने एक बेर कुछ पंख हिला दिये, इतने ही में दूना वेग बढ़ गया और ज्यों का त्यों पंख फैलाये हंस दूने सन्नाटे से चला।

तब तो कौआ घबराया, पर करे क्या! मारे लाज के कुछ न बोला और आप भी कांख कूख कर पंख फटफटाता, उस के साथ २ चला। बस थोड़ी ही देर में कौए का सांस फूल गया, नसें ढीली होगईं और आंखें चकराने लगीं, तब कौए ने घबराये सुर से कहा, कि हंस जी फिरो, बहुत हुआ कितनी दूर चलोगे? हंस ने कहा वाह! अभी तो आरम्भ ही हुआ है, मैंने शीघ्र चलने का तो अभी नाम भी नहीं लिया। तुम्हारी चाल देखने को धीरे २ चलता था अब शीघ्र चलके दिनभर ऐसा ही आकाश में बितावेंगे फिर सांझ को जहां जाना है वहां पहुंचेंगे। यह सुनते ही बिचारे कौए के प्राण सूख गये और लटपटाकर हांफता हुआ उसी समुद्र में गिरने लगा, तब गिरता चिचियाकर बोला रक्षा करो, रक्षा करो, मरा मरा। उस की यह दशा देख हंस को दया आगई। तब हंस ने झुक कर अपने चंगुल से उसे थाम लिया और वहां से फिर उसी तट की ओर लौटना आरम्भ किया। थोड़ी दूर चलके कौए से कहा कि देख अब वह सामने ही तट है चला जाय तो मैं तुझे छोड़ दूं और अपने पथ से जाऊं। पर कौए ने रोकर नहीं [illegible]

बाप! अब मुझ में कुछ भी शक्ति नहीं है, आज इतना उड़ा हूं कि दो तीन दिन तक न उड़ सकूंगा। क्षमा कीजियेगा मुझे तट तक पहुंचा दीजिये और प्राण रक्षा कीजिये। यह सुन हंस उसी सरल गति से झट पट तीर पर आ पहुंचा और कौए को एक वृक्ष की डार पर रक्खा, पर यह कौआ इतना मूर्छित सा होगया था कि भद से नीचे गिर पड़ा। इतने में सहस्रों पक्षी हंस पड़े और कौए की मूर्खता पर ही ही करने लगे, तथा हंस की प्रशंसा घर घर फैल गई। उस दिन से पीछे कौआ किसी के आगे मुंह दिखाने योग्य भी न रहा। सो किसी की प्रशंसा पर जलना और अपना झूठा अभिमान करना यह नीचों का काम है, ऐसा भूल के भी न करना चाहिये॥

## पाठ १६

### अकबर शाह।

भारतवर्ष के मुसलमान बादशाहों में मुग़ल वंश के बादशाह सब से पीछे हुए, परन्तु इतिहास में यह वंश प्रथम स्थान पाने के योग्य है। किसी वंश के हस्तगत इतना विस्तृत राज्य न था। किसी वंश ने बराबर इतने बहुत समय तक राज्य न किया। किसी वंश के बादशाहों का ऐसा अच्छा प्रबन्ध न था और न किसी वंश के बादशाहों के पास इतना द्रव्य था। मुग़ल वंश के बादशाहों की आज्ञा काबुल कश्मीर पंजाब राजपूताना बंगाल आदि विन्ध्याचल पर्वत के उत्तर के देशों में और दक्षिण के कितनेक देशों में भी भली प्रकार मानी जाती थी। इस वंश ने २०० वर्ष तक बड़ी धूम धाम से राज्य किया और

ताज महल जामा मसजिद आदि बड़े २ शिल्पकारी के कामों में करोड़ों रुपये लगाये। इस वंश को ऐसे महत्व पर पहुंचाने वाला और इस को ऐसा प्रसिद्ध करने वाला अकबर बादशाह था। बाबर ने १५२६ ई० में आगरे के आस पास का देश विजय करके अपने राज्य को प्रख्यात करना आरम्भ किया। परन्तु उस के पुत्र हुमायूं के हाथ से सारा राज जाता रहा और शेरशाह जो एक अफ़ग़ान सर्दार था वह बादशाह होगया। अन्त में निराश होकर हुमायूं को ईरान की ओर फिरा होना पड़ा। परन्तु मार्ग में अमरकोट नगर में उस के वह पुत्र उत्पन्न हुआ, कि जो भारत वर्ष के इतिहास में सब से अधिक प्रतापी बादशाह होने वाला था। हुमायूं १५ वर्ष तक ईरान में रहा और अकबर भी साथ ही में था। विपत्ति की शिक्षा मनुष्य के लिये ऐसी लाभदायक है और ऐसे २ श्रेष्ठ गुण उत्पन्न करती है, कि बहुधा जगत में बड़े २ कार्य उन्हीं लोगों से होते हैं कि जिन की बाल्यावस्था विपत्ति के सहन करने में व्यतीत हुई हो। १५ वर्ष तक इस अवस्था में रहने के कारण से अकबर में भी वे गुण आगये, कि जिन की सहायता से उस ने अपने को सारे जगत में विख्यात किया। ईरान से हुमायूं सेना लेकर १५ वर्ष के पीछे हिन्दुस्तान में फिर आया और शत्रुओं को पराजय करके उस ने अपना राज्य स्थापन किया। परन्तु थोड़े ही दिनों में इस का देहान्त होगया और अकबर को राज्य के गुरुतर कार्य के करने में केवल १३ वर्ष की अवस्था में ही कटिबद्ध होना पड़ा। इस समय तक भी बहरामखां कि जिस को अकबर की सरपरस्ती दी गई, राज्य का प्रबन्ध करता

रहा। परन्तु अकबर उस से विमुख होगया कि जिस में बहराम के हाथों से सब अधिकार छीन लिया गया। इस तरुण अवस्था में बहुत बड़े राज पर शासन करना, कि जिस राज्य में अनेक द्रोही हों और सकल प्रजा अपने स्वामी की भलाई में तत्पर न हो सहज नहीं है परन्तु अकबर के लिये यह बात अतीव सहज थी। उस ने केवल अपने पिता के विजय किये हुए राज्य पर ही अच्छी हुकूमत नहीं की, वरन उस राज को बहुत विस्तृत किया और उस की जड़ ऐसी दृढ़ की, कि उस के पुत्र पौत्रादि अच्छे गुणवान नहीं होते हुए भी बहुत वर्षों तक बादशाह बने रहे। उस की बुद्धि बहुत तीक्ष्ण थी, श्रम बहुत उठा सक्ता था, शूर वीर था, अपनी प्रजा का आदर करने को अपना धर्म्म समझता था और अपने मत का बहुत पक्षपात न करता था। यही गुण थे कि जिन के कारण से भारतवर्ष के मुसलमान बादशाहों में यह सब से अधिक प्रशंसा पाने योग्य हुआ। २६ वर्ष की अवस्था में उस ने राजपूताने के महाराजाओं को अपने तावे कर लिया और धीरे २ दूसरे देशों में भी अपना अधिकार फैला दिया दूसरे मुसलमान बादशाहों की नाई उस ने हिन्दू प्रजा पर अन्याय की दृष्टि नहीं डाली। उस के लिये जैसा हिन्दू था वैसे [1] मुसलमान। हिन्दुओं को उस ने राज के बड़े २ उहदों पर नियत किया और वह कर कि जो मुसलमान बादशाह अपनी हिन्दू प्रजा से लिया करते थे, उस ने वेसा बन्द कर दिया। ऐसे राजा पर प्रजा का प्रेम क्यों न बढ़े? राजपूत लोग इस के हित के लिये बड़े हर्ष के साथ युद्ध में अपने प्राण तजने

सन्देह होता है कि विष खाकर मरा है, तो डाक्टर लोग इसी विद्या से * आमाशय की वस्तुओं में से विष को अलग करके बतला देते हैं, कि अमुक प्रकार का विष है, जो इस मनुष्य ने खाया था। कोई चीज़ें ऐसी हैं जिन के मिलाने से विष और वस्तुओं से अलग होता है और कोई २ वस्तुएं ऐसी हैं, जिन के मिलाने से विष के भाग जो इधर उधर होते हैं वे सब इकट्ठे होकर एक जगह हो जाते हैं। इस से डाक्टर लोग विष को अलग करके मालूम कर लेते हैं। कोई २ देशी वैद्य मूत्र का रंग शीशी में देख कर रोग की पहिचान करते हैं। परन्तु डाक्टर लोग मूत्र में तेज़ाब मिलाकर, उस के भागों को अलग २ करके जान लेते हैं, कि मूत्र में किस वस्तु की अधिकता होगई है और तन्दुरुस्त मनुष्य के मूत्र की अपेक्षा इस में क्या अन्तर है। यह कुल हाल जानकर उनको रोग की पहिचान में केवल रंग देखने की अपेक्षा बहुत सहायता मिलती है इस विद्या से बहुत वस्तुएं बनी हैं, जिस से संसार के मनुष्यों को अनेक प्रकार के सुख, लाभ प्राप्त हुए। तार बर्क़ी इसी विद्या की एक शाख है बन्दूक़ की टोपियां और लड़कों के वास्ते उसी मसाले से जिस की टोपियां बनती हैं पटाखे और दियासलाई सब रसायन के ज्ञान से बनाये गये हैं। मुलम्मा करने की रीति इस के द्वारा जानी गई है। मुलम्मा करने में एक और पानी के अंदर जिस में तेज़ाब और मसाला मिला होता है, चांदी या सोने का टुकड़ा तांबे के तार में लटकाया जाता है और उसी तार के दूसरे सिरे

* पेट में एक थैली सी होती है जो कुछ खाया जाता है उसी में जाकर पड़ता है उसे आमाशय कहते हैं।

में यह वस्तु जिस पर मुलम्मा करना होता है लटका दी जाती है और यह भी तेज़ाब के भीतर डूबी रहती है। चांदी या सोना तेज़ाब के बल से गल २ कर, तार के मार्ग दूसरी ओर के सिरे पर आकर उस वस्तु पर चढ़ता जाता है और थोड़ी देर में मुलम्मा होजाता है । इस के देखने से यह अद्भुत चरित्र मालूम होते हैं, कि तांबे का तार जो पानी के बाहर रहता है ज्यों का त्यों रहता है और उस के मार्ग चांदी या सोना गला हुआ दूसरी ओर चला जाता है और दृष्टि नहीं आता, केवल तार के छोरों पर चांदी या सोना थोड़ा सा लग जाता है। फ़ोटोग्राफ़ी के मसाले जो बड़े आश्चर्य के हैं, इसी रसायन विद्या से निकले हैं। जिस मनुष्य या किसी वस्तु का चित्र बनाना होता है, उस के सन्मुख छोटे से सन्दूक में जिस में एक छिद्र होता है, उस में दर्पण रखते हैं. इस दर्पण में उस मनुष्य या वस्तु का प्रतिबिम्ब पड़ता है और वह प्रतिबिम्ब मसाले के गुण से शीशे पर जम जाता है, फिर रंग और मसाला देकर दर्पण से काग़ज़ पर उस चित्र को छापा की भांति उतार लेते हैं। इस विद्या से खेती में बहुत उन्नति हुई है। बहुतसी वस्तुओं में ऐसे गुण जाने गये हैं, जिन से भूमि की शक्ति और उपज बढ़ जाती है और बुरी भूमि खेती करने योग्य होजाती है।

## पाठ १८

### वनस्पति।

पृथ्वी का ऊपरी भाग जो सूखा है, उस का अधिक भाग वनस्पति से घिरा हुआ है। इस वनस्पति के बड़े समुदाय

को संस्कृत में अरण्य और प्राकृतिक भाषा में जंगल कहते हैं। उष्ण कटिबन्ध में वनस्पति बड़ी २ होती है और शीत कटिबन्ध में उष्णता के प्रमाण से छोटी २ होती है। इस वनस्पति के अनेक उपयोग हैं। उन में से कुछ नीचे लिखे जाते हैं।

(१) पहाड़ों पर के जंगलों के कारण वर्षा के पानी के प्रवाह की शक्ति कम हो जाती है। जो यह कम न होती, तो उन पर के छोटे २ पत्थर पानी के साथ बहकर, खेतों में आजाते, जिन से खेती के काम में बहुत हानि होती। यह हानि जंगलों के कारण टल जाती है। और पहाड़ों पर के वृक्षों के शेष पदार्थ जल के प्रवाह के साथ नीचे बहकर, आते हैं और खेती को अच्छा खाद का काम देते हैं।

(२) वनस्पतियों की बड़ी २ जड़ों की आड़ से वर्षा का पानी ज़मीन पर धीरे २ बहने लगता है, जिस से उस को ज़मीन में धीरे २ प्रवेश करने का अच्छा अवकाश मिलता है और वृक्षों की जड़ों के कारण यह पानी ज़मीन में गहरा २ जाता है, इसी कारण से बड़े २ नदियों के उद्गमों की उत्पत्ति होती है। बहुधा सब बड़ी २ नदियों के उद्गम पर्वतों की गहरी गुहाओं ही में होते हैं। इस का कारण यही है कि एक प्रकार से वनस्पतियों की जड़ें इन नदियों के पानी को इकट्ठा करने के लिये छोटी २ टाँकियाँ हैं।

(३) वनस्पतियों के पोषण के लिये सूर्य की उष्णता अति आवश्यक है। वनस्पति जितनी बड़ी होती है, उस के अनुसार उस को उष्णता की अधिक आवश्यकता होती है। उष्णता के कम होने से इसी मध्यम और मनुष्यों को सुखकारी होती है।

सहारा सरीखे उजाड़ जंगली प्रदेश में मनुष्यों से नहीं रहा जाता। इस का कारण यह है कि यहां उष्णता अधिक है। यहां की उष्णता कम होने के लिये यहां पर बनस्पति नहीं है।

(४) सपाट प्रदेशों में जंगल होने से उन की छाया के कारण ज़मीन खूब तर रहती है। उष्णता से सूख नहीं जाती, जिस से ज़मीन में कस रहता है, जो खेती के काम में बहुत उपयोगी होता है।

(५) श्वास लेने और चीज़ों के जलने और इन के सिवाय कुछ और कारणों से, हवा में कारबोनिक आसिड नाम की हानि कारक हवा उत्पन्न होती है, यह मनुष्यों और दूसरे प्राणियों को अति घातक होती है। उस वायु के खींचने की शक्ति, बनस्पति में होती है, इतना ही नहीं परन्‍ उस वायु से बनस्पतियों के पोषण होने की योजना परमेश्वर ने कर रक्खी है। इस योजना से बनस्पतियां प्राणियों के लिये अति सुख पहुंचाती हैं और कारबोनिक आसिड गास का पृथकरण करती हैं अर्थात् वे उस में की कारबोनिक खींच लेती है और शेष रहा हुआ आक्सिजन बाहर रहने देती हैं, वह फिर प्राणियों के उपयोग में आता है। परमेश्वर ने बनस्पति और मनुष्यों के सुख का ऐसा सम्बन्ध एक दूसरे से लगा दिया है, अर्थात् जहां २ जंगल हैं वहां २ मनुष्यों के रहने के लिये जगह है, ऐसा कर रक्खा है।

(६) बनस्पतियों के कारण हवा शान्त रहती है, इस तरह से हवा में जो फेर बदल होता है, उस का मुख्य कारण सूर्य की उष्णता है। उष्णता बहुत बढ़ने से हवा पतली होकर

ऊपर जाती है और उस की जगह इधर उधर की हवा आती है। उसी को हवा का चलना कहते हैं और वह बहुत तेज़ होने से आंधी कहलाती है। उस का निवारण वनस्पतियों के कारण बहुत होता है। वह ऐसा कि अतिशय उष्णता जो होती है उसे वनस्पति सोख लेती है, उस का शोषण होने से हवा में गड़बड़ नहीं होती हवा शान्त रहती है।

(७) हवा में तरी रहने के लिये वनस्पति बहुत काम में आती है। वनस्पतियां जो पानी अपनी जड़ों से खींच लेती हैं, वह सब उन के जीवन के लिये नहीं लगता। उस में से बहुत सा बाक़ी रहता है। वह बाक़ी रहा हुआ पानी वनस्पतियों के शरीर द्वारा और विशेष कर पत्तों पर पसीने या गीलापन आने से बाहर निकल जाता है। उस की भाप हवा में मिलती है, इस कारण हवा में ठंढापन रहता है। मक्का के वृक्ष के योग से उस के स्वतः के बोझ से छत्तीस गुणा पानी इस तरह से भाप के रूप से हवा में मिलता है, ऐसा अनुमान निकाला है। इस पर से सब वनस्पतियों के कारण से कितना पानी हवा में मिलता होगा, इस का अनुमान करना चाहिये। यह महा यंत्र हवा ठंढी करने का एकसा चलता रहता है, इस कारण उष्ण प्रदेश में मनुष्य को रहना सुलभ हुआ है, नहीं तो सर्व उष्ण देश उजाड़ रहते।

(८) वनस्पति से खेतों का जो बहुत उपयोग होता है, वह खाद का मिलना है। वृक्षों के पत्ते और पतझीर टहनियां सूख कर ज़मीन पर पड़ती हैं और उन पर बरसात का पानी पड़ने से वे सड़ती हैं। उन का उत्तम खाद बनकर, खेतों के लिये

बहुत लाभ पहुंचाता है। ऐसा खाद प्रति वर्ष बहुत उत्पन्न होता है। परन्तु इस का अनुमान किसी को नहीं होता। पर्वतों पर के कितने वृक्षों के कितने पत्ते सूखकर और सड़कर, जल के प्रवाह के साथ नीचे खेतों में आते हैं, इन की गिन्ती मनुष्य से होना कठिन है, तो भी शोधकों ने ऐसा कहा है, कि आम के एक वृक्ष से १,८०,००० के लग भग पत्ते गलकर, नीचे पड़ते हैं और उन से तीस चालीस सेर उत्तम खाद उत्पन्न होता है। ऐसा बहुत सा खाद खेतों को तैयार मिलता है।

(६) इन बातों की सत्यता की दृढ़ता होने के लिये उस के उलटे कुछ प्रमाण हैं। जहां बनस्पति बहुत नहीं होती हैं वहां बर्सात नहीं होती। सहारा मैदान में पानी नहीं पड़ता, और जंगलों के निकाल डालने से वहां पनी नहीं बरसता। इटली देश के अपीनाइन पहाड़ पर के जंगल निकाल डालने से वहां की हवा में उष्णता बहुत बढ़गई, जिस से एक विषैली वायु उत्पन्न होकर, उस से पो नदी के किनारे पर के बड़े २ ग्रामों के बागों का नाश होगया और अब भी वहां पहिले कीसी अच्छी हवा नहीं है और वे स्थान पहिले के से रम्य नहीं हैं। फ्रान्स देश में भी ऐसा हुआ है। मारीशस टापू में भी कई साल तक ऐसा चला था, कि वहां के जंगलों को काटकर, वहां पर ईख पैदा की जावे। इस कारण वहां की हवा बहुत खराब [illegible] का कस कम होगया और उस से वहां अब [illegible] होती है।

[illegible] स्पति का उपयोग कितना है, यह साधा- [illegible] वेगा। इस के सिवाय बहुत से प्राणी

वनस्पति खाकर रहते हैं। मनुष्य लकड़ी से घर और भांति २ के सामान बनाते हैं, उस से हर तरह की औषधें तैयार करते हैं उन औषधों से रोग का निवारण होता है, रंग बरंग के फूल उत्पन्न होते हैं, जिन के देखने से नेत्रों को सुख मिलता है और अनेक प्रकार के सुगन्धित पदार्थ तैयार होते हैं। उन से घ्राणेन्द्रिय को सन्तोष होता है। मनुष्यों की लाज रखने और शीतोष्ण निवारण करने के लिये, जो उत्तम साधन वस्त्र है वह वनस्पति से होता है। मनुष्यों के रहने के लिये घर, खाने को अन्न और ओढ़ने को वस्त्र ये सब वनस्पति से मिलते हैं। अधिक क्या लिखें यह जो कागज़ अपने हाथ में है यह भी वनस्पति से बना है और जिस सूत से यह कागज़ सिला है वह भी वनस्पति से लिया है॥

## पाठ १९

### गिरधर की कुंडलिया।

बेटा जीउते अधिक है चारिउ युग परिनाम।
सो दशरथ नृप परिहरेउ वचन न दीन्हौ जान॥
वचन न दीन्हों जान बड़न की बूझि बड़ाई।
बात रहे सो काज और बरु सरबस जाई॥
कह गिरिधर कविराय बात दशरथ नहिं मेटा।
प्रान परिहरे आप विपिन भई भेजे बेटा॥ १॥
कौड़ी मोति बड़ेन सों समता आवै पार।
कायर कूर कुपूत है कोरि देत अंक पार॥

बोरि देत मंझ धार प्रीति की कथन बड़ाई ।
पछिताने फिरि देहिं जगत में अपयश पाई ॥
कह गिरिधर कविराय प्रीति सांची सिखि लीजे ।
व्यवहारी जो होय प्रीति तन मन शुभि कीजे ॥
राजा के दरबार में जैये समयो पाय ।
साईं तहां न बैठिये जहं कोउ देय उठाय ॥
जहं कोउ देय उठाय बोल अनबोले रहिये ।
हंसिये ना हहराय बात पूंछे ते कहिये ॥
कह गिरिधर कविराय समय सों कीजे काजा ।
अति आतुर नहिं होय बहुरि अनखैहै राजा ॥ ३ ॥
साईं सन मद दुष्ट जन इन को यहै सुभाय ।
काज सिधावैं आपनो पर बन्धन के दाय ॥
पर बन्धन के दाव काज अपनो सिधवावैं ॥
मूड़ काटि कूटिये तऊ पै बाज न आवैं ॥
कह गि
अब में

पे राजा हरिश्चन्द करै मरघट रखवारी।
फिरै तपस्वी वेष बड़े अर्जुन बल धारी॥
कह गिरिधर कविराय रसोई भीम बनाई।
को न करै घटि काम परे अवसर के साँई॥ ६॥
हिरना फिरकेड़ सिंह से औफर खुरी चलाय।
मार अगड़ झीनो परयो सिंहा चले पराय॥
सिंहा चले पराय समय समरत्थ बिचारी।
कुलिहि कालिया लाइ हँसे हांसि के पग धारी॥
कह गिरिधर कविराय सुनो हो मेरे अरना।
आंजु गई करि जाय सकारे मैं की हरना॥ ७॥
वैरी बँधुआ बानिया ज्वारी चोर लबार।
बिभचारी रोगी ऋणी नगर नारि को यार॥
नगर नारि को यार भूलि परतीत न कीजै।
सौ सौ सौहैं खाइ चित्त पकी नहिं दीजै॥
कह गिरिधर कविराय यहै आवै अनगैरी।
हित की कहै बनाय जानिये पूरी बैरी॥ ८॥
जाकी धन धरती हरै ताहि न लीजै संग।
जो संग राखै ही बनै तो करि डार अपंग॥
तो करि डारै अपंग फेर फरकै सो न कीजै।
कपट रूप बतराय तासु को मन हरलीजै॥
कह गिरिधर कविराय खुटक जैहै नहिं याकी।
कोटि दिलासा देउ हरी धन धरती जाकी॥ ९॥
धोखे दाड़िम के सुआ गयो नारियल चोंच।
जस घाई पाई सजा फिर लागो पछिताय॥

फिर खागो पछितान बुद्धि अपनी को रोयो ।
निर गुनियन के पास बैठ गुन अपनो खोयो ॥
कह गिरिधर कविराय कहूं जैये नहिं ओछे ।
चोंच खटक गै टूटि सुआ दाड़िम के धोखे ॥ १० ॥
चिन्ता ज्वाल शरीर बन दावा लगि लगि जाय ।
प्रगट धुआं नहिं देखियत उर अन्तर धुंधुवाय ॥
उर अन्तर धुंधुवाय जरै ज्यों कांच की भट्टी ।
जरिगो लोहू मांस रहि गई हाड़ की टट्टी ॥
कह गिरिधर कविराय सुनो रे मेरे मिन्ता ।
वे नर कैसे जियें जाहि तन व्यापे चिन्ता ॥ ११ ॥

## पाठ २०

### कशमीर ।

कशमीर हिन्दुस्तान की उत्तर पश्चिम सीमा है । इस के उत्तर पूर्व की ओर चीन का राज्य है, पश्चिम की ओर अफ़गा-

---

पछितान=पाछी, पछता । बरु=चाहे । दिविन=तब । कठुर=खारी करना । कहुरि=फिर । अरबैं=अप्रसन्न होना, नाराज़ होना । इत=भी दरबार दो न माने । ... =... । ... । ... । ... । ... । ... । ... । ... । ... । ... । ... । ... । ... । ... । ... । ... । ... । ... । मिन्ता=मित्र ॥

यह ऐसा भूभाग है, जो सदा जलता रहता है। मालूम होता है, कि इस के नीचे गन्धक हरताल आदि कई चीज़ों की खानि है। कश्मीर सौन्दर्य के लिये प्रसिद्ध है। कश्मीर सदा से विद्या की प्रधान भूमि प्रसिद्ध है। सब विषय के पंडित यहां हुए हैं। व्याकरण और साहित्य के जैसे विद्वान यहां हुए हैं, वैसे हिन्दुस्तान के और प्रान्तों में कम हुए हैं। कैयट मंमट क्षेमेन्द्र कल्हण विल्हण दामोदर प्रभृति अनेक विद्वान और कवि सब यहीं हुए हैं। शाल दुशाले जैसे यहां बनते हैं, वैसे दुनियां के किसी भाग में नहीं बनते। यहां की आब हवा का कुछ ऐसा असर है, कि वेही कारीगर दूसरी जगह जाकर जो शाल बुनेंगे, वह क़ीमत में वैसा न होगा, जैसा ख़ास कश्मीर में तैयार होता है। किसी समय यहीं सोलह हज़ार दूकानें शाल बुनने वालों की थीं, अब बहुत कम रह गई हैं। पशमीना जिस से शाल बुना जाता है तिब्बत से आता है। छोटी २ लम्बे बाल वाली बकरियां जिन के बदन पर पशमीना होता है, सिवाय तिब्बत के और कहीं नहीं पैदा होतीं। यहां पर केशर साल भर में सत्तर अस्सी मन पैदा होती है। यहां की धरती समुद्र की सतह से ५२०० फ़ीट ऊंची है। बर्फ़ के बीच यहां "ग्लेशियर्स" अर्थात बर्फ़ वाली नदियां कई एक हैं, एक उन में से १२ मील लम्बी बही है। कश्मीर के दक्षिण ओर के पहाड़ ऐसे ऊंचे नहीं हैं, जैसे उत्तर की ओर के पहाड़ की कोई २ चोटी २८००० फ़ीट से भी अधिक ऊंची हैं। झीलों की बहुतायत से यहां चावल बहुत पैदा होता है। तीन चौथाई चावल की उपज है, बाक़ी में और अन्न गेहूं आदि उपजते हैं। अन्नों

पर मिट्टी पाट ककड़ी खीरा तर्बूज़ आदि बहुत पैदा होते हैं और वे तख्ते नदी और झीलों पर तैरते रहते हैं। झीलों में सिंघाड़े बहुत उपजते हैं। जंगलों में बड़े क़ीमती शहतीर होते हैं। राज्य भर में १३ जुदी २ भाषाएं बोली जाती हैं। वितस्ता नदी के किनारे श्रीनगर राजधानी सन् ६१ में १२०००० आदमियों की बस्ती थी। ५ मील की लम्बाई में शहर बसा है घर सब काठ के तीन खंड के कोई चार खंड के भी हैं। समुद्र की सतह से ५५०० फ़ीट की ऊंचाई पर यह शहर नदी के दोनों किनारों पर बसता है, मकान इस तरह पर बने हैं कि लोग खिड़की और बरामदों में बैठे पानी खींच सके हैं। नदी का पाट १५० गज़ से अधिक चौड़ा कहीं पर नहीं है। एक पार से दूसरे पार जाने के लिये सात पुल काठ के बने हुए हैं यहां हम्माम बहुत ज़्यादा बने हुए हैं। शहर से उत्तर २५० फ़ीट ऊंचा हरी पर्वत नाम का एक छोटा सा पहाड़ है, उस पर एक छोटा सा क़िला भी बना है। समस्त संसार भर का निचोड़ काश्मीर है। काश्मीर भर का निचोड़ डल है यह डल एक प्रकार की झील निर्मल जल की अत्यन्त गहरी दस मील के घेरे में होगी, यह झील नहरों के द्वारा वितस्ता से मिली हुई है। इस के दो तरफ़ पहाड़ हैं और दो तरफ़ श्रीनगर का शहर बसा है। डल के किनारे पर बाग बहुत हैं बीच २ में टापू अंगूर के पेड़ों से भरा हुआ है। जो लोग एकान्त, स्वच्छ, सुहावने स्थान में वास करना चाहते हैं उन के लिये कश्मीर से बढ़ कर दूसरा स्थान नहीं है॥

---

# पाठ २१

## कपूर ।

कपूर का उपयोग व्यवहार में बहुत होता है। यह कहां से आता है और इसे किस तरह तैयार करते हैं। इस का हाल नीचे लिखा जाता है।

हाल में जो कपूर हम लोग काम में लाते हैं, वह सब बहुत कर, चीन और जापान से आता है। विलायती कपूर की टिकियां मिलती हैं, वे भी चीन और जापान से आये हुए कपूर की बनती हैं। जिन वृक्षों से कपूर उत्पन्न होता है, उन की बहुत जातें हैं परन्तु उन में मुख्य दो हैं। उन में से एक जाति के वृक्ष चीन और जापान के देशों में बहुत होते हैं और दूसरी जाति के वृक्ष बोर्निओ और सुमात्रा के टापुओं में होते हैं।

हम लोग जो कपूर काम में लाते हैं वह चीन और जापान के वृक्षों में से निकला हुआ है। उन वृक्षों की लकड़ी के टुकड़ों को पानी भरे हुए बर्तन में डालकर खूब उबालते हैं, जिस से कपूर भाप होकर बर्तन के ढकन की भीतरी ओर जम जात है। चीन के कपूर से जापान का कपूर बहुत अच्छा और गुर होता है।

बोर्निओ और सुमात्रा के टापुओं के वृक्षों में कपूर के टुक तैयार मिलते हैं। यहां के वैद्य ऐसा कहते हैं कि, यह कपू उष्णता से तैयार किये हुए कपूर से औषधि में विशेष गुणका होता है। परन्तु पश्चिम के डाक्टर लोग दोनों प्रकार के कपू

का गुण एकसा समझते हैं। कपूर के टुकड़ों के निकालने के लिये, लोग बोर्निओ और सुमात्रा के टापुओं के वृक्षों का बहुत नाश करते हैं। पुराने वृक्षों में यह कपूर बहुत ही मिलता है, परन्तु यहां के लोग सब ही वृक्षों का जड़ मूल से नाश करते हैं। वृक्ष बहुत ही पुराना हो,तो उस में से पांच सेर के लगभग कपूर निकलता है। यह कपूर बहुत कर उन वृक्षों की गांठ और शाखाओं की सन्धिओं के पास और कभी २ वृक्षों की भीतरी और बाहरी छाल में मिलता है, इस के टुकड़े दरारों में भरे हुए होते हैं। इस की दरारें कभी डेढ़ फ़ीट लम्बी होती हैं इस कपूर को ग्रास कपूर वा भीमसेनी कपूर अथवा शुद्ध कपूर कहते हैं। यह बहुत महंगा बिकता है। बम्बई में यह कपूर कभी २ अस्सी नब्बह रुपये रत्तल बिकता है। सादा कपूर की दरि प्रति मन चालीस रुपये से पैंसठ रुपये तक पड़ती है। ग्रास कपूर साधारण कपूर से भारी और ठोस होता है और सादा कपूर की भांति उड़ नहीं जाता।

कपूर शुद्ध करने के लिये उसे गर्मी पहुंचा कर भाप को रोक देते हैं। कपूर शुद्ध करने का काम बम्बई में कई जगह होता है, परन्तु उन कार्यालयों के शुद्ध किये हुए कपूर में पानी बहुत होता है। चीन से आया हुआ कपूर अशुद्ध और मटीला दीखता है। ऐसा कपूर बड़े पीपों के सदृश बर्तनों में रख के, उन में बहुतसा पानी भरदेते हैं और फिर उन बर्तनों को भट्टी पर रख कर, उन पर मज़बूत ढक्कन लगा देते हैं। बीच २ में उस ढक्कन पर ठंडा पानी डालते रहते हैं जिस से उस कपूर और पानी की भाप इकट्ठी होकर,उस ढक्कन के बीच सफ़ेद थर

जम जाता है यह पानी से तर होता है। उस की टिकियां बनाकर उन को केले के गीले पत्तों में लपेट कर, सन्दूकों में भर ताज़ा कपूर के नाम से बाहर देशों को भेज देते हैं। जो इन्हें कुछ देर ऐसे ही रहने देवें तो उन में का पानी उड़कर ये हलकी हो जाती हैं॥

कपूर शुद्ध करने की युक्ति यूरोप में निराली ही है। बाज़ार का अशुद्ध कपूर ले उस के टुकड़े कर डालते हैं और उस में प्रति सैकड़ा ३ से ५ भाग भिगोया हुआ चूना और प्रति सैकड़ा १ से २ भाग लोहे का चूरा मिलाकर, इस मिश्रित को पद्दी २ शीशियों में भर देते हैं। फिर इन शीशियों में गर्मी पहुंचाते हैं। इस गर्मी पहुंचाने की युक्ति भी कुछ निराली है। इस में विशेषता यह है कि उन शीशियों को अग्नि नहीं लगने देते। ऐसा करने के लिये जो भट्टी तैयार होती है, उस पर एक बर्तन रख उस में फ्यूज़िबल मेटल नाम की जल्दी से पिघलने वाली धातु डालते हैं। इस धातु में ८ भाग विस्मथ नाम की धातु और ५ भाग सीसा और ३ भाग रांग होता है। पानी औटने के लिये जितनी गर्मी की ज़रूरत होती है, उस से कम अधपात से यह धातु पिघल जाती है। जिस बर्तन में यह पदार्थ डालते हैं, उस में एक दूसरा बर्तन रेती भर कर रख देते हैं और उस रेती में उन शीशियों को गले तक ढक देते हैं। भट्टी की गर्मी से यह धातु पिघल जाती है और रेती गर्म हो जाती है, रेती को गर्मी पहुंचने से शीशियां गर्म होती हैं और उन में का मिश्रित तप जाता है। भट्टी की ——— के अनुसार न्यूनाधिक कर लेते हैं।

उस भट्टी की उष्णता सेन्टीग्रेड के १२० अंश तक कुछ देर रहने देते हैं। फिर उस को एक दम १६० अंश तक चढ़ा देते हैं और फिर उस को आध घंटे तक वैसे ही रहने देते हैं, जिस से उन शीशियों का पानी उड़ जाता है। फिर उष्णता २०४ अंश तक चढ़ा देते हैं। फिर उस को २४ घंटे तक रहने देते हैं, जिस से उन शीशियों के कपूर का पानी हो जाता है। इस तरह से कपूर का अर्क होने पर, शीशियों के गले तक जो रेती होती है, उस को हटाते जाते हैं, जिस से यह भाग ठंढा होता जाता है। ठंढा हो जाने से नीचे से पिघले हुए कपूर की भाप उस पर जम जाती है और वहां कपूर का थर जम जाता है। इस तरह से थर जमने पर, उन शीशियों को बाहर निकाल लेते हैं और उन पर पानी छिड़कते हैं, जिस से वे फूट जाती हैं और भीतर जमा हुआ कपूर का थर सहज में निकल आता है। यह थर बहुधा ३ इंच मोटा और १० से १२ इंच तक लम्बा चौड़ा होता है। इन थरों की टिकियां बनाकर डब्बों में भर कर बेचते हैं।

ऊपर लिखी हुई यूरोपियन रीति के अनुसार कपूर में जो कोई का चूरा मिलाते [illegible] कपूर के गन्धक के अंश को [illegible] लिये मिलाते हैं, कि उस [illegible] उसे [illegible] सोख लेना [illegible]

[illegible] पूर [illegible] आये [illegible] में बहुत ही

इस की उत्पत्तिका हाल चमत्कारिक है। यह एक बारीककीड़े से उत्पन्न होती है, यह कीड़ा जिस वृक्ष पर अपनी उपजीविका करता है. उस पर लाख मिलती है। ये वृक्ष कुसुम, पीपल, ढाक के होते हैं, परंतु उस कीड़े को बबूल और आम पर की हवा माफ़िक़ आजाती है तो वह कभी २ बबूल और आम के वृक्ष पर लाख तैयार करता है। ये कीड़े अन्डों से बाहर निकलने पर अच्छी हरी टहनियों पर फिरते हैं और उन में का रस चूस लेते हैं। फिर उन में एक तरह की सुस्ती आजाती है, जिस से वे एक ही स्थान पर बैठे रहते हैं। फिर उन के शरीर से राल सा कुछ पदार्थ बाहर निकलने लगता है और इस पदार्थ से उन के आस पास एक खोल तैयार हो जाती है। स्त्री जाति के कीड़ों का खोल वृत्ताकार और पुरुष जाति के कीड़ों का खोल दीर्घ वृत्ताकार होता है। इस खोल की स्थिति में ये कीड़े ढाई मास के लगभग रहते हैं। इस के बाद पुरुष जाति के कीड़े खोल को फोड़ कर बाहर निकलते हैं और स्त्री जाति के कीड़े बाहर नहीं निकलते वैसे ही रहते हैं, परन्तु वैसे रहने पर भी उन का उद्योग भीतर की ओर चलता रहता है। वह इस तरह से कि ये अपने आस पास के खोल को भीतरी ओर से मोटा करते हैं और उस में तीन छिद्र बनाकर उस में तीन नलियां बाहर निकालते हैं, ये नलियां उन के श्वास लेने के काम में उपयोगी पड़ती हैं। इतने समय में पुरुष जाति के कीड़े बाहर निकलते हैं और वे सब स्त्री जाति के खोलों पर सर्वत्र संचार करके मर जाते हैं।
[illegible] र के नीचे अन्डे देने

लगती हैं और उन अंडों को कष्ट न हो, इसलिये उन पर आच्छादन करती हैं। उन माताओं की प्रीति इतनी ही नहीं वरन् अन्डों से बच्चे निकलने तक उन को कुछ दिन तो भी अन्न मिले इसलिये उसी वृक्ष का रस और चूस कर, अपने शरीर में जमा करती हैं। उन का शरीर खूब फूल कर लाल हो जाता है इस तरह से अपने शरीर में अन्न इकट्ठा करने पर वे भी प्राण छोड़ देती हैं। फिर कुछ देर बाद ये बच्चे अन्डों से निकल कर अपनी माताओं का शरीर फोड़ते हैं और उस इकट्ठे किये हुए रस पर कुछ दिन निर्वाह करके फिर नवीन टहनियों का शोध करते हैं। इस के बाद के जीवन का नियम ऊपर लिखा ही है।

लाख के कीड़ ऊपर लिखे हुए अनुसार अपने आस पास खोल तैयार करते हैं, उस से वृक्ष की टहनियों पर पपड़ियाँ जम जाती हैं और इन पपड़ियों से लाख तैयार करते हैं। पहिले उन टहनियों को लाकर उन पर से किसी डंडे की सहायता से उस की पपड़ियां निकाल लेते हैं, फिर उन पपड़ियों को पानी में डालकर किसी बड़े बर्तन में खूब उबालते हैं, जिस से वह पानी लाल रंग का हो जाता है। उस पानी को वैसा ही दूसरे बड़े बर्तन में रख देते हैं जिस से नीचे लाल रंग का थर जम जाता है। फिर उस पानी को निकाल कर उस थर को सुखाते हैं। ये सुखाये हुए टुकड़े भट्टी पर तपाने से उन का रस तैयार होता है। उस को १० फुट लम्बी और ४ अथवा ५ इंच चौड़ी सन की थैलियों में उड़ेल कर उन थैलियों को दोनों तरफ़ से निचोड़ते हैं और उनके नीचे पत्तलें रख देते हैं। थैलियों

के निचोड़ने से जो बूंदें पत्तों पर टपकती हैं, वे फैल कर, जम जाती हैं। उन्हीं को पत्ती लाख कहते हैं इस पत्ती लाख का फिर रस कर के उस की मोटी पत्तियां बनाते हैं।

ऊपर लिखे अनुसार लाख एक प्रकार के कीड़े से उत्पन्न होती है, इस से अति गर्मी, अति ठंढ, आग लगाना इत्यादि कारणों से उन कीड़ों को नुक़सान पहुंचता है, इस से उन का संग्रह कम होता है। चीटियों से भी लाख का नुकसान होता है, ऐसा अनुभव हुआ है। क्योंकि जब चीटियों को कोई लाख से भरा हुआ वृक्ष मिलता है, तब वे उन कीड़ों के खोलों पर फिरती हैं और उन के शरीर से निकलने वाले रस को खाजाती हैं और उसी जाति के कीड़ों के खोलों से बाहर निकली हुई बारीक नलियों को काट डालती हैं। नलियों के कटने से उन का श्वास लेना बन्द हो जाता है और वे दम घुटने के कारण मर जाते हैं। इस कारण जिस वृक्ष के आस पास चीटियां होती हैं, उस में अच्छी लाख नहीं होती ऐसा सर्वत्र अनुभव है।

लाख दो तीन तरह की होती है। उत्तम जाति की लाख नारंगी रंग की होती है और वह कुसुम के वृक्ष पर मिलती है, उस का रंग १० वर्ष तक नहीं बिगड़ता। ढाक की लाख इस से कम दर्जे की होती है और पीपल की लाख सब से घटिया होती है।

लाख के अनेक उपयोग हैं उस की चूड़ियां बनती हैं और कोई वस्तु बन्दोबस्त से रखनी हो तो उस पर लाख की मुहर करते हैं। शराब के पार्क में लाख डालने से वह रस में मिल

जाती है, उस शराब को, लकड़ी की चीज़ पर ल
उस में की शराब उड़ जाती है और उस पर लाख
है, लाख के बर्तन भी इसी युक्ति से बनाते हैं॥

# पाठ २३

## परशुराम सम्वाद।

दोहा।

वामदेव ऋषि सों कह्यो, परशुराम रण धी
महादेव को धनुष यह, को तोरउ बल वीर

वामदेव वचन।

महादेव को धनुष यह, परशुराम ऋषि राज
तोरेउ रा यह कनह हीं, समझेउ रावण राज

परशुराम वचन।

अति कोमल नृप सुतन की, ग्रीवा दली अपार
अब कठोर दशकंठ के, काटहुं कंठ कुठार॥

परशुराम वचन। संयुता छन्द।

यह कौन को दल देखिये।

वामदेव वचन।

यह राम को प्रभु लेखिये।

परशुराम वचन।

कहि कौन राम न जानियो।

वामदेव वचन।

परशुराम वचन । विनय छन्द ।

ताड़िका संहारी तिय न विचारी कौन बड़ाई ताहि हने ।

वामदेव वचन ।

मारीचहु ते संग प्रबल सकल खल अरु सुबाहु काहू न गने ।
करि क्रतु रखवारी गुरु सुख कारी गौतम की तिय शुद्ध करी ।
जिन रघुकुल मंड्यो हर धनु खंड्यो सीय स्वयम्बर मांझ बरी ॥

परशुराम वचन । दोहा ।

हरहु हौं तो दंड दै, धनुष चढ़ावत कष्ट ।
देखो महिमा काल की, कियो सो नर शिशु नष्ट ॥

विजय छन्द ।

बोरौं सबै रघुवंश कुठार की धार में बारन बाजि सरत्थहि ।
बाण की बायु उड़ायकै लच्छन लक्ष करौ अरिहा समरत्थहि ।
रामहिं बाम समेत पठै बन कोप के भार में भूँजौं भरत्थहि ।
जो धनु हाथ धरै रघुनाथ तो आज अनाथ करौं दशरत्थहि ॥

सोरठा ।

राम देखि रघुनाथ, रथ ते उतरे बेगि दै ।
गहे भरत को हाथ, आवत राम बिलोकियो ॥

परशुराम वचन । दण्डक ।

अमल सजल घनश्याम वपु केशवदास
चन्द्र हू ते चारु मुख सुखमा को ग्राम है
कोमल कमल दल दीरघ बिलोचननि
सोदर समान रूप न्यारो न्यारो नाम है
बालक बिलोकियत पूरण पुरुष गुन
मेरो मन मोहियत ऐसो बड़ राम है

जाती है, उस रोगन को, लकड़ी की चीज़ पर लगाते हैं, तो उस में की शराब उड़ जाती है और उस पर लाख जम जाती है, लाख के बर्तन भी इसी युक्ति से बनाते हैं ॥

## पाठ २३

### परशुराम सम्वाद ।

दोहा ।

वामदेव ऋषि सों कह्यो, परशुराम रण धीर ।
महादेव को धनुष यह, को तोरउ बल बीर ॥

वामदेव बचन ।

महादेव को धनुष यह, परशुराम ऋषि राज ।
तोरेउ रा यह कहत हीं, समझेउ रावण राज ॥

परशुराम बचन ।

अति कोमल नृप सुतन की, ग्रीवा दली अपार ।
अब कठोर दशकंठ के, काटहुं कंठ कुठार ॥

परशुराम बचन । संयुता छन्द ।

यह कौन को दल देखिये ।

वामदेव बचन ।

यह राम को प्रभु लेखिये ।

परशुराम बचन ।

कहि कौन राम न जानियो ।

वामदेव बचन ।

शर ताड़िका जिन मारियो ॥

बाहु दै दोऊ कुठारहि केशव आपने धाम को पंथ गहो ॥

कुंडलिया।

टूटै टूटनहार तरु वायुहि दीजै न दोष।
क्यों अब हर के धनुष को हम पर कीजत रोष।
हम पर कीजत रोष काल गति जानि न जाई।
होनहार ह्वै रहै मिटै मेटी न मिटाई।
होनहार ह्वै रहै मोह मद सब को छूटै।
होय तिनूका बज्र बज्र तिनुका ह्वै टूटै॥

परशुराम बचन। विजय छन्द।

केशव हैहय राज को मांस हलाहल कौरन खाइ लियोरे।
ता लगि मेद महीपन को घृत घोरि दियो न सिरानो हियोरे।
खीर षड़ानन को मद केशव सो पल में करि पान लियो रे।
तौ लौं नहीं सुख जौ लइ तू रघुबंश को शोन सुधा न पियोरे।

भरत बचन। तंत्री छन्द।

बोलत कैसे भृगुपति सुनिये सो कहिये तन मन बनि आवो।
आदि बड़े हौ बड़प्पन राखौ जाते तुम सब जग यश पावो।
चन्दन हूं में अति तन घसिये आगि उठै यह गुण सब लीजै।
हैहय मारे नृपति संहारे सो यश लै किन युग युग जीजै॥

परशुराम बचन। नाराच छन्द।

भली कही भरत्थ तैं उठाय आग अंग तैं।
चढ़ाउ चापि चाप आप वाण लै निषंग तैं।
प्रभाउ आपनो दिखाउ छोड़ि बाल भाउ कै।
रिझाउ राजपुत्र मोहिं राम लै छुड़ाइ कै॥

बर मानि वामदेव को धनुष तोरा इन
आनत हौं बीस विधि राम बेष काम है॥

भरत बचन। गीतिका छन्द।

कुश मुद्रिका समिधैं स्रुवा कुश औ कमंडल को लिये।
कर मूल शरधन तर्कसी भृगु लात सी दरसै हिये॥
धनु बाण तिक्ष्ण कुठार केशव मेखला मृग चर्म सों।
रघुबीर को यह देखिये रस बीर सात्विक धर्म सों॥

राम बचन। नाराच छन्द।

प्रचंड है हयाधि राज दंड मान जानिये।
अखंड कीर्ति लेय भूमि देय मान मानिये॥
अदेय देव जे अभीत रक्षमान लेखिये।
अमेय तेज भर्ग भक्त भार्गवेश देखिये॥

तोमर छन्द।

सह भरत लक्ष्मण राम। बहु किये मानि प्रणाम॥
भृगुनन्द आशिष दीन। रण होहु अजय प्रवीन॥

परशुराम बचन।

सुनि रामचन्द्र कुमार। मम बचन कीर्ति उदार॥

राम बचन।

भृगवंश के अवतंस। मन पूछि है कवहि अंस॥

परशुराम बचन। मदिरा छन्द।

तोरि शरासन शंकर को शुभ सीय स्वयम्बर मांझ बरी।
ताते बढ्यो अभिमान महा मन मेरी यो नेक न शंक करी॥

राम बचन।

सो अपराध परो हम सों अब क्यों सुधरै तुम हू धौं कहौ।

सोरठा।

लियो चाप जब हाथ, तीनिहु भैयन रोष करि।
बरज्यो श्री रघुनाथ, तुम बालक जानत कहा॥

राम वचन। दोहा।

भगवन्तन को जीतिये, कबहुं न कीजे शक्ति।
जीतौ एकै बात मैं, केवल कीजे भक्ति॥

हरिगीत छन्द।

जब हन्यो हैहयराज इन बिन छत्र छिति मण्डल करयो।
गिरि बेध षण्मुख जीति तारक नन्द को जब ज्यों हरयो॥
सुत मैं न जायो राम सों यह कह्यो पर्वतनन्दिनी।
वह रेणुका तिय धन्य धरणी मैं भई जग वन्दिनी॥

परशुराम वचन। तोमर छन्द।

सुनु राम शील समुद्र।
तब बन्धु है मति क्षुद्र॥
मम बाड़वानल कोप।
अनु कियो चाहत लोप॥

शत्रुघ्न वचन। दोधक छन्द।

हौ भृगुनन्द बली जग माहीं।
राम बिदा करिये घर जाहीं॥
हौं तुम सो फिर युद्धहि मांड़ौं।
क्षत्रिय वंश को बैर लै छांड़ौं॥

[illegible] छन्द।

बड़ बात सुनौं भृगुनाथ जबै।
[illegible]

# पाठ २४

## सोलन ।

यूनान देश के सात प्रसिद्ध बुद्धिमानों में एक सोलन भी था। ईसवी सन के ६३८ पूर्व यूनान की राजधानी एथेन्स में पैदा हुआ था। एथेन्स राज्य के लिये सोलन ने क़ानून बनाये थे। जिस का क़ानून उस समय ऐसा ही माना जाता था, जैसा मनु का धर्म शास्त्र हिन्दुस्तान में माना जाता है। सोलन ने देश पर्यटन बहुत किया था और जहां २ गया वहां के आचार विचार रीति नीति के जानने में इस ने बड़ा परिश्रम किया था। अनेक देश के आचार विचार रीति व्यौहार का अच्छी तरह अभ्यास कर, तब एथेन्स राज्य के लिये व्यवस्था बनाई थी। इस कारण सोलन की व्यवस्था (क़ानून) अत्यन्त माननीय हुई। देश पर्यटन समय अनेक देशों में घूमते लीडिया के बादशाह क़ारूं से जा मिला। क़ारूं अपने ख़ज़ाने और धन सम्पति के लिये अति प्रसिद्ध है। बहुधा कहावतों में क़ारूं के ख़ज़ाने की उपमा दी जाती है। क़ारूं को अपने ख़ज़ाने के कारण बड़ा अभिमान था कि, मेरे बराबर संसार में सुखी कोई नहीं है। इसने सोलन का बड़ा सन्मान किया और

---

परशुराम। अवतंस=भूषण। मनहासि=मनोभिलाष। हलाहल=विष। मेद=चरबी। शोन=लोहू, रक्त। चाप=धनुष। निषंग=तर्कश। पर्वत नन्दिनी=पार्वती। षडानन=स्वामि कार्तिक। शोणित=रक्त, लोहू। निमद=मद। अच्छत=चावल। तन सचत=क्षत [illegible]॥

ार पीली सी होती है और मरहम आदि
: जाती है। सीसा कूटने पीटने से मिट्टी
पतला हो जाता है, पर इस का महीन
ा और गलाने से तोल कम हो जाती है।
र तक कड़ी आग में रक्खें तो इस का
ाल होकर रह जाता है और मुलायम
ा बन जाता है। साधारण कांच में तो
ा, पर उत्तम कांच में इस का भाग
ा हांडी में सिरका भर के और उस में
र रक्खें और हांडी के मुंह पर सीसे
ाप से उन पर काई सी जम जायगी।
है जो मरहम और सुरमा बनाने में
तरा रंगों के बनाने में भी उपकारी
न्ध के कारण रोग उत्पन्न होते हैं।
निकलता है, यह भी बहुत हानि
के संयोग से इस का रूप बहुत
विप का सा हो जाता है। सीसे में
हवा पानी में जिस तरह तांबा
ा है वैसा यह नहीं बिगड़ता। यह
। के लिये कम काम में लाई जाती है,
, और छूरें इसी से बनते हैं। सब से बढ़-
ो इस से बनाई जाती है वह छापे के अक्षर
ाज कल सभ्यता और उन्नति सारी पृथ्वी
ी है। इसी एक गुण के लिये यदि इसे सृष्टि

विलम्ब न करो ७ कोई ऐसी बात नहीं है जो परिश्रम से न हो सकती हो। सोलन अटिका के राज वंश में पैदा हुआ था, लेकिन इस का पिता इतना फ़िज़ूल खर्च था कि जब तक अपनी पूरी अवस्था तक पहुंचा इस को अपना जीवन काटने के लिये कुछ न बच रहा। तब यह कुछ थोड़ा सा व्योपार करने लगा और उसी की थोड़ी सी आमदनी से अपना निर्वाह करता था। यह अपनी मातृ भूमि यूनान का बड़ा हितैषी था। पहिले इस ने जो कविता की थी,वह शृंगार रस प्रधान थी और लोगों ने उसे बड़ी चाह से स्वीकार किया। पीछे जो कविता इस ने रची उस में देशानुराग और वतन दोस्ती भरी हुई थी और इस के उपदेश वाक्य यहां तक उत्तम समझे गये, कि सोलन यूनान के सात बुद्धिमान ऋषियों में गिना गया। यह सन् ५५८ ईस्वी के पहिले ८० वर्ष की उमर में असार संसार से प्रयाण कर अपनी कीर्त्ति छोड़ गया। जिस की बुद्धि की उपमा दी जाती, ऐसा बुद्धिमान जैसा सोलन॥

## पाठ २५

### सीसा।

सीसा हिन्दुस्तान के उत्तरी पहाड़ों में उत्पन्न होता है यह धातु पानी से बारह गुनी भारी है, पर नर्म होने के कारण आंच से बहुत जल्द गल जाती है। चांदी का रुपया जब बनाना चाहते हैं, तो उस में सीसा मिलाते हैं और इस का मैल ... [illegible] में रहजाता है, उस को मुरदासन कहते हैं। यह ...

पड़ेगा, कि हाथ को कोई वस्तु नीचे की ओर दबा रही है। पृथ्वी तल पर सब जगह यह दबाव प्रत्येक वर्ग इंच पर साढ़े सात सेर के अनुमान रहता है। इस हिसाब से हम लोगों के शरीर पर कई मन का बोझ सदा बना रहता है, पर चारों ओर से हवा का दबाव बराबर ही रहने के कारण जान नहीं पड़ता। हवा दबाने से दब जाती है और दबाव हटा लेने से फिर बढ़कर जितनी दूर में फैली थी उतनी ही फैल जाती है। एक शीशी हवा से भरी हुई को और उसे औंधी कर के, पानी में डालो और ऊपर से दबाओ, तो देखने में आवेगा कि इस में पानी नहीं जाता। इस का यह कारण है, कि शीशी की हवा पानी को भीतर जाने से रोकती है, पर यदि इस शीशी को बहुत दबाओ तो इस के भीतर कुछ पानी चला जायगा, क्योंकि पानी का अधिक दबाव होने से शीशी में की हवा दब कर, पहिले जितनी जगह घेरे थी, उस से कम में समा जाती है, अर्थात उस के परमाणु जो पहिले दूर २ थे अब पास २ हो जाते हैं।

हवा में बोझ भी है। यदि हवा से भरे हुए किसी बर्तन को तोलो और इस में की हवा वायुकर्षक यन्त्र के द्वारा निकाल कर इसी बर्तन को फिर तोलो, तो पहिले की अपेक्षा अब हलका जान पड़ेगा, क्योंकि इस में से एक ऐसी वस्तु जिसमें बोझा है, अर्थात हवा निकाल दी गई।

अब सोचना चाहिये कि जब वायु ऐसी वस्तु ठहरी, जिस में बोझ है और दबाने से दब जाती है, तो ऊपर की हवा की अपेक्षा पृथ्वी तल के पास वाली हवा के घनत्व

के सारे पदार्थों से बढ़कर कहें तो भी झूठ नहीं क्योंकि तांबे, पीतल आदि के बरतनों से भी यद्यपि काम निकल जाता है, पर इन में यह दोष होता है कि कड़े होने के कारण बहुत जल्द टूट जाते हैं और दूसरे प्रकार की बुराइयां भी होती हैं। तांबा पीतल आदि को नर्म करने का कोई उपाय नहीं है, पर सीसा जो आप बहुत नर्म होता है, सुरमा मिलाने से सहज में कड़ा हो जाता है, क्योंकि बहुत मुलायम रहने की दशा में भी अक्षरों के मुड़ और पिचक जाने का भय है॥

## पाठ २६

### हवा।

मनुष्य के जीवन के लिये हवा की अत्यन्त आवश्यकता है, क्योंकि मनुष्य बिना खाये पीये कुछ दिन जी भी सकता है, परन्तु हवा बिन चन्द ही मिनट में मर जाता है।

यद्यपि हम लोग इसे देख नहीं सकते, तो भी इस के वर्तमान होने में कोई सन्देह नहीं। क्योंकि सब लोग जानते हैं, कि दौड़ने में शरीर को जो एक प्रकार की थकावट मालूम होती है, वह इसी हवा के कारण है। आंधी जो कभी २ इतनी धूमधाम से आती है कि, वृक्षों को जड़ से उखाड़ डालती, घरों को गिराकर मिट्टी में मिला देती, जहाज़ों को डुबा देती और इसी प्रकार के अनेक उत्पात करती है, केवल यही हवा चलने की अवस्था में है।

हवा में दबाव होता है, क्योंकि हाथ के नीचे से वाताकर्षक यंत्र (अयर पम्प) के द्वारा हवा निकाल ली जाय, तो जान

पड़ेगा, कि हवा को कोई वस्तु नीचे की ओर दबा रही है। पृथ्वी तल पर सब जगह यह दबाव प्रत्येक वर्ग इंच पर साढ़े सात सेर के अनुमान रहता है। इस हिसाब से हम लोगों के शरीर पर कई मन का बोझ सदा बना रहता है, पर चारों ओर से हवा का दबाव बराबर ही रहने के कारण ज्ञान नहीं पड़ता। हवा दबाने से दब जाती है और दबाव हटा लेने से फिर बढ़कर जितनी दूर में फैली थी उतनी ही फैल जाती है। एक शीशी हवा से भरी हुई लो और उसे औंधी कर के, पानी में डालो और ऊपर से दबाओ, तो देखने में आवेगा कि इस में पानी नहीं जाता। इस का यह कारण है, कि शीशी की हवा पानी को भीतर जाने से रोकती है, पर यदि इस शीशी का बहुत दबाओ तो इस के भीतर कुछ पानी चला जायगा, क्योंकि पानी का अधिक दबाव होने से शीशी में की हवा दब कर, पहिले जितनी जगह घेरे थी, उस से कम में समा जाती है, अर्थात उस के परमाणु जो पहिले दूर २ थे अब पास २ हो जाते हैं।

हवा में बोझ भी है। यदि हवा से भरे हुए किसी बर्तन को तोलो और इस में की हवा वाताकर्षक यन्त्र के द्वारा निकाल कर इसी बर्तन को फिर तोलो, तो पहिले की अपेक्षा अब हलका ज्ञान पड़ेगा, क्योंकि इस में से एक ऐसी वस्तु जिसमें बोझा है, अर्थात हवा निकाल ली गई।

अब सोचना चाहिये कि जब वायु ऐसी वस्तु ठहरी, जिस में बोझ है और दबाने से दब जाती है, तो ऊपर की हवा की अपेक्षा पृथ्वी तल के आस पास की हवा के घनेपन

र्खी और उस देश के रेशमी वस्त्रों की खपत और देशों में
ने लगी। वह कपड़ा जिस देश में जाता वहां के लोगों के मन
इस बात की इच्छा हुआ करती थी, कि रेशम किस पदार्थ
से बनाया और वह पदार्थ कैसे उत्पन्न करते हैं। परन्तु सरकार
चीन ने इस विषय का बड़ा बन्दोबस्त रक्खा था, इस कारण
इस रोज़गार की गुप्तता तीन हज़ार वर्ष तक चीन देश से
बाहर न गई। अन्त में ईसवी सन के तीसरे शतक में जापानी
लोगों ने, कुछ चीनी लड़कियों को अपने देश में लेजाकर, उन
से यह गुप्तता समझली और उस का उद्यम वहां आरम्भ
किया। इन लड़कियों का स्मरण चिन्ह एक मन्दिर वहां
बनवाया है। रेशम उत्पन्न करने की कला जब चीन देश से
जापान में आई, उसी समय के लगभग हिन्दुस्तान में ब्रह्मपुत्र
नदी के किनारे के प्रदेश से आई और उस का फैलाव जल्दही
ईरान तक हो गया। कुछ लोगों का ऐसा कहना है, कि यह
कला स्वतन्त्रता से हिन्दुस्तान ही में उत्पन्न हुई, चीन देश से
नहीं आई। इस के अनन्तर बहुत वर्षों तक यह कला यूरोप में
मालूम न थी। सन ईसवी के ५५० के लगभग यूरोप के दो
धर्मोपदेशक चीन देश में आये और वे अपनी पोली लकड़ियों
में वहां से, रेशम के कीड़ों के अण्डे छिपाकर ले गये और वहां
राजाश्रय से इस की कला जारी की। फिर इस का फैलाव
बहुत ही हुआ। हाल में फ्रान्स स्विटज़रलेण्ड आदि देशों में
रेशम उत्पन्न करके, इन के वस्त्र बुनने के उद्योग पर लाखों
मनुष्य अपनी उपजीविका करते हैं।

सरकेट बरन लोगों ने ऐसा ...

में क्या भेद होगा ? निस्सन्देह यह हवा ऊपर की हवा के बोझ के कारण दबी होगी अर्थात इस के परमाणु अधिक पास २ होंगे । यह बात ठीक है, क्योंकि पृथ्वी के तल से ज्यों २ ऊपर जाइये त्यों २ हवा का घनापन कम मिलता जाता है । इसलिये यद्यपि यह कहना कठिन है कि पृथ्वी के तल से कितनी दूर तक वायुमंडल का विस्तार है तो भी ऐसा अनुमान किया जाता है कि समुद्र के तल से ४५ मील की ऊंचाई तक इस का विस्तार है ॥

## पाठ २७

### रेशम ।

सब अलंकारों में मोती का अलंकार मौल्यवान समझते हैं, परन्तु ये मोती एक प्रकार के कीड़ों के शरीर के मैल से उत्पन्न होते हैं । वैसा ही चमत्कार रेशम के वस्त्रों का है । रेशमी वस्त्र बहुमूल्य समझे जाते हैं, परन्तु रेशम एक प्रकार के कीड़े ही से उत्पन्न होता है । जहां तक इस का हाल मालूम हुआ है वह नीचे लिखा जाता है ।

रेशमी कीड़ों के निकाले हुए धागों से वस्त्र बुनने की कल्पना, प्रथम चीन देश से निकली और उन कीड़ों से रेशम तैयार कराकर, उन के वस्त्र बनाने का उद्योग भी, प्रथम उसी देश में जारी हुआ । ईसवी सन् के २६५० वर्ष पूर्व उस देश के बादशाह की रानी ने इस उद्यम को उत्तेजन दिया । उस समय से रेशम के वस्त्र बुनने की कला उस देश में पूर्ण रूप को

पहुंची और उस देश के रेशमी वस्त्रों की खपत और देशों में होने लगी। वह कपड़ा जिस देश में जाता वहां के लोगों के मन में इस बात की इच्छा हुआ करती थी, कि रेशम किस पदार्थ से बनाया और वह पदार्थ कैसे उत्पन्न करते हैं। परन्तु सरकार चीन ने इस विषय का बड़ा बन्दोबस्त रक्खा था, इस कारण इस रोज़गार की गुप्तता तीन हज़ार वर्ष तक चीन देश से बाहर न गई। अन्त में ईसवी सन के तीसरे शतक में जापानी लोगों ने, कुछ चीनी लड़कियों को अपने देश में लेजाकर, उन से यह गुप्तता समझली और उस का उद्यम वहां आरम्भ किया। इन लड़कियों का स्मरण चिन्ह एक मन्दिर वहां बनवाया है। रेशम उत्पन्न करने की कला जब चीन देश से जापान में आई, उसी समय के लगभग हिन्दुस्तान में ब्रह्मपुत्र नदी के किनारे के प्रदेश में आई और उस का फैलाव जल्दही ईरान तक हो गया। कुछ लोगों का ऐसा कहना है, कि यह कला स्वतन्त्रता से हिन्दुस्तान ही में उत्पन्न हुई, चीन देश से नहीं आई। इस के अनन्तर बहुत वर्षों तक यह कला यूरोप में मालूम न थी। सन ईसवी के ५५० के लगभग यूरोप के दो धर्मोपदेशक चीन देश में आये और वे अपनी पोली लकड़ियों में वहां से, रेशम के कीड़ों के अण्डे छिपाकर ले गये और वहां राजाश्रय से इस की कला जारी की। फिर इस का फैलाव बहुत ही हुआ। हाल में फ्रान्स स्विटज़रलेण्ड आदि देशों में रेशम उत्पन्न करके, इन के वस्त्र बुनने के उद्योग पर लाखों मनुष्य अपनी उपजीविका करते हैं।

—— लोगों ने देखा ऐसा, बम्बई में आइजर

मास के लगभग रास्तों, गलियों और घरों पर हज़ारों सुरवंट फिरते रहते हैं। ये प्राणी जब बड़े होते हैं, तब अपने शरीर से एक प्रकार का धागा निकाल कर, उस से अपने शरीर को लपेट लेते हैं और कुछ दिन ऐसे ही पड़े रहते हैं। फिर उन का रूपान्तर हो कर, उन की तितली बन जाती हैं और वे उड़ जाती हैं।

रेशम उत्पन्न करनेवाला कीड़ा भी इसी प्रकार का एक सुरवंट है। मात्र वह जो धागा निकालता है वह बहुत चिकना होता है, इस कारण उस को अनेक देशों के लोगों ने पालकर, रेशम का धन्धा उत्पन्न किया है, इस कीड़े का संस्कृत नाम पुंडरीक है। रेशम के कीड़ों की अनेक जाति हैं। उन में से बहुत सी जातों के कीड़े हिन्दुस्तान में पाये जाते हैं। उन में की एक जाति बेर के पत्तों पर उपजीविका करती है। दूसरी जाति अन्डी के पत्तों पर और तीसरी जाति शहतूत के पत्तों पर उपजीविका करती है। शहतूत के पत्तों पर उपजीविका करने वाले कीड़ों से ही हाल में रेशम उत्पन्न करते हैं। इन कीड़ों से रेशम उत्पन्न करने में बहुत परिश्रम पड़ता है। कीड़ों के खाने के लिये शहतूत के पत्ते चाहिये, इस कारण शहतूत के वृक्षों का बहुत संग्रह करना पड़ता है और उन वृक्षों के पत्ते निकलते समय ही में उन कीड़ों के अण्डे फूटें, ऐसी व्यवस्था रखनी पड़ती है। इस कारण उन अन्डों को ठहराये हुए प्रमाण की कृत्रिम उष्णता लगाते हैं, जिस से वे उचित समय पर फूटें। उन के फूटने का समय निकट आया कि, उन पर आलपीनों से बारीक २ छिद्र किया हुआ कागज़

रखते हैं और उस कागज़ पर अति कोमल शहतूत के पत्ते फैलाते हैं। फिर उस कागज़ के नीचे के अन्डे फूटने पर पत्तों की गन्ध से उन छिद्रों के द्वारा ऊपर चढ़ आते हैं। यह अन्डा राई के बराबर होता है, इसी से समझना चाहिये कि इस के कीड़े कितने छोटे होते हैं।

ये कीड़े अन्डों से बाहर निकलते ही,शहतूत के पत्ते खाना आरम्भ कर देते हैं। उस समय से लेकर पचीस तीस दिन में वे पूरे बढ़ जाते हैं। इतने समय में उन की खाल तीन चार बार बदल जाती है। यह कीड़ा पहिले शहतूत के पत्ते खूब खाता है, परन्तु खाल झड़ने का समय आया, कि उस की भूक कम होती जाती है और खाल गिर जाने पर भूक फिर बढ़ती जाती है। इस प्रकार उस के चार चार खाल डालने बाद उस का बढ़ना पूरा हो जाता है। इस समय में यह अनुमान से डेढ़ दो इंच लम्बा होता है । ४०००० कीड़ों को उन के पूरे बढ़ने तक अन्दाज़न डाई मन शहतूत के पत्ते लगते हैं।

इस तरह से उस कीड़े की पूरी बाढ़ होने पर वह किसी पौदे पर चढ़ता है और अपने होठों से धागा निकाल कर, उस पौदे पर चिपका देता है और फिर बड़ी युक्ति से उस धागे को अपने शरीर के आस पास लपेट लेता है । यह लपेटने का काम तीन चार दिन बराबर चलता रहता है। इतने समय में वह कीड़ा बिलकुल आच्छादित हो कर दृष्टि नहीं पड़ता। इस आच्छादन को कोया ( कोसला ) कहते हैं । यह डेढ़ इंच के लगभग लम्बा होता है। इस कोये में वह कीड़ा आराम से पड़ा रहता है । इस के इस तरह पर पड़े रहने

हो के उस के शरीर का रूपान्तर होता रहता है । सुरवंट का रूपान्तर होकर उस को सुन्दर तितली का स्वरूप प्राप्त होता है । पर यह कैसे होता है यह किसी को मालूम भी नहीं पड़ता । इस तरह से उस का रूपान्तर होने में पन्द्रह बीस दिन लगते हैं । उस का पूर्ण रूपान्तर होने पर उस को अपने कोये के बाहर निकलने की इच्छा होती है और वह उस कोये के एक सिरे में अपने मुंह की लार लगाकर उस को नर्म करता है और फिर अपने पांव से वहां के धागे तोड़ कर, छेद बना कर उस में से बाहर निकल आता है । इस तरह से बाहर निकलने पर उस तितली को विशेष आनन्द मालूम पड़ता है और उस में के स्त्री और पुरुष जाति के कीड़े इकट्ठे नाचते फिरते हैं । फिर कुछ दिनों बाद मादाएं अन्डे देती हैं और वे शीघ्र ही मर जाती हैं । एक एक मादा पांच सौ के लगभग अन्डे देती है ।

ऊपर जो क्रम कहा वह सृष्टि का क्रम है । परन्तु कोयों में के कीड़ों को तितलियों का स्वरूप प्राप्त होने पर, उन को ऐसे ही बाहर पड़े रहने देने से कोये में छिद्र पड़कर, उस में का धागा टूट जाता है, वह मनुष्य के काम में नहीं आता । मनुष्य को उस कीड़े का निकाला हुआ सारा धागा अर्थात पूरा का पूरा चाहिये । इसलिये कोया तैयार होने के तीन चार दिन में कोये को धूप में तपाकर, अथवा गर्म पानी में डुबाकर, उन में के कीड़ों को जान से मार डालते हैं । आगे के लिये अन्डे मिलने के लिये, कुछ अच्छे २ कोये रहने देते हैं । उन में से कीड़े बाहर पड़ने पर, उन को साफ़ कपड़े पर

लेते हैं और उन की खूब रक्षा करते हैं। यह रक्षा मादाओं के अण्डे देने तक रखते हैं उस के बाद उन मादाओं को फेंक देते हैं।

कोया जिस धागे का बना होता है, वह धागा सूक्ष्म दर्शक यंत्र से देखने से दुहरा दीखता है, उस में के दोनों धागे एक प्रकार के चिकने पदार्थ से एक दूसरे से चिपके हुए रहते हैं। रेशम के कीड़े के होट में दो छिद्र होते हैं और प्रत्येक छिद्र से वह एक २ धागा निकालता है और फिर उस को एक दम अपनी लार से चिपका देता है। यही धागों के दुहरा होने का कारण है। उस कीड़े के होट पर के प्रत्येक छिद्र के पीछे दस की दुम तक एक २ थैली रहती है और वह चिकने पदार्थ से भरी रहती है, इसी चिकने पदार्थ से वह धागे निकालता है। कुछ लोग इन कीड़ों को मार कर उन की थैलियां बाहर निकालते हैं और उस में के पदार्थ के अच्छे मोटे डोरे निकाल कर, सुखाते हैं। ये डोरे बहुत ही मजबूत होते हैं और वे मछली पकड़ने के कांटों के बांधने के काम में आते हैं।

प्रत्येक कोये में ४००० गज़ के लगभग लम्बा रेशम होता है। परन्तु वह सब एक सा मोटा नहीं होता। वह आरम्भ और अन्त में बारीक होता जाता है, इसलिये उस का म[illegible] भाग वस्त्रादिक बुनने के काम में आता है। वह भाग ७२० से ११४० फीट तक लम्बा होता है। धागों को खूब बुन। इन के धागे बनाकर, रेशमी कपड़े बनाते हैं। बाजारों में रेशम की किस्में हैं उन में का बहुत सा कपड़ा इसी प्रकार

रेशम से बनता है । ४००८० कीड़ों से अन्दाज़न चार पांच सेर रेशम निकलता है। कोये में से निकले हुए एक से रेशमी धागों का कपड़ा अधिक नर्म और चमकदार होता है । यह कम तैयार होता है इस कारण उस की क़ीमत अधिक पड़ती है।

फ़्रान्स इटली आदि यूरोपियन देशों में रेशम के कीड़ों को रखकर उन में से रेशम निकालने की युक्ति, बहुत ही अच्छी दशा को पहुंची है।

इस धन्धे में वहां के लोग स्वच्छता का बड़ा ख़याल रखते हैं। उन को ऐसा अनुभव हुआ है, कि इस काम में जितनी सफ़ाई रक्खी जावे उतनाही रेशम अच्छा और ज़ियादा निकलेगा। रेशम के कीड़ोंको रोग न लगे, इस लिये बड़ी होशियारी रखनी पड़ती है। रोग होने का संशय होने से, अन्डे देने वाले नर मादाओं को सूक्ष्म दर्शक यन्त्र से जांचते हैं और जो रोगी मालूम पड़ते हैं उन नर, मादाओं और उन के अन्डों का बिलकुल नाश कर डालते हैं॥

## पाठ २८

### पृथ्वी ।

पृथ्वी नारंगी के समान गोल है । इस का सबूत यह है कि जब हम समुद्र के किनारे पर से किसी आते हुए जहाज़ को देखते हैं, तो सब से पहिले उस का ऊपरी भाग अर्थात् मस्तूल दिखाई देता है और फिर ज्यों २ वह किनारे के पास आता जाता है त्यों २ उस के और नीचे के भाग धीरे २ दीखे

जाते हैं। अन्त को किनारे के बहुत पास आने पर उस जहाज़ का कुल भाग अर्थात् नीचे से ऊपर तक भली भांति दिखलाई देता है। ऐसे ही इस की उलटी अवस्था में, अर्थात् जब जहाज़ किनारे से छूट कर जाता है, तो धीरे २ नीचे की ओर से उस के सब भाग लोप होते हैं और कुछ दूर जाने से मस्तूल भी नहीं दिखाई देता। यदि पृथ्वी की आकृति गोल न होती तो जहाज़ की यह हालतें न होतीं। पृथ्वी गोल है, इस कारण उस के गोल भाग की रुकावट से जहाज़ की ऐसी हालतें होती हैं। जो मनुष्य समुद्र तक नहीं जा सकें, वे जब किसी मैदान में खड़े होकर, किसी दूर की ऊंची चीज़ जैसे पहाड़ या मकान या वृक्ष को देखते हैं, तो वे ज़मीन से लगे हुए या कुछ थोड़े ही ऊंचे दीखते हैं, परन्तु पास आने पर वैसे ऊंचे मालूम होते हैं। सिवाय इस के यह भी देखते हैं कि जो चीज़ें दूर की हम को पृथ्वी के तल पर से दिखलाई नहीं देतीं, वे थोड़े ऊंचे टीले या पहाड़ आदि पर चढ़ने से दिखलाई देने लगती हैं। जो पृथ्वी का तल गोल नहीं है, तो फिर क्या कारण है, कि हमको ऐसा देख पड़ता है। अवश्य पृथ्वी का तल गोल है। यदि यह तल चपटा होता, तो यह सम्भव था कि, ऐसे ऊंचे हिमालय पहाड़ के भाग यद्यपि दूरी के कारण कुछ छोटे दीखते, परन्तु सारे भारतवर्ष से क्या, हम और भी देशों से दिखलाई देते। यह पृथ्वी की गोलाई ही का कारण है, कि वे नहीं दिखलाई देते। सिवाय इस के गोल चीज़ पर यह सम्भव है, कि कोई चीज़ कहीं से भी किसी तरफ़ को सीधी चलाई जाय, तो जहां से चली थी वहीं फिर मुड़ के आ जाएगी। ऐसा ही पृथ्वी

पर नाविक लोग सबूत कर चुके हैं, कि एक देश से चल कर किसी दिशा को बिना मुंह मोड़े सीधे चले गये और कुछ दिनों के बाद अपने उसी स्थान पर कि जहां से चले थे, आगये। यदि पृथ्वी का तल गोल न होता, तो यह कैसे सम्भव होता। इस से सिद्ध हुआ कि पृथ्वी गोल है। ऊपर लिखे हुए प्रमाणों के सिवाय और भी प्रमाण पृथ्वी के गोल होने के हैं जब तुम ज़ियादा पढ़ोगे तो वे सब मालूम होंगे।

पृथ्वी का व्यास ७९१२ मील और परिधि २४०२० मील है। हम लोगों के देखने में एक या दो मील लम्बा चौड़ा मैदान आता है, यह कुल पृथ्वी का कैसा एक अति छोटा भाग है, इसलिये इस छोटे भाग से कुल पृथ्वी की गोलाई को हम नहीं जान सके। जैसे एक बड़े गोल मटके के अति छोटे टुकड़े के देखने से हम यह नहीं कह सके, कि अवश्य यह किसी गोल चीज़ का टुकड़ा है।

पृथ्वी अपनी कीली पर २४ घंटे में घूमती है, जिस से दिन रात होते हैं। जो पृथ्वी अपनी धुरी पर न घूमती, तो रात दिन न होते, क्योंकि प्रकाश पृथ्वी पर सूर्य्य से आता है और पृथ्वी गोल है, जो पृथ्वी न घूमती होती तो यह अवश्य था कि आधी पृथ्वी पर हमेशा उजेला और आधी पर अंधेरा रहता और जहां जो वक्त होता, वही हमेशा बना रहता। पर ऐसा नहीं होता, इस से सिद्ध हुआ कि पृथ्वी घूमती है।

३६५। दिन में पृथ्वी सूर्य के चारों ओर घूमती है, इस कारण ऋतुएं बदलती हैं। पृथ्वी के घूमने में उस के जो भाग सूर्य के सामने रहते हैं और उन पर सूर्य की किरणें सीधी पड़ती

हैं, वहां गर्मी अधिक रहती है और जो भाग सूर्य के सामने नहीं रहते, वहां सूर्य की तिरछी किरणें पड़ती हैं, वहां सर्दी बहुत रहती है। जो भाग गर्म और सर्द भागों के बीच में हैं वे साधारण हैं न वहां गर्मी अधिक पड़ती है न सर्दी॥

## पाठ २९

### भजन।

माधव अब न द्रवहु केहि लेखे।
प्रणतपाल प्रण तोर मोर प्रण जियउँ कमल पद देखे॥
जब लगि मैं न दीन दयालु तैं मैं न दास तैं स्वामी।
तब लगि जो दुख सहेउँ कहेउँ नहिं यद्यपि अन्तर्यामी॥
तैं उदार मैं कृपण पतित मैं तैं पुनीत श्रुति गावे।
बहुत नात रघुनाथ तोहिं मोहिं अब न तजे बनि आवे॥
जनक जननि गुरु बन्धु सुहृद पति सब प्रकार हितकारी।
द्वैत रूप तम कूप परौं नहिं अस कछु जतन बिचारी॥
सुनु अदभ्र करुणा वारिजलोचन मोचन भय भारी।
तुलसिदास प्रभु तव प्रकाश बिनु संशय टरै न टारी॥ १॥
माधव मो समान जग नाहीं।
सब विधि हीन मलीन दीन अति लीन विषय कोउ नाहीं॥
तुम सम हेतु रहित कृपालु आरतहित ईश न त्यागी।
मैं दुख शोक विकल कृपालु केहि कारण दया न लागी॥
नाहिन कछु अवगुण तुम्हार अपराध मोर मैं माना।
ज्ञान भवन तनु दियेहु नाथ सोउ पाय न मैं प्रभु जाना॥

धेनु करील श्रीखण्ड बसन्तहि दूषण मृषा लगावै ।
सार रहित हत भाग्य सुरभि पल्लव सों कहु कहं पावै ॥
सब प्रकार मैं कठिन मृदुल हरि दृढ़ विचार जिय मोरे ।
तुलसिदास प्रभु मोह शृंखला छुटिहिं तुम्हारे छोरे ॥ २ ॥
हे हरि कवन जतन भ्रम भागै ।
देखत सुनत ,विचारत यह मन निज स्वभाव नहिं त्यागै ॥
भक्ति ज्ञान वैराग्य सकल साधन यहि लागि उपाई ।
कोउ भल कहहु देउ कछु कोऊ असि वासना हृदय ते न जाई ॥
जेहि निशि सकल जीव सूतहिं तव कृपापात्र जन जागै ।
निज करणी विपरीत देखि मोहिं समुझि महा भय लागै ॥
यद्यपि भग्न मनोरथ विधि वश सुख इच्छित दुख पावै ।
चित्रकार कर हीन यथा स्वारथ बिनु चित्र बनावै ॥
हृषीकेश सुनि नाउं जाउं बलि अति भरोस जिय मोरे ।
तुलसिदास इन्द्रिय सम्भव दुख हरे बनिहि प्रभु तोरे ॥ ३ ॥
हो हरि यह भ्रम की अधिकाई ।

भ्रम कछु समुझि परत रघुराया ।
बिनु तव कृपा दयालु दास हित मोह न छूटै माया ॥
वाक्य ज्ञान अत्यन्त निपुण भव पार न पावै कोई ।
निशि गृह मध्य दीप की बातन्ह तम निवृत्त नहिं होई ॥
जैसे कोउ इक दीन दुखी अति असन हीन दुख पावै ।
चित्र कल्पतरु कामधेनु गृह लिखे न विपति नशावै ॥
षट्रस बहु प्रकार भोजन कोउ दिन अरु रैन बखानै ।
बिनु बोले सन्तोष जनित सुख खाइ सोई पै जानै ॥
जब लगि नहिं निज हृद प्रकाश अरु विषय आस मन माहीं ।
तुलसिदास तब लगि जग योनि भ्रमत स्वप्नेहु सुख नाहीं ॥४॥

मैं केहि कहउ विपति अति भारी ॥
श्री रघुवीर धीर हितकारी ॥
मम हृदय भवन हरि तोरा ।
तहं बसे आइ बहु चोरा ॥
अति कठिन करहिं बर जोरा ।
मानहिं नहिं बिनय निहोरा ॥
तम मोह लोभ अहङ्कारा ।
मद क्रोध बोध रिपु मारा ॥
अति करहिं उपद्रव नाथा ।
मर्दहिं मोहिं जानि अनाथा ॥
मैं एक अमित बटमारा ।
कोउ सुनइ न मोर पुकारा ॥
भागेउ नहिं नाथ उबारा ।
रघुनायक करहु संभारा ॥

कह तुलसिदास सुनु रामा।
लूटहिं तव तस्कर धामा॥
चिन्ता यह मोहिं अपारा।
अपयश नहिं होइ तुम्हारा॥ ६॥
मन मेरे मानहिं सिख मेरी।
जो निज भक्ति चहै हरि केरी॥
उर आनहिं प्रभु कृत हित जेते।
सेवहिं ते जे अपनपौ चेते॥
दुख सुख अरु अपमान बड़ाई।
सब सम लेखहिं विपति विहाई॥
सुनु शठ काल ग्रसित यह देही।
जनि तेहि लागि विदूषहि केही॥
तुलसिदास बिनु असि मति आये।
मिलहिं न राम कपट लय लाये॥ ७॥
मैं जानी हरि पद रति नाहीं।
सपनेहु नहिं विराग मन माहीं॥
जो रघुवीर चरण अनुरागे।
तिन सब भोग रोग सम त्यागे॥
काम भुजङ्ग डसत जब जाहीं।
विषय नींब कटु लगत न ताहीं॥
अस मँजस अस हृदय विचारी।
बढ़त सोच नित नूतन भारी॥
जब कब राम कृपा दुख जाई।
तुलसिदास नहिं आन उपाई॥ ८॥

ताहि कृपा रघुपति कृपालु की बैर और के कहा सरै।
होइ न बांको बार भक्त को जो कोउ कोटि उपाय करै॥
तकै नीचु जो मीचु साधु की सोई पामर तेहि मीचु मरै।
बेद बिदित प्रह्लाद कथा सुनि को न भक्ति पथ पाउं धरै॥
गज उधारि हरि थप्यो बिभीषण ध्रुव अविचल कबहूं न टरै।
अम्बरीश की शाप सुरति करि अजहुं महा मुनि ग्लानि गरै॥
प्रभु प्रसाद सौभाग्य बिजय यश पांडवं ने बरिआर बरै॥
जो जो कूप खनैगो पर कहं सो शठ फिरि तेहि कूप परै।
सपनेहुं सुख सन्त द्रोही कहं सुरतरु सोउ बिष फरनि फरै॥
हैं काके द्वै शीष ईश के जो हठि जन की सीम चरै।
तुलसिदास रघुबीर बाहुबल सदा अभय काहू न डरै॥ ८॥

शास्त्र के अत्यन्त आश्चर्य कारक कितने नवीन २ शोध कैसे लगते चले हैं, यह किसी से कहने की आवश्यकता नहीं है। इस यन्त्र की मूल कल्पना किस रीति से प्रगट हुई, इस विषय की बात चमत्कारिक है यह नीचे लिखी जाती है।

तीनसौ वर्ष पहिले यूरोप खण्ड के नेदर्लैंड्स देश के मिडिलबर्ग नाम के शहर में हान्स लिपरशिम नाम का एक चश्मा बनाने वाला रहता था। एक दिन वह अपनी दुकान में काम कर रहा था और उस के लड़के उस की सहायता कर रहे थे और वहां के कांच और औज़ार वगैरह लेकर खेलते थे। इतने में उस की एक लड़की ने सहज, शीशे के दो तरह के कांच लेलिये और उन को हाथों में रखके उन में से दूर के पदार्थों को देखने लगी, तो उस को वह पदार्थ बहुत ही पास और बड़ा दीखने लगा। वह इस चमत्कार को अपने पिता को बताने लगी। तब उस के पिता को मालूम हुआ कि लड़की ने गोलान्तर कांच आंख के पास पकड़ा है और गोल वाह्य कांच दूर रक्खा है और उन दोनों कांचों का मध्य बिन्दु बराबर मिलने से, दूर का पदार्थ पास और बहुत बड़ा दीखता है। यह पुरुष होशियार और बुद्धिमान था। उस ने तुरन्त इस तरह से अनेक रीतों से कांचों में से देख कर, मोटे कागज़ की नली बनाई और उन दोनों सिरों की ओर कांच लगाकर, उन के मध्य बिन्दु बराबर एक रेखा में किये और इस रीति से कितनीही दुर्बीनें बनाई। तारीख़ २२ सितम्बर सन् १६०८ ई० को उस ने कागज़ की तीन दुर्बीनें बनाकर, अपने सरकार की तरफ़ भेजीं और उन का नाम 'दूर के पदार्थ देख[illegible]' रक्खा

यह शोध प्रसिद्ध होने के थोड़े दिनों बाद, जेकब, आद्रियन्स ने जो आमस्टरडाम से २० मील पर मेट्टियस नाम के गांव में रहता था, उस ने यह प्रसिद्ध किया, कि मुझ को यही शोध दो वर्ष पहिले लगा है। परन्तु फिर ऐसा मालूम हुआ कि इन दोनों ही को एक दूसरे के शोध के विषय में पहिले मालूम न था। सिवाय इस के हान्सलिपरशिम ने इस में विशेष मन लगाके, प्रयत्न किया, इस कारण दुर्बीनों के शोध के विषय में इसी का नाम सुप्रसिद्ध हुआ है।

उस समय इटली में प्रसिद्ध ज्योतिषी ग्यालिलियो रहता था और उस के ज्योतिष सम्बन्धी नवीन शोध चल रहे थे। जब उस ने यह हाल सुना तो विचारा, कि ऐसा यन्त्र अर्थात् ज्योतिष सम्बन्धी वेध लेने को बहुत उपयोगी होगा। इसलिये उस ने अनेक प्रयत्न करके और अनुभव लेके, धातु की नली

शास्त्र के अत्यन्त आश्चर्य कारक कितने नवीन २ शोध कैसे लगते चले हैं, यह किसी से कहने की आवश्यकता नहीं है। इस यन्त्र की मूल कल्पना किस रीति से प्रगट हुई, इस विषय की बात चमत्कारिक है वह नीचे लिखी जाती है।

तीन सौ वर्ष पहिले यूरोप खण्ड के नेदर्लैंड्स देश के मिडिलबर्ग नाम के शहर में हान्स लिपरशिम नाम का एक चश्मा बनाने वाला रहता था। एक दिन वह अपनी दुकान में काम कर रहा था और उस के लड़के उस की सहायता कर रहे थे और वहां के कांच और औज़ार वग़ैरह लेकर खेलते थे। इतने में उस की एक लड़की ने सहज, शीशे के दो तरह के कांच लेलिये और उन को हाथों में रखके उन में से दूर के पदार्थों को देखने लगी, तो उस को वह पदार्थ बहुत ही पास और बड़ा दीखने लगा। वह इस चमत्कार को अपने पिता को बताने लगी। तब उस के पिता को मालूम हुआ कि लड़की ने गोलान्तर कांच आंख के पास पकड़ा है और गोल बाह्य कांच दूर रक्खा है और उन दोनों कांचों का मध्य बिन्दु बराबर मिलने से, दूर का पदार्थ पास और बहुत बड़ा दीखता है। यह पुरुष होशियार और बुद्धिमान था। उस ने तुरन्त इस तरह से अनेक रीतों से कांचों में से देख कर, मोटे कागज़ की नली बनाई और उन दोनों सिरों की ओर कांच लगाकर, उन के मध्य बिन्दु बराबर एक रेखा में किये और इस रीति से कितनीही दुर्बीनें बनाईं। तारीख़ २२ सितम्बर सन् १६०८ ई० को उस ने कागज़ की तीन दुर्बीनें बनाकर, अपने सरकार को नज़र भेजीं और उन का नाम 'दूर के पदार्थ देखने के यन्त्र' रक्खा।

यह शोध प्रसिद्ध होने के थोड़े दिनों बाद, जेकब मार्टि-न्स ने जो आमस्टरडाम से २० मील पर मेट्रियस नाम के गांव में रहता था, उस ने यह प्रसिद्ध किया, कि मुझ को यही शोध दो वर्ष पहिले लगा है। परन्तु फिर ऐसा मालूम हुआ कि इन दोनों ही को एक दूसरे के शोध के विषय में पहिले मालूम न था। सिवाय इस के हान्सलिपरशिम ने इस में विशेष मन लगाके, प्रयत्न किया, इस कारण दुर्बीनों के शोध के विषय में इसी का नाम सुप्रसिद्ध हुआ है।

उस समय इटली में प्रसिद्ध ज्योतिषी ग्यालिलियो रहता था और उस के ज्योतिष सम्बन्धी नवीन शोध चल रहे थे। जब उस ने यह हाल सुना तो विचारा, कि ऐसा यन्त्र अर्थात् ज्योतिष सम्बन्धी वेध लेने को बहुत उपयोगी होगा। इसलिये उस ने अनेक प्रयत्न करके और अनुभव लेके धातु की नली की दुर्बीन बनाई। इन ग्यालिलियो की पहिली दुर्बीन और हाल की दुर्बीनों को लेकर देखो तो पहिले की नलियां बच्चों के खेल की सी मालूम होंगी और उन के देखने से हंसी [illegible]।

इस दुर्बीन द्वारा जो चमत्कार दीख पड़े, उन का वर्णन इस तरह पर किया है—चन्द्रमा का पृष्ठ भाग सपाट न होकर उस पर जैसे पहाड़ नदियां वगैरह हैं, वैसे ही उस पर बड़े २ मैदान और देश वगैरह होने चाहियें, ऐसा उस को मालूम हुआ। चन्द्रमा पर ऊंचे पर्वतों की छाया ऐसी दीखी जैसी पृथ्वी के पहाड़ी भागों में प्रवासियों को दीखती है। उस ने बृहस्पति के उपग्रह देखे तो उस को मालूम हुआ, कि उन में चन्द्रमा की तरह ग्रहण लगते हैं और उन की छाया मुख्य ग्रहों पर पड़ती है। चन्द्रमा पृथ्वी का उपग्रह है और उस की स्थिति अमुक प्रकार की है यह भी स्पष्ट रीति से सिद्ध हुआ। उस की सूर्य पर के दाग दृष्टि पड़े और उन की गति से सूर्य पच्चीस दिन में एक बार अपनी कीली पर घूमता है, ऐसा उस ने शोध किया। उस को शुक्र की कला दीख पड़ी, इस कारण ग्रह के पर प्रकाश होने की बात बिलकुल स्पष्टता से सिद्ध हुई। यद्यपि उस को शनिश्चर का चक्र दीखा नहीं तोभी उस की आकृति कुछ चमत्कारिक मालूम पड़ी। उस की दुर्बीन उस समय शनिश्चर के विषय में अधिक शोध कर सके, ऐसी न थी, इस कारण उस ने शनिश्चर के विषय में ऐसा ही अधूरा संशय युक्त लिख रक्खा है। आकाश में स्थिर तारों के विषय में तो अनेक अद्भुत चमत्कार दीख पड़े। एक एक तारे के समूह में अमुक २ तारे हैं ऐसा पहिले सादी आंख से दीखता था, परन्तु दुर्बीन के योग से उस में सैकड़ों तारे अधिक दीखने लगे। उस समय का प्रसिद्ध इंगरेजी कवि मिल्टन इटली देश में गया था, तब वह ग्यालिलियो से मिला था और उस ने दुर्बीन द्वारा आकाश के दर्शन चमत्कार

थे। उस ने एक जगह लिखा है कि ग्यालिलियो के अद्भुत यन्त्र द्वारा चन्द्रमा पर पर्वत, नदियां, जंगल देश वगैरह चमत्कार दीखते हैं।

ग्यालिलियो की दुर्बीन और उस का सामान और यंत्र अब तक संभालकर रक्खे हैं। ये हाल के उत्कृष्ट यन्त्रों के सामने बिलकुल हलके मालूम होते हैं। आगे यूरोप के ज्योतिषी बड़ी २ दुर्बीनें बनाने लगे और उन से नये २ शोध होने लगे। फ्रान्स देश के राजा चौदहवें लूई ने एक बड़ी दुर्बीन बनवाई उस की लम्बाई १५० फ़ीट थी। इस दुर्बीन में से प्रसिद्ध फ्रेंच ज्योतिषी क्यासिनी ने शनिश्चर के चक्र का प्रथम शोध लगाया और उसे शनिश्चर के दो उपग्रह भी दीखे।

हाल में जो दुर्बीनें बनाई जाती हैं वे दो तरह की होती हैं। आज तक जिस प्रकार की दुर्बीनें बनीं उन में से पदार्थ कांच के उस तरफ़ दीखते हैं। सब सादा दुर्बीनें ऐसी ही होती है। परन्तु पीछे से दूसरी ऐसी युक्ति निकाली, कि प्रथम शीशे पर पदार्थ का प्रतिबिम्ब गिरे और फिर वह देखने वाले की आंख पर बड़ा होकर गिरे। इसलिये दुर्बीन के आगे नीचे की तरफ़ आंखों के पास दूसरा बढ़ाने वाले कांच लगाते हैं।

इंग्लैंड के प्रख्यात ज्योतिषी सर विलियम हर्शल ने दुर्बीन के सुधारने में बड़े प्रयत्न किये हैं। दर्पण और कांच तैयार करके और हर घड़ी घिस कर, पॉलिश करना यह मुख्य काम है और यह बड़ा नाज़ुक है। दुर्बीन का कांच जितना साफ़ और पॉलिश किया हुआ होगा, उतना ही उस में से पदार्थ अति स्पष्ट दीखेगा। जैसी २ दुर्बीनें अधिक दृष्टि की बढ़ती

इस दुर्बीन द्वारा जो चमत्कार दीख पड़े, उन का वर्णन इस तरह पर किया है—चन्द्रमा का पृष्ठ भाग सपाट न होकर उस पर जैसे पहाड़ नदियां वगैरह हैं, वैसे ही उस पर बड़े २ मैदान और देश वगैरह होने चाहियें, ऐसा उस को मालूम हुआ। चन्द्रमा पर ऊंचे पर्वतों की छाया ऐसी दीखी जैसी पृथ्वी के पहाड़ी भागों में प्रवासियों को दीखती है। उस ने बृहस्पति के उपग्रह देखे तो उस को मालूम हुआ, कि उन में चन्द्रमा की तरह ग्रहण लगते हैं और उन की छाया मुख्य ग्रहों पर पड़ती है। चन्द्रमा पृथ्वी का उपग्रह है और उस की स्थिति अमुक प्रकार की है यह भी स्पष्ट रीति से सिद्ध हुआ। उस की सूर्य पर के दाग दृष्टि पड़े और उन की गति से सूर्य पच्चीस दिन में एक बार अपनी कीली पर घूमता है, ऐसा उस ने शोध किया। उस को शुक्र की कला दीख पड़ी, इस कारण ग्रह के पर प्रकाश होने की बात बिलकुल स्पष्टता से सिद्ध हुई। यद्यपि उस को शनिश्चर का चक्र दीखा नहीं तोभी उस की आकृति कुछ चमत्कारिक मालूम पड़ी। उस की दुर्बीन उस समय शनिश्चर के विषय में अधिक शोध कर सके, ऐसी न थी, इस कारण उस ने शनिश्चर के विषय में ऐसाही अधूरा संशय युक्त लिख रक्खा है। आकाश में स्थिर तारों के विषय में तो अनेक अद्भुत चमत्कार दीख पड़े। एक एक तारे के समूह में अमुक २ तारे हैं ऐसा पहिले खाली आंख से दीखता था, परन्तु दुर्बीन के योग से उन में सैकड़ों तारे अधिक दीखने लगे। उस समय का प्रसिद्ध इंगरेज़ी कवि मिल्टन इटली देश में गया था, तब वह ग्यालिलियो से मिला था और उस ने दुर्बीन द्वारा आकाश के नवीन चमत्कार

# पाठ ३१

## अर्ज़ी।

अर्ज़ी नम्बर १

श्रीयुत इन्स्पेक्टर साहब शिक्षा विभाग पूर्वी सर्किल रामपुर

ग़रीब पर्वर सलामत

जनाब आली अर्ज़ यह है कि मैं इस साल तीसरी कक्षा में पास हो गया हूं और अब मिडिल क्लास में पढ़ना चाहता हूं परन्तु यहां के स्कूल में तीसरी कक्षा से आगे पढ़ाई नहीं होती और मेरे मा बाप बहुत ग़रीब हैं बाहर का ख़र्च नहीं उठा सक्ते इसलिये यह अर्ज़ी हुज़ूर की ख़िदमत में भेज कर उम्मेदवार हूं कि किसी मिडिल स्कूल में मेरा स्कालर्शिप मुक़र्रिर फ़र्माया जावे।

रामाधार विद्यार्थी कक्षा ३ स्कूल सरजमपुर पर्गना सुखधाम-
- ज़िला हरपुर

- २० जनवरी सन् १८६४ ई०

जाती हैं, जैसा २ सूर्यादि पदार्थों का आंखों पर आने वाला तेज़ भी बढ़ता जावेगा, इस से पदार्थ ठीक न दीख कर, भ्रम रूपमें आवेगा। इसलिये दुर्बीनों के ऐसे कांच और शीशे तैयार किये हैं, जैसे चश्मों के कांच होते हैं। उन के तैयार करने में युक्ति, श्रम और व्यय बहुत होता है। सर वुलियम हंटर के परिश्रम से यूरेनस नवीन ग्रह का शोध लगकर उन का नाम अजरामर हुआ है। हर्शेल साहब की बड़ी दुर्बीन की लम्बाई ४० फ़ीट और उस का व्यास ४ फ़ीट है।

इकाटलैण्ड देश में लॉर्ड रास नाम के श्रीमान गृहस्थ हैं उन को ज्योतिष शास्त्र और दुर्बीनों का बड़ा शौक है। उन्हों ने बड़ी२दुर्बीनें तैयार करके,अपने मकानमें बड़ी वेधशाला की है। उन्हों ने सवा लाख के लगभग रुपये खर्च करके, बड़ी दुर्बीन तैयार की है। उस में के शीशे का व्यास ६ फ़ीट और उस की लम्बाई ५४ फ़ीट है।

हाल में अमेरिका और फ़्रान्स और जर्मन के देशों में दोनों प्रकार की बड़ी दुर्बीनें तैयार हुई हैं और उन की शक्ति भी विलक्षण है। उन में चन्द्रमा अपने पास से २५-३० मील पर दीखता है। पेरिस शहर में जो प्रदर्शनी होने वाली है, उस में रखने के लिये एक बड़ी भारी दुर्बीन फ़्रान्स देश में तैयार हुई है, उस के विलक्षण गुण प्रसिद्ध हुए हैं। परन्तु उस का ठीकर वर्णन अभी तक पढ़ने में नहीं आया। एक जगह ऐसा पढ़ने में आया है, कि उस में से चन्द्रमा ४-५ मील के अन्तर पर दीखेगा।

दुर्बीन के योग से मनुष्य की दृगशक्ति बहुत बढ़ गई है और उस को सृष्टि के विलक्षण चमत्कार मालूम पड़ने लगे हैं॥

# पाठ ३१

## अर्ज़ी।

अर्ज़ी नम्बर १

श्रीयुत इन्स्पेक्टर साहब शिक्षा विभाग पूर्वी सर्किल रामपुर

गरीब परवर सलामत

जनाब आली! अर्ज़ यह है कि मैं इस साल तीसरी कक्षा
पास हो गया हूं और अब मिडिल क्लास में पढ़ना चाहता
परन्तु यहां के स्कूल में तीसरी कक्षा से आगे पढ़ाई नहीं हो
और मेरे मा बाप बहुत गरीब हैं बाहर का खर्च नहीं उ
सके इसलिये यह अर्ज़ी हुजूर की खिदमत में भेज कर उम्मेदवा
हूं कि किसी मिडिल स्कूल में मेरा स्कालरशिप मुकर्रर फ़रमा
जावे।

रामाधार विद्यार्थी व० ए० स्कूल सरकनपुर परगना सुल्तान
पुर ज़िला हरपुर

तारीख १० जनवरी सन् १९१४ ई०

जाती हैं, वैसा २ सूर्यादि पदार्थों का आंखों पर आने वाला तेज़ भी बढ़ता जायेगा, इस से पदार्थ ठीक न दीख कर, भ्रम उपर्थ आवेगा। इसलिये दुर्बीनों के ऐसे कांच और शीशे तैयार किये हैं, जैसे चश्मों के कांच होते हैं। उन के तैयार करने में युक्ति, श्रम और व्यय बहुत होता है। सर बुलियम हंटर के परिश्रम से यूरेनस नवीन ग्रह का शोध लगकर उन का नाम अजरामर हुआ है। हर्शल साहब की बड़ी दुर्बीन की लम्बाई ४० फ़ीट और उस का व्यास ४ फ़ीट है।

स्काटलैण्ड देश में लॉर्ड रास नाम के श्रीमान गृहस्थ हैं उन को ज्योतिष शास्त्र और दुर्बीनों का बड़ा शौक़ है। उन्हों ने बड़ी२दुर्बीनें तैयार करके, अपने मकान में बड़ी वेधशाला की है। उन्हों ने सवा लाख के लगभग रुपये ख़र्च करके, बड़ी दुर्बीन तैयार की है। उस में के शीशे का व्यास ६ फ़ीट और उस की लम्बाई ५४ फ़ीट है।

हाल में अमेरिका और फ़ान्स और जर्मन के देशों में दोनों प्रकार की बड़ी दुर्बीनें तैयार हुई हैं, और उन की शक्ति भी विलक्षण है। उन में चन्द्रमा अपने पास से २५-३० मील पर दीखता है। पेरिस शहर में जो प्रदर्शनी होने वाली है, उस में रखने के लिये एक बड़ी भारी दुर्बीन फ़ान्स देश में तैयार हुई है, उस के विलक्षण गुण प्रसिद्ध हुए हैं। परन्तु उस का ठीक पर्याम अभी तक पढ़ने में नहीं आया। एक जगह ऐसा पढ़ने में आया है, कि उस में से चन्द्रमा ४-५ मील के अन्तर पर दीखेगा।

दुर्बीन के योग से मनुष्य की दृगशक्ति बहुत बढ़ गई है और उस को सृष्टि के विलक्षण चमत्कार मालूम पड़ते जाते हैं॥

अर्ज़ी नम्बर ३

श्रीयुत इन्स्पेक्टर साहब शिक्षा विभाग पूर्वी सर्किल रामपुर

गरीब परवर सलामत

जनाब आली अर्ज़ यह है कि बमूजिब हुक्म हुज़ूर नम्बरी ८२६ तारीख ४ मई सन १८९९ ई० के कमतरीन तारीख १२ मई सन हाल को स्कूल धरमपुर में पहुंच गया और इसी तारीख को पंडित रामदीन साहब मास्टर से स्कूल का चार्ज लेलिया कुल सामान बमूजिब रजिस्टर के मिला हासिलकलाम अर्ज़ है फ़िहरिस्त सामान इसी अर्ज़ी के साथ भेजी है।

रामाधार मास्टर स्कूल धरमपुर परगना सुलतानपुर ज़िला हरदुर

तारीख १३ मई सन १८९९ ई०

अर्ज़ी नम्बर ३

श्रीयुत इन्स्पेक्टर साहब शिक्षा विभाग पूर्वी सर्किल रामपुर

ग़रीब पर्वर सलामत

जनाब आली अर्ज़ यह है कि कमतरीन इस साल मिडिल की परीक्षा में पास होगया है परन्तु घर की ग़रीबी के कारण अब आगे नहीं पढ़ सका इसलिये यह अर्ज़ी हुज़ूर की ख़िदमत में भेजकर उम्मेदवार है कि किसी मास्टरी की जगह पर मेरी पर्वरिश फ़र्माई जावे ॥

रामाधार ब्राह्मण साकिन सज्जनपुर पर्गना सुन्दरग्रामपुर ज़िला हरपुर

तारीख़ २२ मार्च सन् १८६६ ई०

अर्जी नम्बर ५

श्री युत इन्स्पेक्टर साहब शिक्षा विभाग पूर्वी सर्किल रामपुर

गरीब परवर सलामत

जनाब आली अर्ज यह है कि हाल मे इस स्कूल में १५ लड़के दर्ज रजिस्टर हैं और दिन ब दिन बढ़ने की उम्मेद है और पढ़ाई भी चौथी कक्षा तक होती है परन्तु एक मास्टर से कुल लड़कों की पूरी २ तालीम नहीं हो सकती इसलिये यह अर्जी हुजूर की खिदमत में भेज कर उम्मेदवार हूं कि एक असिस्टंट मास्टर मुकर्रिर फरमाया जावे तो लड़कों की तालीम भी अच्छी होगी और लड़के भी और बढ़ जावेंगे ॥

तावेदार मास्टर स्कूल रामपुर स्टेशन मुजफ्फरनगर

अर्ज़ी नम्बर १

श्री युत इन्स्पेक्टर साहब शिक्षा विभाग पूर्वी सर्किल रामपुर

ग़रीब पर्वर सलामत

जनाब आली अर्ज़ यह है कि कमतरीन की बहिन का विवाह है और मकान पर सिवाय मेरे और कोई बंदोबस्त करने वाला नहीं है इसलिये यह अर्ज़ी हुजूर की खिदमत में भेज कर उम्मेदवार हूं कि १५ दिन की रुखसत तारीख १६ मार्च से ३० मार्च तक रिआयती बज़िम्मेदारी पंडित रामसेवक असिस्टेंट मास्टर के मंजूर फ़र्माई जावे ॥

रामाधार हेड टीचर स्कूल धरमपुर पर्गना सुखधामपुर ज़िला हरपुर

तारीख २ मार्च सन् १८८७ ई०

अर्ज़ी नम्बर ७

श्री युत इन्स्पेक्टर साहब शिक्षा विभाग पूर्वी सर्किल रामपुर

ग़रीब परवर सलामत

जनाब आली सुना गया है कि पंडित विद्याराम साहब हेड टीचर स्कूल कन्हैयापुर परगना सुखपालपुर दूसरे ज़िले को तरक़्क़ी पर गये और उन की जगह खाली है इसलिये यह अर्ज़ी हुज़ूर की खिदमत में भेजकर उम्मेदवार हूं कि पंडित विद्याराम साहब की जगह पर तरक़्क़ी के साथ कम्तरीन की परवरिश फ़रमाई जावे कम्तरीन की कारगुज़ारी का हाल हुज़ूर को बख़ूबी मालूम है।

रामाधार हेड टीचर स्कूल धनपुर परगना सुखपालपुर ज़िला हरपुर

तारीख़ ५ मई सन १८८८ ई०

अर्ज़ी नम्बर १

श्री युत इन्स्पेक्टर साहब शिक्षा विभाग पूर्वी सर्किल रामपुर

गरीब पर्वर सलामत

जनाब आली अर्ज़ यह है कि कमतरीन की बहिन का विवाह है और मकान पर सिवाय मेरे और कोई बंदोबस्त करने वाला नहीं है इसलिये यह अर्ज़ी हुजूर की ख़िदमत में भेज कर उम्मेदवार हूं कि १५ दिन की रुख़सत तारीख़ १६ मार्च से ३० मार्च तक रिआयती बज़िम्मेदारी पंडित रामसेवक असिस्टंट मास्टर के मंज़ूर फ़र्माई जावे ॥

रामाधार हेड टीचर स्कूल धरमपुर पर्गना सुखधामपुर ज़िला हरपुर

तारीख़ २ मार्च सन् १८९७ ई०

# पाठ ३२

## मुख़्तार नामा आम ।

मैं लक्ष्मी स्त्री धनीराम ज़मींदार क़ौम ब्राह्मण रहने वाली गांव धरमपुर परगना सुन्दरधामपुर ज़िला रामपुर की हूं । जोंकि मेरे अकसर मुक़द्दमे दीवानी व फ़ौजदारी वग़ैरह की अदालतों में दायर रहा करते हैं और मुझ को भी दायर करना मंज़ूर होता है और मैं आप परदे में रहने के सबब किसी कचहरी में पहुंच नहीं सकती-इसलिये पंडित रामाधार वल्द हरिशरण क़ौम ब्राह्मण रहने वाले गांव धरमपुर को जिन का मुझे पूरा २ भरोसा है अपनी तरफ़ से मुख़्तार आम मुक़र्रर करके इक़रार करती हूं और लिखे देती हूं कि ऊपर लिखे पंडितसाहब मेरे तमाम मुक़द्दमों में कुल अदालतों के बीच जो कुछ पैरवी व जवाबदिही करें या कोई अर्ज़ी दाख़िल गुज़रानें या कोई दस्तावेज़ लिखें या कोई वकील व मुख़्तार किसी मुक़द्दमे में अपनी तरफ़ से मुक़र्रर करें या जो कुछ रुपया मुझे मिलने वाला हो उसे ख़ज़ानह से वसूल करें वह सब उन का किया हुआ मुझ को अपने किये हुए की तरह क़बूल व मंज़ूर है परन्तु इतना मुझ को इख़्तियार होगा कि मैं जब चाहूं अपना काम आप असालतन करूं या कोई दूसरा मुख़्तार आम मुक़र्रर करूं इसलिये यह मुख़्तार नामा आम लिख दिया कि सनद हो और वक़्त ज़रूरत के काम आवे । तारीख़ २४ मई सन् १८६० ई०

दस्तख़त लक्ष्मी की मुहर (लक्ष्मी)

गवाही धरमपाल पटवारी मौज़ा धरमपुर
श्री रामसेवक पुरोहित साकिन मौज़ा धरमपुर

अर्ज़ी नम्बर ८

श्री युत इन्सपेक्टर साहब शिक्षा विभाग पूर्वी सर्किल रामपुर

गरीब पर्वर सलामत

जनाब आली अर्ज़ यह है कि कमतरीन को यहां र
आब हवा मुआफ़िक़ नहीं है जब से बदलकर यहां आया
तब से बीमार ही रहता हूं इस कारण बड़ी तकलीफ़ रहत
है बल्कि यहां रहने में मुझे अपनी जान का अन्देशा है इसलिये
यह अर्ज़ी हुजूर की ख़िदमत में भेजकर उम्मेदवार हूं कि कमतरीन की बदली किसी दूसरे स्कूल को फ़र्माई जावे॥

रामाधार हेड टीचर स्कूल कन्हैयापुर ज़िला हरपुर

मिती १२ जनवरी सन १८६६ ई०

# पाठ ३२

## मुख़्तार नामा आम।

मैं लक्ष्मी स्त्री धनीराम ज़मींदार क़ौम ब्राह्मण रहने वाली गांव धरमपुर पर्गना सुखधामपुर ज़िला रामपुर की हूं। जोंकि मेरे अकसर मुक़द्मे दीवानी व फ़ौजदारी वग़ैरह की अदालतों में दायर रहा करते हैं और मुझ को भी दायर करना मंजूर होता है और मैं आप परदे में रहने के सबब किसी कचहरी में पहुंच नहीं सकती इसलिये पंडित रामाधार वल्द हरिशरण क़ौम ब्राह्मण रहने वाले गांव धरमपुर को जिन का मुझे पूरा२ भरोसा है अपनी तरफ़ से मुख़्तार आम मुक़र्रर करके इक़रार करती हूं और लिखे देती हूं कि ऊपर लिखे पंडितसाहब मेरे तमाम मुक़द्मों में कुल अदालतों के बीच जो कुछ पैरवी व जवाबदिही करें या कोई अर्ज़ी नालिश गुज़रानें या कोई दस्तावेज़ लिखें या कोई वकील व मुख़्तार किसी मुक़द्मे में अपनी तरफ़ से मुक़र्रर करें या जो कुछ रुपया मुझे मिलने वाला हो उसे ख़ज़ानह से वसूल करें वह सब उन का किया हुआ मुझ को अपने किये हुए की तरह क़बूल व मंज़ूर है परन्तु इतना मुझ को इख़्तियार होगा कि मैं जब चाहूं अपना काम आप बसाहलत करूं या कोई दूसरा मुख़्तार आम मुक़र्रर करूं इसलिये यह मुख़्तार नामा आम लिख दिया कि सनद हो और वक़्त ज़रूरत के काम आवे। तारीख़ २४ मई सन् १८६६ ई०

दस्तख़त लक्ष्मी की मुहर (लक्ष्मी)

गवाही धरमदास पटवारी मौज़ा धरमपुर
गवाही रामसेवक पुरोहित साकिन मौज़ा धरमपुर

मुख़्तार नामा ख़ास

मैं ग़रीबदास बेटा हरीदास क़ौम ब्राह्मण रहनेवाला गांव रतनपुर पर्गना धरमपुर ज़िला रामपुर का हूं। जो कि मुझ पर पहलवानसिंह बेटा ज़ोरावरसिंह क़ौम ठाकुर रहने वाले गांव रतनपुर पर्गना व ज़िला मज़कूर के ने मेन में चोरों से नुक़सान कराने बाबत तहसील धरमपुर में नालिश की है इसलिये मैं मुंशी दीनदयाल साहब मुख़्तार अदालत को अपनी तरफ़ से मुख़्तार ख़ास मुक़र्रर करके इक़रार करता हूं और लिखे देता हूं कि ऊपर लिखे मुंशी साहब इस मुक़द्दमे में मेरी तरफ़ से जो कुछ पैरवी व जवाबदिही करें वह सब मुझ को अपने किये हुए की तरह मंज़ूर है इसलिये यह मुख़्तार नामा ख़ास लिख दिया कि सनद हो फ़क़त तारीख़ १५ जून सन् १८८७ ई०

दस्तख़त ग़रीबदास ब्राह्मण [illegible]

गः० सीताराम ब्राह्मण

गः० शेवाराम ब्राह्मण

विकालतनामा

मैं सेवकराम बेटा धनीराम क़ौम बनिया रहने वाला गांव सीतापुर पर्गना लक्ष्मणपुर ज़िला रामपुर का हूं ।

जोकि मेरा मुक़द्दमा अदालत दीवानी ज़िला रामपुर में दायर है इसलिये मैं अपनी तरफ़ से मुंशी कृपाराम साहब वकील अदालत को अपना वकील मुक़र्रर करके इक़रार करता हूं और लिख देता हूं कि ऊपर लिखे हुए वकील साहब मेरी तरफ़ से इस मुक़द्दमे में जो कुछ पैरवी व सवाल जवाब करें वह सब मुझ को अपने किये हुए की तरह क़बूल व मंज़ूर है इस वास्ते यह विकालत नामा लिख दिया कि सनद हो ॥

तारीख़ २४ जनवरी सन् १८१२ ई०

दस्तख़त सेवकराम बक़लम ख़ुद

गा० हीरालाल महाजन

गा० मोतीलाल महाजन

अर्ज़ी दावा लगान

रामसेवक बेटा शिवदास का क़ौम ब्राह्मण ज़मींदार रहने वाला गांव धरमपुर पर्गना लक्ष्मणपुर ज़िला रामपुर—मुद्दई

बनाम

बलवन्तसिंह बेटा ज़ोरावरसिंह क़ौम ठाकुर रहने वाला गांव धरमपुर पर्गना लक्ष्मणपुर ज़िला रामपुर—मुद्दआअलेह

दावा दिला पाने ८०) अस्सी रुपये बाबत बक़ाया लगान फ़सल ख़रीफ़ सन् १२६५ फ़सली

ग़रीब परवर सलामत

जनाब आली अर्ज़ यह है कि ऊपर लिखे हुए मुद्दआअलेह से ८०) अस्सी रुपये बाबत लगान फ़सल ख़रीफ़ सन् १२६५ फ़सली ज़मीन ३२ बीघा नम्बरी १०२४ के बाक़ी हैं वह तक़ाज़ा करने से बाक़ी रुपये नहीं देता है इस वास्तह यह अर्ज़ी गुज़रान कर उम्मेदवार हूं कि बाद तहक़ीक़ात मुद्दआअलेह से बाक़ी रुपये मय ख़र्चा अदालत के दिलाये जावें।

अर्ज़ी फ़िदवी रामसेवक बेटा शिवदास का क़ौम ब्राह्मण ज़मींदार गांव धरमपुर पर्गना लक्ष्मणपुर ज़िला रामपुर

तारीख़ २० जून सन् १८८८ ई०

## दरख़्वास्त बेदख़ली

धनीराम बेटा मोतीराम क़ौम महाजन, रहनेवाला व ज़मींदार गांव हरपुर पर्गना शिवपुर ज़िला रामपुर —— मुद्दई

बनाम

सेवा बेटा ज़ालिम क़ौम चमार रहनेवाला व काश्तकार ग़ैर दख़ीलकार गांव हरपुर पर्गना शिवपुर ज़िला रामपुर

दावा बेदख़ली सन् १३०० फ़सली बाबत काश्त आराज़ी
२०) बीघा पुख़्ता नम्बरी ४०० लगानी ८०) रुपये

ग़रीब पर्वर सलामत

जनाब आली अर्ज़ यह है कि ऊपर लिखी हुई आराज़ी का मुद्दआअलेह काश्तकार ग़ैर दख़ीलकार है यह लगान के रुपये देने में नादिहन्दी करता है इस वास्ते इत्तिलानामा इस अर्ज़ी के साथ गुज़रानकर उम्मेदवार हूं कि इत्तिलानामा पास मुद्दआअलेह के भेजकर बदे काश्त मज़कूर से बेदख़ल फ़र्माया जावे ॥

अर्ज़ी फ़िदवी धनीराम ज़मींदार गांव हरपुर पर्गना शिवपुर ज़िला रामपुर

तारीख़ १९ मार्च सन् १८९३ ई०

अर्ज़ी दावा दीवानी

घनीराम बेटा मोतीलाल क़ौम महाजन रहनेवाला गांव रतनपुर पर्गना शिवपुर ज़िला रामपुर—— मुद्दई

बनाम

घासी बेटा हरजू क़ौम काछी रहने वाला गांव सीतापुर पर्गना शिवपुर ज़िला रामपुर—— मुद्दआअलेह

दावा दिला पाने मुबलिग़ ६२) बासठ रुपये असल मय सूद

ग़रीब पर्वर सलामत

जनाब आली अर्ज़ यह है कि मुद्दआअलेह ने तारीख़ २० मई सन् १८८० ई० को मुबलिग़ ५०) पचास रुपये कल्दार मुझ मुद्दई से दस महीने के वादे पर क़र्ज़ लेकर तमस्सुक लिख दिया था और दो रुपये सैकड़ा ब्याज ठहरी थी लेकिन वादा गुज़र गया और कई बार तक़ाज़ा भी किया तिस पर भी मुद्दआअलेह ने रुपये अदा नहीं किये इस वास्ते यह अर्ज़ी मय तमस्सुक गुज़रानकर उम्मेदवार हूं कि रुपये मुन्दर्जह तमस्सुक मय सूद व ख़र्चा अदालत के दिलाये जावें ॥

दर्ख़ास्त उज़्रदारी

रामसेवक बेटा कृष्णसेवक क़ौम ब्राह्मण रहनेवाला गांव हरपुर पर्गना शिवपुर ज़िला रामपुर—— उज़्रदार

बनाम

धनीराम बेटा मोतीराम क़ौम महाजन रहनेवाला गांव हरपुर पर्गना शिवपुर ज़िला रामपुर—— डिगरीदार

दर्ख़ास्त छोड़देने माल कुर्क़ किया हुआ

ग़रीब पर्वर सलामत

जनाब आली अर्ज़ यह है कि धनीराम डिगरीदार ने एक कोठी पतिल की बनाम सोनीराम क़र्ज़दार मुझ उज़्रदार की कुर्क़ कराई है यह कोठी दर हक़ीक़त मेरी है उस से क़र्ज़दार को कुछ सरोकार नहीं है इस वास्ते यह दर्ख़ास्त गुज़रान कर उम्मेदवार हूं कि कोठी कुर्क़ की हुई मुझ उज़्रदार को मिले और ख़र्चा अदालत दिलाया जावे ॥

अर्ज़ी फ़िद्वी रामसेवक उज़्रदार क़ौम ब्राह्मण रहने वाला गांव हरपुर पर्गना शिवपुर ज़िला रामपुर

तारीख़ २५ जनवरी सन् १८७६ ई०

# पाठ ३३

अर्ज़ी दावा फ़ौजदारी।

| नाम गांव वग़ैरह पर्गना व ज़िला | नाम मुद्दई | नाम मुद्दआ अलैह | जुर्म | अर्ज़ी दावे का खुलासा |
|---|---|---|---|---|
| शिवपुर पर्गना हरपुर ज़िला रामपुर | रामसेवक बेटा राम-भरोसे क़ौम ब्राह्मण | घमंडी-लाल बेटा मिज़ाजी-लाल क़ौम कुम्हार | दफ़ा ३५२ व ३२३ ताज़ीरात हिन्द हमला व मारपीट | बाद तह-क़ीक़ात मुद्दआ अलैह को हस्ब दफ़ा ३५२ व ३२३ के मुताबिक़ फ़र्माया जावे |

मुद्दआअलेह ने कहा कि ऐसा मत करो तो उस ने मुझे सैकड़ों गालियां दीं और मुझे बिना सबब लात और लाठी से मारा इस वास्ते यह अर्ज़ी हुज़ूर में गुज़रान कर उम्मेदवार हूं कि बाद तहक़ीक़ात मुद्दआअलेह को तदारुक फ़र्मांया जावे ॥

अर्ज़ी फ़िदवी रामसेवक बेटा रामभरोसे क़ौम ब्राह्मण रहनेवाला गांव शिवपुर परगना हरपुर ज़िला रामपुर
तारीख़ २७ जौलाई सन् १८८६ ई॰

राज़ीनामा

रामभरोसे बेटा हरिराम क़ौम ब्राह्मण रहने वाला गांव रतनपुर पर्गना हरपुर ज़िला रामपुर———— मुद्दई

घमंडीलाल बेटा मिज़ाजीलाल क़ौम महाजन रहनेवाला गांव रतनपुर पर्गना व ज़िला मज़कूर———— मुद्दाअलेह

ग़रीब पर्वर सलामत

जनाब आली अर्ज़ यह है कि कई भले मानसों के समझाने से हम दोनों में मेल होगया इस वास्तह यह अर्ज़ी गुज़रान कर उम्मेद्वार हूं कि मेरा मुकद्दमा ख़ारिज फ़र्माया जावे।

अर्ज़ी फ़िदवी रामभरोसे मुद्दई रहनेवाला गांव रतनपुर पर्गना हरपुर ज़िला रामपुर

तारीख़ ७ मार्च सन् १८८२ ई०

मुद्दाअलेह से कहा कि ऐसा मत करो तो उस ने मुझे सैकड़ों गालियां दीं और मुझे बिना सबब लात और लाठी से मारा इस वास्ते यह अर्ज़ी हुज़ूर में गुज़रान कर उम्मेदवार हूं कि बाद तहक़ीक़ात मुद्दाअलेह को तदारुक फ़र्माया जावे ॥

अर्ज़ी फ़िदवी रामसेवक बेटा रामभरोसे क़ौम ब्राह्मण रहनेवाला गांव शिवपुर परगना हरपुर ज़िला रामपुर
तारीख़ २७ जौलाई सन् १८८६ ई०

## राज़ीनामा

रामभरोसे बेटा हरिराम क़ौम ब्रहमण रहने वाला गांव रतनपुर पर्गना हरपुर ज़िला रामपुर———— मुद्दई
घमंडीलाल बेटा मिज़ाजीलाल क़ौम महाजन रहनेवाला गांव रतनपुर पर्गना व ज़िला मज़कूर———— मुद्दआअलैह

ग़रीब पर्वर सलामत :

जनाब आली अर्ज़ यह है कि कई भले मानसों के समझाने से हम दोनों में मेल होगया इस वास्तह यह अर्ज़ी गुज़रान कर उम्मेदवार हूं कि मेरा मुक़द्दमा ख़ारिज फ़र्माया जावे।

अर्ज़ी फ़िदवी रामभरोसे मुद्दई रहनेवाला गांव रतनपुर पर्गना हरपुर ज़िला रामपुर

तारीख़ ७ मार्च सन् १८८२ ई०

मुद्दआअलेह से कहा कि ऐसा मत करो तो उस ने
गालियां दीं और मुझे बिना सबब लात और र
इस वास्ते यह अर्ज़ी हुज़ूर में गुज़रान कर उम्मे
बाद तहक़ीक़ात मुद्दआअलेह को तदारुक फ़र्माय

अर्ज़ी फ़िदवी रामसेवक बेटा रामभरोसे
रहनेवाला गांव शिवपुर पर्गना हरपुर ज़िला राम
तारीख़ २७ जौलाई सन् १८८६ ई०

## जमानत नामा फ़ेल

मैं रामसेवक बेटा हरिचरण क़ौम ब्राह्मण रहनेवाला गां
रतनपुर पर्गना हरपुर ज़िला रामपुर का हूं।

जो कि मिज़ाजीलाल बेटा घमंडीलाल क़ौम महाजन
रहनेवाला गांव रतनपुर पर्गना व ज़िला मज़कूर से बइक़र
तक़रार फ़िसाद रुस्तमसिंह बेटा ज़ालिमसिंह रहनेवाले गां
रतनपुर के बमूजिब हुक्म मजिस्ट्रेट साहब बहादुर ज़िल
रामपुर पांच सौ रुपये की फ़ेल ज़ामिनी तलब है इसवास्ते
मैं उस का फ़ेल ज़ामिन होकर इक़रार करता हूं कि मिज़ाजीला
एक साल तक रुस्तमसिंह से किसी तरह का फ़साद न करेग
अगर कोई झगड़ा करे तो मैं पांच सौ ५००) रुपये अदाल
में दाख़िल करूंगा और जो मैं ५००) रुपये अदा न करूं त
सरकार को इख़्तियार होगा कि मेरी जायदाद से जिस तर
चाहे वसूल करे मुझ को कुछ उज़्र न होगा इस वास्ते य
ज़मानत नामा फ़ेल लिख दिया कि सनद हो फ़क़त ॥

तारीख़ २० मार्च सन १८३८ ई०

द० रामसेवक बक़लम खुद

गा० भजनलाल सुनार

गा० रूपचन्द महाजन

मुचलका

मैं रामसेवक बेटा हरिशरण क़ौम ब्राह्मण रहनेवाला गांव रतनपुर पर्गना व ज़िला रामपुर का हूं।

जो कि पुत्तू बेटा सेवाराम क़ौम ब्राह्मण रहनेवाला गांव रतनपुर पर्गना व ज़िला मज़कूर ने मेरे नाम अदालत फ़ौजदारी में इस बात की नालिश की है कि रामसेवक मुझ से फ़साद करने का इरादा रखता है इस कारण अदालत ने मुझ को एक साल तक का मुचलका दाखिल करने का हुक्म दिया है इस वास्तह मैं इक़रार करता हूं कि मैं साल भर तक पुत्तू मज़कूर से किसी तरह फ़साद नहीं करूंगा और जो करूं तो सौ १००) रुपये जुर्माना सरकार में दाखिल करूं इसलिये यह मुचलका लिख दिया कि सनद हो और वक्त ज़रूरत के काम आवे॥

तारीख़ २५ जून सन १८७३ ई०

दस्तख़त रामसेवक ब्राह्मण
गवाही चेतराम हलवाई
गवाही नेकराम ब्राह्मण

# पाठ ३४

रूबकार

रूबकार कचहरी सूबात ज़िला रामपुर बइजलास
बाबू दीनदयाल साहब हाकिम ज़िला
तारीख़ ४ जनवरी सन १८१० ई०

नम्बर ४०७ मुहर दस्तख़त हाकिम

जो कि हमने वक़्त दौरा इस ज़िले के अकसर गावों में कुए ऐसे देखे जिन पर जंगला व खिड़की वास्ते हिफ़ाज़त के नहीं हैं और इस में बड़े तरह के नुक़सानों का डर रहता है इस लिये हुक्म होता है कि तमाम तहसीलदारान इस ज़िला को लिखा जावे कि वे मार्फ़त क़ानूनगोयों व पटवारियों के कुल गावों में कुओं के ऊपर कोई सा लकड़ी का जंगला या खिड़की लगवा देवें और बाद तामील हुक्म के हुज़ूर में इत्तिला देवें।

हुक्म हुआ कि

एक एक नक़ल इस रूबकार की इस ज़िले के कुल तहसीलदारों के पास तामील के लिये भेजी जावे ॥

परवाना

सरिश्तह इन्स्पेक्टरी मदारिस
पूर्वी सर्किल रामपुर

नम्बर ७३२

मुहर

दस्तखत हाकिम

सुयोग्यता निधान बाबू हरिशरण डिपुटी इन्स्पेक्टर मदारिस ज़िला रामपुर खुश रहो।

जनाब साहब इन्स्पेक्टर जनरल बहादुर चिट्ठी नम्बरी २०५ तारीख २५ नौम्बर सन १८७२ ई० में हुक्म फ़र्माते हैं कि वर्नाक्युलर स्कूलों की छटवीं क्लास में भूगोल प्रान्त की पढ़ाई होनी चाहिये इसलिये आप को लिखा जाता है कि अपने ज़िले के कुल स्कूलों में किताब मज़कूर की पढ़ाई जारी करदो फ़क़त.

तारीख ३० नौम्बर सन १८७२ ई०

वारन्ट गिरफ़तारी

इजलास मजिस्ट्रेट साहब बहादुर ज़िला रामपुर

बनाम अफ़सर पुलिस थाना हरपुर

जो कि घमंडीलाल बेटा मिज़ाजीलाल क़ौम सुनार रहे
वाला गांव रतनपुर थाना हरपुर ज़िला रामपुर बजुर्म मारपी
दफ़ा ३२३ ताज़ीरात हिन्द के वास्ते जवाब के तलब किय
था उस ने समन पीठ पर इत्तिलायाबी के दस्तख़त भी कि
थे लेकिन वह अदालत में हाज़िर नहीं हुआ अब मुक़द्दम
तारीख़ १२ सितम्बर सन १८८६ ई० को पेश होगा इस वास्त
तुमको हुक्म दिया जाता है कि घमंडीलाल मुद्दाअलेह को
गिरफ़तार करके हमारे सामने हाज़िर लाओ।

जो घमंडीलाल मुद्दाअलेह खुद मुचलका और ज़मान
१००) रुपये की दाख़िल करे और ज़मानत मौतबर १००) रुप
की तारीख़ २० सितम्बर सन १८८६ ई० को हमारे पास हाज़ि
होने के लिये देवे तो उस को छोड़ देना वाजिब है॥

दस्तख़त मजिस्ट्रेट साहब

ज़िला रामपुर

तारीख़ ३० अगस्त सन १८८६ ई०

इश्तिहार नम्बर १

बमूजिब हुक्म हाकिम ज़िला रामपुर
तारीख पहिली दिसम्बर सन् १८६४ ई०

ज़ाहिर हो कि ठेका बाबत ( अफ़ीम व भंग व चर्स ) कुल सवात व शहर ज़िला रामपुर का बनाम बाबू घमंडीलाल बेटा मिज़ाजीलाल जाति महाजन साकिन रामपुर के नाम तारीख पहिली जनवरी सन ६५ ई० से अखीर दिसम्बर सन ६५ ई० तक एक साल को खतम हुआ है इसलिये कुल खरीदारान को मुत्तलअ किया जाता है कि बाबू साहब मस्तूर की दूकान से खरीदा करें फ़क़त ॥

दस्तखत हाकिम ज़िला
रामपुर

इश्तिहार नम्बर २

बमूजिब हुक्म हाकिम ज़िला रामपुर

तारीख़ २० मई सन १८७२ ई०

ज़ाहिर हो कि भीमा बेटा छिद्दा क़ौम कहार रहनेवाला गांव रतनपुर पर्गना हरपुर ज़िला रामपुर उमर २० साल रंग काला लम्बा डील एक आंख फूटी ऊंचा माथा-लक्ष्मी बाई स्त्री धर्नीराम क़ौम महाजन रहने वाली हरपुर ज़िला मज़कूर को मारकर दस हज़ार १००००) रुपये का गहना लेकर भाग गया है इस वास्तह यह इश्तिहार दिया जाता है कि जो कोई कहार मज़कूर को अदालत में हाज़िर लायेगा उस को चार सौ ४००) रुपये सरकार से इनाम दिये जायेंगे॥

दस्तख़त हाकिम

ज़िला रामपुर

इति